गाम-घर

(मैथिली कथा एवं निबंध संग्रह)

लेखक

नन्द कुमार मिश्र

गाम-घर

(मैथिली कथा एवं निबंध संग्रह)

लेखक

नन्द कुमार मिश्र

प्रकाशक –
श्रीमती अमल देवी
श्रीमती शान्ता भूषण
भीखनपुर, भागलपुर

सर्वाधिकार प्रकाशकक अधीन अछि।

मुद्रक – आशा प्रिन्टिंग प्रेस
तिलकामांझी, भागलपुर

सहयोग राशि – बीस टाका मात्र।

समर्पण

स्व० श्रीमती गोसाउनि देवी

(मृत्यु 8 अप्रैल 1991 वैशाख कृष्ण नवमी)

के पुण्य स्मृति में

मंगल कामना

मैथिली साहित्य मे श्री नन्द कुमार मिश्र अपरिचित व्यक्ति नहि छथि। कतेको काव्य गोष्ठी आ कवि सम्मेलनक मंच पर अपन सरस काव्य पाठ सँ सहृदय श्रोता समूह केँ रसस्नात कएने छथि आ अपन पहिल काव्य–संग्रह "विधात्री" सँ सुधी समीक्षक आ विद्वान सभ सँ प्रशंसित भेल छथि। अराब अपन प्रथम कथा संग्रह "गाम–घर" केर माध्यम सँ अपन साहित्यिक व्यक्तित्वक नव आयामक परिचय दऽ रहल छथि।

कथा साहित्य आजुक युग मे साहित्यक समादृत विधा बनि गेल अछि। आब कथा साहित्य मात्र मनोरंजनक सामग्री नञि रहि, सामाजिक यथार्थक दिग्दर्शक आ सामाजिक जीवन मे परिवर्तन लएबाक सक्षम माध्यम बनि गेल अछि। संगहि मानव हृदयक विश्लेषण आ संवेदनाक सम्प्रेषण लेल कथा साहित्य महत्वपूर्ण माध्यम अछि। एहि संग्रहक कथा सभक अध्ययन सँ जे तथ्य उजागर होइत अछि से अछि कथाकार केर मिथिलाक सामाजिक जीवन मे क्रांतिकारी परिवर्त्तनक प्रबल आकांक्षा आ छटपटाहट। जखन चतुर्दिक वैज्ञानिक प्रगति, संचार क्रांति आदि सँ वैश्विक ग्रामक (ग्लोबल विलेज) अवधारणा सार्थक भ रहल अछि, मिथिलाक समाज रूढ़िग्रस्त अधोगामी परम्पराक पालन मे गौरवक अनुभव करैत अछि। बाबाक भोज मे लेखक कहैत छथि –

एखनहु गाम मे किछु लोकक धारणा रहैत छैक जे गरीब दुखिया सँ जबर्दस्ती कर्ज दऽ क भोज कराओत आ बाद मे घरारी तक लिखएबा मे नञि चूकत।" कथाकारक परिवर्त्तनकारी आकांक्षाक परिणाम अछि जे अधिकांश कथा मे लेखक प्रत्यक्षतः विद्यमान रहबाक प्रयत्न कएने छथि आ उत्तम पुरूष "हम" केर प्रयोग कएने छथि "हम सुझलिएन्ह" हम कहलिएन्ह, हम फेकनी माए के कहलिएन्ह हम

बजलहुँ आदि। ओना कथाक प्रणेता होएबाक कथाक बनाबट आ बुनाबट में लेखक रहितहि अछि, मुदा अदृश्य वा परोक्ष रूपे रहला सँ कथाक शिल्प नीक होइत अछि। कथाकार अपन बात वा बिचारधाराक प्रकाशन प्रायः पात्रक मुँह सँ अन्य पुरूष केर प्रयोग द्वारा करबैत छथि। यदि संग्रहक कथा सभ में "हम" के स्थान पर अन्य पुरूष अर्थात पात्रक संयोजन कएल जाइत तऽ बेशी प्रभावी होइत।

बाबाक भोजक घटना प्राचीन रूढ़िवादी सामाजिक परम्पराक पालन में यश आ गामक प्रतिष्ठा मानऽ बला धारणा पर पैघ व्यंग्य अछि। प्रत्येक गाम मे चनरू कका सनक लोक भेटताह। जिनकर प्रतिगामी विचार के प्राथमिकता देल जाइत अछि आ नीको सलाह के अधलाह बुझल जाइत अछि। क्षमता रहितहु पिता वा पुरखाक नाम के चिरस्थायी बनएबाक लेल कोनहु जन कल्याणक कार्य पर खर्च लोक नञि करैत अछि मुदा श्राद्धक भोज मे लाखों टाका खर्च करबा मे गौरबक अनुभव करैत अछि। बाबाक भोज कोना कए प्राकृतिक कोप सँ जे अन्हर–पानिक रूप मे प्रकट भेल, भ्रष्ट भऽ कऽ दू लाख टाकाक खर्च के व्यर्थ बना देलक, एक व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति कथा में भेल अछि। "चक्र–चालि" गामक किछु लोकक घटिया कूटनिति पर आधारित कथा अछि। गाम मे किछु गोटे एहन होइत छथि, जिनका कोनो नीको बिचार ग्राह्य नञि होइत छैन्हि आ कोनो तरहे लोक कल्याणक कार्यहु के बाधक बनैत छथि। लेखक कहैत छथि – एहि चक्रचालिक सृजनहार ओ लोक होइत अछि जे समाजक उन्नति नञि देखि सकैत अछि।

"भोरक सपना" नव तकनिक में लिखल कथा अछि। लेखक अपन सामाजिक परिवर्तन संबंधी प्रत्येक धारणा के भोरक देखल सपना मे मूर्ति होइत देखैत छथि। स्वप्न सिद्धांतक अनुसार लोकक मन मे अन्तश्चेतना मे जे बिचार घुमड़ैत रहैत अछि मुदा प्रत्यक्ष रूप मे बाह्यतः पूर्ण नहि भऽ सकैत अछि, ओ बिचार सपना मे पूर्णता वा मूर्त स्वरूप

प्राप्त करैए। कथाकार केर दलितोद्धार वर्णहीन समरसता मूलक समाजक अवधारणा आ ग्रामोत्थानक आन प्रकार सभ भोरक सपना मे सच बुझा रहल छैन्हि। कथाकारक प्रगतिशील जनवादी धारणाक प्रमाण ई कथा थीक।

फेकनी माय आदर्शोन्मुखी कथा अछि। मनुष्यक बदलैत भाग्यक पृष्ठ भूमि मे लेखक एक उपेक्षित अबला केँ सबला बना ओकरा माध्यम सँ अपन आदर्शक स्वप्न के साकार करैत छथि।

"डबडबाएल आँखि" संग्रह केर एक नीक संवेदनशील कथा अछि। परिवारक जाहि व्यक्ति सँ नीक आ मृदु व्यवहारक आशा करैत अछि, ओकरा सँ अमर्यादित कार्य होमए तऽ अपार दुःख होइत छैक नवकनियाँक अमर्यादित व्यवहार सँ व्यथित भौजीक डबडबायल आँखि सँ अभिव्यक्ति होइत पीड़ाक वर्णन जाहि रूपें लेखक कएने छथि, कोनो संवेदनशील पाठक के प्रभावित करत।

बुटक साग पढ़ि लगैत अछि जेना कथाकार अपनहि विवाहक पृष्ठभूमिक परिचय देने होथि। अपना स्थान पर कोनो पात्रक योजना कएल जाइत तँ वेशी नीक रहैत।

संग्रह में नारी समस्या पर दू टा कथा अछि – "कोढ़" आ "स्वाभिमान" सामाजिक यथार्थक एक विकृत रूप अछि। विवाह में वरक मूल्य निर्धारण कए दहेजक माँग। दहेज वास्तव में समाजक कोढ़ अछि, जकरा मिटएबाक लेल नारी जागरण आ नारी शिक्षा सब सँ कारगर दबाई हैत। चन्दा सनक कान्या समाज मे आदर्श उदाहरण स्थापित कऽ सकैत अछि। दहेजक कारण उपेक्षिता बनल चन्दा, उच्च शिक्षा प्राप्त कए, कमलेश के अपना सोझाँ झुका दैत अछि। आ उनटे कमलेशहि सँ मुँह देखाइक याचित राशि लैत अछि। कान्या वर्गक लेल ई एक आदर्श प्रेरक कथा सिद्ध हैत। दोसर कथा "स्वाभिमान" नारी उत्पीड़न सँ सम्बन्धित अछि। निशांत मात्र पति होएबाक दम्भ पर अपन उच्च शिक्षा प्राप्त कमाऊ पत्नी के बात–बात मे पीड़ित करैत अछि।

व्याख्याता पत्नीक कमाई पर जिवए बला पति के "स्वाभिमान" तऽ भइए नहि सकैत अछि। एकरा पुरूष प्रधान समाजक टेढ़ी भलेहि कहल जा सकैत अछि। नारीक सभ सँ पैघ संकट होइत छैक आर्थिक दृष्टि सँ पति पर अवलम्बन मुदा एहि कथा मे व्याख्याता माधुरीक सोझाँ ई समस्या नहि छल। ओ एक जागरूक नारी छल। एहि दृष्टिएँ माधुरीक "आत्महत्या" विश्वसनीय नहि लगैत अछि। "वरक गाछ" एक भावपूर्ण कथा अछि, जाहि मे वरक गाछक पूजा करैत स्त्री सभ कें देखि कथाकार अपन मोन में उठैत भाव तरंगक प्रकाशन कएने छथि।

"शंकरक खोज" मे समुद्र मंथनक पौराणिक मिथक केर पृष्ठभूमि मे लेखक आजुक भ्रष्टाचार, गरीब–अमीर, पूंजीवाद– जनवाद, देश मे बहुराष्ट्रीय कम्पनीक प्रवेश, धार्मिक नेता सभक करतब आदि पर अपन विचार व्यक्त कएने छथि। ओ कामना करैत छथि जे आइयो कोनो शंकर प्रकट भऽ सामाजिक–धार्मिक –राजनीतिक प्रदूषण रूपी हलाहलक पान कए देशक कल्याण करथि। इ रचना कथा कम आलेख वेशी बुझाइत अछि। इएह स्थिति "लूटतंत्र" केर सेहो अछि।

"उनटा चालि" आ "घोड़ीक अंडा" दूनू बाल कथाक संग्रह में जयबा योग्य अछि।

शिल्प संबंधी किछु त्रुटि रहितहु एहि संग्रह केर कथा सँ लेखक मे छिपल अपार संभावना परिलक्षित होइत अछि। आशा अछि हिनका द्वारा भविष्य में श्रेष्ठ कथा सभक सृजन होएत। हम कथाकारक सुदीर्घ जीवन आ सतत सारस्वत साधनाक मंगल कामना करैत छी।

नरेन्द्र झा

से0नि0 विश्वविद्यालय प्राचार्य

भागलपुर विश्वविद्यालय

दू शब्द

प्रिय पाठक बन्धु !

कोनहु घटना वा खिस्सा–पीहानी व्यंग्य केर माध्यम सँ आसानी सँ बूझल जा सकैत अछि। प्रस्तुत पोथी "गाम–घर" मे गाम–घरक जे ओछपन, जातीय भेद–भाव, सामाजिक कुरिति आ चक्रचालि, एकटा थोपल अंधविश्वास अछि, तकरहि उजागर कएल अछि। आई एहि इकीसम सदी मे दुनियाँ कतए सँ कतए जा रहल अछि आ हम सब एखनहु इनारक बेंग जकाँ इनारे मे पड़ल छी। पोथीक मनन सँ ई अंधविश्वास दूर भ सकैत अछि। इएह कथाकार के पाठकक दिश सँ सबसँ पैध असिर्वाद होएत।

आशा करैत छी जे अपने लोकनि एकरा पसिन्न करब। एहि सँ पूर्व "विधात्री" मे व्यंग्यक माध्यम सँ किछु कविता प्रस्तुत कएल जा चुकल अछि।

एहि रचनाक लेल हम सब सँ पहिने अपन माय स्व0 गोसाउनि देवी आ पिता श्री वैद्यनाथ मिश्र के चरण कमल मे गोर लागैत छी, जनिक असिर्वाद, स्नेह आ संस्कार सँ हम आई एतए धरि आयल छी।

हम आभारी छी स्व0 डॉ0 विष्णु किशोर झा "बेचन" पूर्व प्रति–कुलपति, भागलपुर विश्वविद्यालय आ डा0 नरेन्द्र झा पूर्व प्राध्यापक हिन्दी विभाग, भागलपुर विश्वविद्यालय केर, जनिक कृपादृष्टि आ मार्गदर्शन हमरा सतत भेटि रहल अछि।

प्रेरणा–स्रोत श्रीमती अमल देवी हमर गृहिणी, अनुज, अभियंता

ललन कुमार मिश्र आ धिया–पूताक संग सब परिजनक सेहो अपरिमिति स्नेह भेटल अछि। संगहि अनुजवत डा0 भुवन भूषण देना बैंक भागलपुर आ श्रीमती शान्ता भूषण, भाभहु, जिनका संगे हमरा खूनक सम्बन्ध तँ नहि अछि, मुदा खूनोक सम्बन्ध एतेक प्रगाढ़ होइत वा नहि, कहि नञि सकैत छी। हुनकऽ स्नेह आ सहयोगक वर्णन शब्द सँ नञि कएल जा सकैत अछि। हम एहि सब गोटे के दिर्धायु होएबाक कामना करैत छी।

हम आभारी छी, परमपूज्य छोटका कका श्री अमरेश चन्द्र मिश्र आ काकी श्रीमती पुनीता देवीक, जिनकर स्नेह आ आसिर्वाद हमरा एतए धरि अनलक अछि।

श्री सत्यबान जी जे हमर गुरूभाय सेहो छथि आ श्री सुरेन्द्र प्रसाद शुक्ला, जिनका बिना हमर मोद मंडली सून लगैत अछि आा तें हम हुनकहु आभारी छी।

अंत में हम अपन मित्र मंडलीक संग मिथिला परिषद् भागलपुरक सब सदस्य के जिनका सँ उत्साहित आ प्रेरित भेल छी, आभारी छी।

प्रस्तुत पोथी में घटना सँ सम्बन्धित नाम आ स्थान काल्पनिक अछि। कोनो व्यक्ति विशेषक नाम वा घटना पर इ खिस्सा–पीहानी नहि लिखल गेल अछि। जँ कदाचित किनकहु नाम सँ घटना मिलैत हो, तँ एकरालेल क्षमाप्रार्थी छी।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'
26.11.04

विषय-सूची

क्र.सं.	कथा का नाम	पृष्ठ सं0
1'	बाबाक भोज	1
2	डबडबायल आँखि	8
3	भोरक सपना	15
4	वरक गाछ	23
5	बुटक साग	29
6	शंकरक खोज	37
7	फेकनी माय	48
8	कोढ़	56
9	चक्र–चालि	64
10	स्वाभिमान	70
11	लूट–तंत्र	77
12	दण्ड	82
13	उनटा चालि	87
14	घोड़ीक अंडा	91
15	शेरक आतंक	95

बाबाक भोज

एहि बेर गाम में बहुत हलचल देखलहु। पता लागल जे फेकू बाबा स्वर्गवासी भए गेलाह। फेकू बाबा गामक के कहए, समूचा परोपट्टाक स्तम्भ मानल जाइत छलाह। अपूर्व प्रतिभाशाली व्यक्तित्व। वयस करीब पचहत्तरि वर्षक मुदा देहक बान्ह–काठ एखनहु कोनहु जुवान सँ कम नहि। हुनका सँ आँखि मिलाकए गप्प करबाक साहस ककरहु नहि रहए आ पंचैती करबा में परम निपुण छलाह। दुनू पक्षक बात सुनि एक क्षण में दूधक दूध आ पानिक पानि क दैत छलाह। हुनक निर्णय दूनू पक्ष केर मानए पड़ैत छल।

फेकू बाबा सुभ्यस्त गृहस्थ रहथि। पचास बीघा के जोत, पाँच बीघा घरारी, दस बीघा कलम बाग आ परती–पराँतक तँ गिनतीए नहि छल। बाबा के छः टा बरद, चारि टा महींस, दू टा गाय, एकटा ट्रैक्टर, सात टा बखारी आ नौ टा पुआरक टाल, दलानक शोभा बढ़ा रहल छल। जन–हरबाह दर्जनों रहनि आ विश्वासी सेहो। बाबा कहिओ खेतक आरि पर नहि गेलाह। मुदा ककरहु की मजाल जे हुनका खेत में लोढ़ो कए लेत। बाबा के एकटा जन छल, दशाई भगत जे अत्यन्त विश्वासी रहए। जन–हरबाह, नौकर–चाकर पर ओकर बहुत धाक छल। बाबा सेहो ओकरा सब सँ वेशी मानैत छलाह। खेती–बारी के विषय में बाबा सेहो बिना दशाई भगत के किछु नहि करैत छलाह। आ दशाई भगत सेहो बाबाक लेल अपन जान तक दऽ सकैत छल। ककरहु की मजाल जे दशाई भगत के निगरानी में गड़बड़ करत।

ओकरा सभक लेल दशाई भगत कोनहु अंग्रेज अधिकारी सँ कम नहि छल।

बाबा सदिखन दलान पर बैसल गामक लोक सभ सँ गप्प–शप्प करैत छलाह। कौखन पंचैती तँ कौखन गप्प–सड़क्का मे लोकक भीड़ लगले रहैत छल। इलाका के कोनहु घटनाक खबरि सब सँ पहिने बाबा के होइत छल आ ओहिठाम सँ एकहि क्षण में पसरि जाइत छल। बाबाक ओहिठाम चारि बजे संध्या मे प्रतिदिन भाँगक विन्यास होइत छल। भाँग दूधे में घोरल जाइत छल आ ओहि मे किसिम–किसिम के मसाला जेना बदाम, गुलकन्द, सोंफ, इलायची, मरीच इत्यादि। हमरा तँ सबहक नामो नहि बुझल अछि। मुदा बाबा बड़ जोगारी लोक रहथि। जखन भांग पीसल आ घोरल जाइत छल तँ ओकर मन मोहक सुगंध सँ ओहिठामक परिवेश आकर्षणक केन्द्र बनि जाइत छल। आ एहन केओ व्यक्ति नहि छलाह जे भांग पिबि कम सँ कम आधा घंटा धरि ओकरा स्वाद पर व्याख्यान नहि देथि। कतेक लोक तँ झुमए सेहो लगैत छलाह आ से देखि बाबा सेहो आनन्दित होइत छलाह।

बाबा के चारि टा बेटा तीन टा बेटी आ नाति–नातिन, पोता–पोती गोर पचासेक रहनि। अभाव छलनि तँ मात्र धर्मपत्नीक जे तीन साल पूर्व काल– कवलित भए गेलीह। एकरा सब के छोड़ि बाबा दुनियों सँ बिदा भऽ गेलाह। बाबा एक वर्ष सँ खाट पकड़ने छलाह। लकबा मारि देने रहनि। सब परिचर्या पड़ले–पड़ल करैत छलाह। एतेक भरल–पुरल परिवार के रहितो परिचर्याक लेल जने–हरबाह पर आश्रित रहए पड़ैत छलन्हि आ दशाई भगत

तँ दिन–राति बेटा जकाँ बाबाक सेवा में लागल रहैत छल। बाबाक स्वर्गवास सँ सब सँ बेशी मर्माहत जँ केओ भेल तँ ओ छल दशाई भगत। दशाई भगत चारि दिन तक भोजन नहि कएलक आ सारा झप्पी केर बाद स्वयं बाबाक फूला अपना हाथ सँ गंगा में प्रवाहित कएलक।

बाबाक श्राद्ध कोना कएल जाय, एकरा लेल ग्रामीणक बैसार बजाओल गेल। श्राद्ध में भोज करब तँ परम्परा अछि आ ताहू में मिथिलाक भोज तँ जग विदित अछि। जकरा कैंचाक अभाव रहैत अछि ओ कर्जा लऽक वा जमीनो बेचिक भोज करैत अछि आ जँ नहि करत तँ गाम में चलब सेहो मुस्किल भ जेतैक। एखनहु गाम में किछु लोकक धारणा रहैत छैक जे गरीब दुखिया सँ जबरदस्ती कर्जा दऽक भोज कराओत आ बाद में घरारी लिखएबा में नहि चूकत। मुदा बाबा के कोनहु वस्तुक अभाव नहि रहनि। हुनका भोज पर तँ गामक कोन बात पूरे जैबार आँखि लगौने छल। बाबा सेहो 8 वर्ष पूर्व अपना पिताक वृषोत्सर्ग श्राद्ध कएने छलाह आ पूरे जैबार के नोतने रहथि। गाम मे पाँच दिन धरि ककरहु चुल्हा नहि फूकल गेल। सब गधकिच्चनि कए क खाइत रहल।

बाबाक श्राद्ध सेहो बृषोत्सर्ग करब तय भेल आ पूरे जैबार के निमंत्रण सेहो। दू लाखक फिरहिस्त बनल। हम विचार देलियन्हि भोज तँ एक दू दिन खाऽक लोक बिसरि जाएत। किएक ने एहि टाका के एहन पुण्य कार्य पर खर्च कएल जाय जे जिनगी भरि सब के मोन रहत। भावी पिढ़ीक लेल एकटा उदाहरण सेहो बनि जाएत। गामक कल्याण सेहो होएत आ बाबाक नाम सेहो

युग–युगान्तरक लेल अमर भए जाएत। जेना कि गाम में एकटा स्कूल नहि अछि। जाहि सँ गामक नेना के पढ़बाक लेल दोसरा गाम जाए पड़ैत अछि। गामक बेटी अनपढ़ रहि जाइत छथि, किएक तँ आन गाम पढ़बाक लेल कोना जेती। गरीब आ आन जातिक बच्चा सेहो नहि पढ़ि पबैत अछि। जँ किहु खर्च कए गामहि में स्कूल भवन बनाओल जाय तँ गामक कोनहु नेना अनपढ़ नहि रहत।

दोसर बात जे गाम में मंदिर नहि अछि। स्त्रीगण के महादेवक पूजा करबाक लेल तीन किलोमीटर नित्य जाए पड़ैत छन्हि। ओहि में हुनकर कतेक समय नष्ट होइत छन्हि आ बिना पूजा पाठ कएने ओ रहिओ नहि सकैत छथि। जँ गाम में महादेवक मंदिरक निर्माण भ जाए तँ कतेक नीक रहत।

तेसर बात जे चमरटोली लग रस्ता कतेक खराब अछि। कनेको वर्षा होइतहि भरि ठेहुन हेंक भ जाइत अछि। समूचा गामक तँ वैह रस्ता अछि। लोक के तँ जे दिक्कत होइत अछि से तँ होइतहि अछि। मुदा गामक कतेक माल–जाल बरसातक दिन में ओहि में फँसि अपन दम तोड़ि दैत अछि। जँ एकरा ठीक करबा देल जाए तँ कतेक पुण्यक कार्य होएत। एहि सँ सौंसे गामक कल्याण सेहो भऽ जाएत आ बाबाक नाम सेहो लोक जीवन भरि लेत।

हमरा ब्रात पर चनरू काका एकदम भड़कि उठलाह आ बजलाह अहाँ नास्तिक छी, ब्राह्मण भोजन केर बिरोधी छी। अहाँ तँ शहर मे रहैत छी ने, गामक मान–मार्यादा अहाँ की बुझबै। इ

अपन प्रगतिशील बिचारधारा अपनहि लग राखू। शहरे में काज देत। इ गाम थिकैक। गाम में वैह हेतै जे चिरकाल सँ होइत आबि रहल छैक। हमर जे बाप–दादा सब दिन सँ करैत आबि रहलाह अछि, ओकरा हम सब किन्नहु नै छोड़ि सकैत छी। जँ ब्राह्मण भोजन नहि होएत तँ बाबा के मुक्ति नहि भेटतन्हि। बाबा कथमपि नहि स्वर्ग जा सकैत छथि। बाबा सनक लोकक आत्मा भटकैते रहि जाएत आ पता नहि ओहि सँ गाम में कोन कोन ने उकबा उठि जाएत। बैसार में बैसल अन्य लोक सेहो चनरू काका केर समर्थन कएलन्हि। हम ब्रह्म हत्याक अपराधी जकाँ मुँह ताकैत रहि गेलहु। सोचए लगलहु जे हमर गाम एखनहु कतेक पिछरल अछि। एहि एकीसम सदी मे दुनियाँक लोक चान पर जएबाक लेल सोचैत अछि। मुदा हमरा गामक लोक एखनहु गाम सँ बहराए नहि चाहैत अछि। हम अनमयस्क भावे कहलियैन्ह, एकरा अन्यथा नहि लेल जाउ, हम तँ मात्र अपन बिचार व्यक्त कएल। हेतै तँ वैह जे अपने लोकनि करबै।

चनरू काका पुनः बजलाह – बौआ ! दू आखर पढ़ि कऽ शहर चल गेलहु तँ एहि लेल, जे गामक सत्यानाश करी। गाम, गाम थिकैक आ शहर–शहर। गाम में जे एखनहु भ्रातृत्व अछि, सामाजिकता अछि, स्नेह अछि से शहर में कतए पाबी। गाम में एखनहु बिना ककरहु सँ बिचार कएने केओ कोनो काज नहि करैत अछि। ककरहु आफत–विपत्ति में बिनु बजौने दस आदमी जमा भऽ जाइत अछि, आ शहर में, जकरा जे मन में अबैत अछि से करैत अछि। ककरहु सँ केओ कम नहि रहैत अछि। सब अपनहि में चूर रहैत अछि।

हौ बाबू ! एक बेरि कोनहु काजे दरिभंगा गेल रही। एक आदमी के गोली मारि देने रहए। चारू कात करीब पाँच हजार लोकक भीड़ छल मुदा ओकरा बचौनिहार केओ नहि रहए। सब चुप चाप तमाशा देखि रहल छल। हमरा नहि रहि भेल, हमर विवेक जागि उठल, ओकरा बचएबाक लेल आगाँ बढ़ए लगलहु। ताबत एक सज्जन हमर हाथ पकड़ि घिचि लेलन्हि आ कहलन्हिं बताह छी, बुझाइत अछि जे अहाँ एहिठामक लेल नव लोक छी। लफरा में पड़ि जाएब। रोज कचहरीक चक्कर लगाबए पड़त। आर तँ आर जखन घटना स्थल पर पुलीस आएल तँ सब चुप चाप ओहिठाम सँ ससरि गेल। गवाहिओ धरि नहि केओ देलक।

आई फेकू बाबाक श्राद्ध छैन्हि। चारू कात उथल–पुथल भ रहल अछि। आ चनरू काका कँ त ढेका खोंसबाक सेहो पलखति नहि छन्हि। कौखन एम्हर तँ कौखन ओम्हर चौबगली दौड़ि रहल छथि। गामक लोक सब हेजकहेंज मिलिकए भोजक सामग्री तैयार कए रहल छथि। स्त्रीगण तरकारी काटि रहल छथि। हलुआई रंग विरंगक मिठाई बना रहल अछि। जकरे देखु कोनो ने कोनो काज में लागल अछि।

ओम्हर श्राद्ध स्थली मे उन्नैस टा फुलही लोटा, थारी, ग्लास, कटोरा क संग चारि टा बाछा तरे गाय आ एकटा विशाल बाछा तैयार अछि। आई एहि बाछा के दागि साँढ़ बनाओल जाएत आ उजोर समुचा गामक खेत पथार में चरबाक लेल छोड़ि देल जाएत। लोक जतेक भोज नहि खाएत ओहि सँ बेशी लोकक खेत पथार साँढ़े खा जाएत।

साँझ भेल। भोज खएबाक लेल पूरा सौजनि आ जैबार जुटि गेलाह। सभ के दलानक आगाँ रबना मे बैसाओल गेल। पात परसल गेल, पानि परसल गेल आ ओकर बाद भोजक सामग्री सेहो परसल गेल। भोज देखनिहारक सेहो अपार भीड़ छल। तीन–तीन टा जेनरेटर चलि रहल छल। आ पचासो मरकरी लागल छल, जकरा प्रकाश में लागैत छल जेना सिमरिया घाटक मेला हो। इ भव्य दृश्य बिरले भेटैत अछि। पंच लोकनि भोजन प्रारंभ कएनहि रहथि आ कि सूगर कोना सँ मेघ उठल। बिजलौका लौकए लागल आ देखितहि–देखितहि बिहारि आबि गेल। सभकेर पात जतए–ततए उड़िया गेल। ताबत पानि पाथर सेहो पड़ए लागल। सबटा बल्ब आ मरकरी फुटि गेल। चारू कात अन्हार घुप्प भऽगेल। लोक जान बचैबाक लेल एमहर–ओमहर पड़ाए लागल। एकहि क्षण में सिमरियाक मेला सनक भव्य दृश्य श्मसान जकाँ लागए लागल। पंच लोकनि भुखले–पियासले अपन–अपन घरक रस्ता नापए लगलाह। हँ ! कौआ कुकुर अवश्य पन्द्रह दिन धरि खूब खएलक। आ सौसे गाम मे कतेको दिन धरि भोजक चर्चा होइत रहल। लोक मृतात्मा के कोसैत रहल, जे केहन छलाह, केहन दिन में मरलाह आदि। आ हम देखलहु जे दू लाखक फिरहिस्त कोना पानि पाथर में बहि गेल।

डबडबाएल आँखि

ओना तँ गाम जएबाक नाम पर मन में प्रफुल्लताक लहरि प्रायः सब कें दौरैत अछि। खास क हमरा गाम आ गामक लोक सँ एतेक लगाव अछि जकर वर्णन नहि क सकैत छी। मुदा किछु समयाभावक कारणे बहुत दिन सँ गाम नहि गेल छलहु। ते बहुत दिनक बाद गाम गेल छलहु। अपन मिथिलाक संस्कार आ परम्परानुसारे श्रेष्ठ जन के प्रणाम करबा लए निकलल रही। ताबत देखल जे लाल भैया दलान पर उदास मने बैसल छलाह। हम विस्मित भए सोचए लगलहु। मन मे लाल भैया क पहिलुक जीवन नाचए लागल। सतत हँसैत रहैत बला लाल भैया के आई की भऽ गेलन्हि। मधुर मुस्कानक संग बात–बात पर ठहाका, कानल लोक के हसौनिहार लाल भैया के आई की भऽ गेलन्हि। मन मारि कए चरण छूबि प्रणाम केलियैन्हि आ दबले मने हाल–चाल पुछलियैन्हि। लाल भैया आशीर्वाद दैत, डबडबाएल आँखिये बजलाह –

हम सब पुरना लोक छी ने। एहि युग में जियब बड़ दुष्कर अछि। आब एहि राज में पुरना संस्कृति–संस्कार तँ रहल नहि। सब केओ नव धारा नव सभ्यता में बहि रहल अछि। आ हमरा लोकनि के ने ओ संस्कारे अछि आ ने ओ क्षमता जे अपना के ओहि रंग–ढंग में समावेश कऽ सकी। ते आब तँ मरलाक बादे ने हाल चाल ठीक होएत। मरबो तँ अपना हाथ में नहि अछि। जा धरि जिबैत छी, कहुना कऽ घिसियारि काटि कऽ जिबैए ने पड़त।

तों अपन हाल–चाल कहह। हमरा तँ बुझाइत छल जे तों आब गामक रस्ते बिसरि गेल छह। कतेक दिनक बाद आयल छह। कोना हम सब मोन पड़लियह। एखन तँ हमरा सँ भगवानो रूसल छथि, तँ तोरा सब के की कहबह, हम हुनक मनक पीड़ा के बुझैत आगां किछु नहि पुछलियन्हि आ चुप चाप आँगन चल गेलहु। मन में भेल जे किछु ढाढ़स के बात कहियन्हि मुदा इ सोचिकऽ जे, जे आदमी स्वयं सब दिन दोसर के ढाढ़स देथि, दोसरक दुःख–सुख में आगु बढ़ि ओकर निराकरण करथि, कोनहु कार्य कें असंभव नहि बुझैत छलाह, सतत हँसैत–हँसैत सबहक मदैत करैत रहलाह, ओ व्यक्ति अवश्य कोनहु गंभीर वेदना सँ व्यथित होएताह। हुनका ढाढस देब हमरा बस के बात नहि।

आँगन में लाल भौजी सँ भेंट भऽ गेल। हुनका संगे हुनक छोट नेना टेकनाथ सेहो रहथि। टेकनाथ स्वभाव सँ चंचल पढ़वा लिखबा मे अपूर्व प्रतिभाशाली आ हँसी चौल में तँ माइये–बाप पर गेल छलाह। टेकनाथ के जँ केओ गारियो पढ़ि दैत छलन्हि तँ ओ हँसि क टारे दैत छलाह आ किछु व्यंग्यात्मक बात कहि ओहि व्यक्ति के सेहो हँसा दैत छलाह। हमरा ओहिना मन अछि जे एक दिन फेकू भाईक खेत सँ टेकनाथ कुसियार तोड़ि लेलकन्हि आ फेकू भाई तामसे माहुर भऽ सातम आकाश पर चल गेलाह। टेकनाथ के रंग–बिरही डहकन सुनाबए लगलाह। टेकनाथ कहलथिन्ह फेकू काका मुँह नहि दुखाइत अछि। हमहु तँ अहींक धीया पूता छी। एकटा कुसियार तोड़ि लेलहु तऽ की भऽ गेल। मरि जाएब तऽ सबटा माँथ पर लदने जाएब आ ई सुनि फेकू भाई

केर सब तामस ठंढा भ गेलन्हि आ ओहो भभाकए हँसए लगलाह। सच पूछी तँ गामक आनन्दे अलौकिक होइत अछि। एक बेर फगुआक बाद गाम गेल रही। ओहि समय में जतए–ततए बूटक ओरहा खूब होइत छल। हम आ टेकनाथ सेहो बूटक ओरहा खएबाक योजना बनौलहु। टेकनाथ दुखरन भाईक खेत सँ एक बोझ बूट उखाड़ि ओरहा में झोंकि देलन्हि आ ठेंगा सँ लाड़ए–चाड़ए लगलाह। ओरहा तैयार भऽ गेल। ताबत चारि–पाँच व्यक्ति आर आबि गेलाह आ हमरा लोकनि ओरहा खएबाक लेल तत्पर रही, कि देखैत छी जे दुखरन भाई हाथ में मोटका ठेंगा नेने रंग बिरही गारि पढ़ैत आबि रहल छथि। एहिठाम हमरा देखितहि ओ सकपका गेलाह। हम कहलियन्हि आऊ ... आऊ... दुखरन भाई ओरहा खाऊ आ दुखरन भाई सेहो ओरहा खाए लगलाह। ओरहा खतम भेला पर टेकनाथ बजलाह – दुखरन कका एतेक जे गारि पढ़लियैक आ ओरहा तँ अहूँ ने खेलियैक। कहुँ तँ गारि ककरा लगलैक। दुखरन भाई हँसी के रोकि नहि सकलाह आ बजलाह – हौ ! गारि अपनालोक के थोड़हि पढ़ैत छिऐक। जँ गारि नहि पढ़बैक तँ सबटा उपटाइये ने देत।

आ भौजी पातर–छितर देह, अलौकिक सुन्दरता सँ शुशोभित कमल सन फुलाएल मुँख मंडल, मृगी सनक आँखि, आ ताहि में काजर जेना लगैत छल जे साक्षत कामदेव पंचवाणक संधान कए रहलाह अछि। भौजी एकादशी, मंगल, वृहस्पति इत्यादि ब्रत करैत छलीह। उपर सँ सत्यनारायण भगवानक सुनता उपास सेहो करैत छलीह। आ एकबेर तँ एहन भऽ गेल जे स्लाइन तक

चढ़ाबए पड़लन्हि। बात भेल जे रवि दिन अनोना रहनि, सोम क एकादशी आ मंगल तँ मंगले छल। बुध क आब स्नान पूजा कए भोजन करतीह कि केओ बाजि देलक जे आई फलां ठाम सत्यनारायण भगवानक पूजा अछि। बस भ गेल ओहु दिन अन्न जल ग्रहण नहिए कएलन्हि। प्रात भेने वृहस्पति छल। पाँच दिनक लगातार उपवास देह कमजोर भऽ गेलन्हि। नाड़ी घीचए लगलन्हि। इ दृश्य देखि लाल भैया पित्ते माहुर भ गेलाह। आ बजलाह–किदनि ने धोई तँ भगते होई, देह में दम–दुसा तँ छन्हि ने, आ सब दिन ब्रते करतीह। मुदा करताह की ! तुरंत बैद्य बजबाओल गेल। आ स्लाइन चढ़बाओल गेल। तखन जाक सुधार भेलन्हि। भौजी प्रतिदिन मंदिर जाथि आ घंटों पूजा पाठ करथि। मृदुभाषी तँ छलीहे, लोकक आदर मे जेना लगैत छल जे अपन मधुर वाणीक खजाना खोलि देने होथि। मुदा आई हुनका मुँह पर सँ ओ भाव लुप्त रहए। मुरझाएल मुँख मंडल जेना लागैत छल जे चन्द्रमा के ग्रहण लागि गेल हो। हम चरण छूबि प्रणाम केलियन्हि आ पुछलियन्हि भौजी केहन हाल चाल अछि। भौजी आशीर्वाद दैत डबडबाएल आँखिए बजलीह –

बौआ ! हम पूर्व जन्म मे कोनो अधलाह कार्य कएने होएब, तकरा तँ भोगए पड़बे ने करत। कनियाँ छथि तँ बड़ नीक, सब कार्य मे निपुण छथि। भानस भात सेहो कए लैत छथि, मुदा हँसी–चौल एकदमे नहि बुझैत छथि। एखन नेनमति छैन्हिए। हम कहलियैन्ह – कनियाँ एखन नव–नव सासुर आएल छथि, नैहरक चहल–पहल सँ सासुरक बान्हल जीवन मे पाएर धएने छथि।

धीरे–धीरे सब ठीक भऽ जाएत।

भौजी बजलीह – ओना तँ ई समय सभकेर जीवन में एक बेर अबैत अछि। हमहु नैहर सँ सासुर आएल छी। हमहूँ जखन पहिलुक बेर आयल रही तँ बहुत बात अनसोहाँत लागैत रहए, मुदा धीरे–धीरे एहिठामक परिवेश में रमि गेलहु। जखन की अहाँक काकी केहन छलीह से तँ बुझले अछि। की मजाल छल जे हुनका सोझाँ केओ कल्ला अलगाओत। मुदा ओहि समय मे आ आजुक समय में बड़ अंतर अछि।

अहाँ के तँ मने होएत जे जखन हम द्विरागमन क बाद विदागरी भऽ क आयल रही। अहाँ सब भाई बहिन कतेक तंग करैत छलहु, कतेक हँसी–चौल करैत छलहु। हमहूँ राति दिन किछु नहि बुझैत छलहु आ अहीं सभक संगे प्रबाह मे बहि जाइत छलहु। राति–राति भरि खिस्सा–पिहानी चलैत रहैत छल आ हमरा माय बाप केर अहाँ सब की, की नाम धएने रही। मुदा आब ओ समय कतए पाबी। हास्य व्यंग तँ मिथिलाक धरोहर थीक। सार–बहिनोईक संग, दिअर–भाउजक संग, सारि–सरहोजिक संग, मिथिलाक हास्य व्यंग तँ विश्व विदित अछि। ई हास–परिहास मिथिला छोड़ि कतहु देखबा मे नहि अबैत अछि। जँ सच पूछी तँ बिना हास्य व्यंगक मिथिलाक कोनो अस्तित्वे नहि अछि।

हास्य व्यंग पर हमरा एकटा घटना मन पड़ि गेल। हमर एकटा प्रपत्र कार्यालय मे भुगतान हेतु लंबित छल। हम कतेक बेरि लेखापाल के कहने हेएबन्हि मुदा ओ बराबरि आना कानी

करैत रहलाह। एक दिन चाय केर दोकान पर हुनका संग कहा सुनी भ गेल आ हम कहि देलियन्हि जे तेल जरए तेली के आ किदनि फाटए मसालची के। लेखापाल आगि बबूला होइत साहेब सँ जाक शिकायत कएलन्हि –

साहेब छलाह तँ जातिक मुसलमान, मुदा मधुवनी जिला के रहनिहार छलाह। ओ हमरा व्यवहार सँ नीक जकाँ परिचित रहथि। लेखापालक मुँहे सब बात सुनि भभाकए हँसि देलन्हि। लेखापाल क्षुब्ध होइत बाजल अहूँ हुनकहि पक्ष लऽ रहल छियन्हि। साहेब अपन हँसी रोकि कहलथिन्ह – अरे नहि भाई ओ गारि नहि देलनि अछि। इ त लोकोक्ति थीक, मिथिलाक हास्य व्यंग थीक, श्रृंगार थीक। एकरहिं सँ मिथिला, मिथिला अछि, नहि तँ सिथिला भऽ जाएत। एकरा अन्यथा नहि लेल जाऊ।

भौजी बजलीह – बात भेलैक जे कनियाँ के गाम सँ खबासिनि आयल रहथिन्ह। ओ टेकनाथ सँ कनियाँक विषय में पूछए लगलथिन्ह – बौआ ! भौजी केहन छथि, कोना रहैत छथि, अहाँ लोकनि के मानैत छथि ने। एहि पर टेकनाथ कहलथिन्ह – सब किछु तँ बड़ सुन्दर अछि। मुदा कनेक बकलेल जकाँ करैत छथि। हँसी–चौल किछु ने बुझैत छथि। एतेक सुनैत कनियाँ भभैक उठलीह आ खवासिनिये के सोझां बाढ़नि सँ टेकनाथक पूजा करए लगलीह। अलंकारक वर्षा होमए लागल। हमरा पायर सनक ककरहु मुँह छैक एहि खानदान में। हमरा बाप के जे नौकर–चाकर पर एक दिनक खर्च अछि, से एहिठाम मासो दिन मे नहि होइत अछि। अपन मुँह देखबे नहि करताह आ अएलाह

अछि, हमरा नैहर के उकटऽ लेल। चालनि दुसलक सूप के जकरा अपनहि बहत्तरि छेद इत्यादि। बीच बचाव में भौजी के सेहो दू–चारि बाढ़नि लागि गेल रहनि आ टेकनाथ के तँ हँसी–चौल करबाक आदते छुटि गेलन्हि।

ओम्हर सौसे गाम में सब तरि एकरहि चर्चा। गाम घर में तँ नोन–तेल लगौनिहारक कमी नहिए रहैत छैक। जकरा सँ सूनू से खूब बढ़ा–चढ़ा कए व्याख्यान द रहल अछि। जखन कि एहि तरहक घटना सँ कोनहु घर बंचित नहि अछि। मुदा अपन टेटर के देखैत अछि। गाम घर में किछु एहनो लोक रहैत छथि जे बिना बजौने चल अबैत छथि जा जाबत ककरहु सासु–पुतौहक झगड़ा नहि सुनतीह, ताबत हुनका पेटक भोजन पचबे नहि करतन्हि। दोसरक झगड़ा में सीट–सीट का बात करतीह आ अपना बेरि सब बिसरि जएतीह। हम लाल भौजी के बुझा–सुझा क वापस एलहु। देखलहु जे भौजीक आँखि सँ धारा–प्रवाह नोर बहि रहल छल आ से देखि हमरहु आँखि डबडबा गेल।

भोरक सपना

सुतल रही। चारि बजे भोर में सपना देखलहु। अद्‌भूत सपना छल। लोक कहैत अछि जे भोरक सपना सच होइत अछि मुदा हमरा विश्वास नहि भेल। एहन सपना कोना साकार भ सकैत अछि। बिलाड़ि आ मूस एक संगे कोना रहि सकैत अछि। साँप आ बिज्जी एकहि संग एक बिल में कोना रहि सकैत अछि। हमरहु सपना किछु ओहने छल। सामाजिक वर्त्तमान परिपेक्ष्य मे जाहिठाँ एक दोसरक खूनक प्यासल हो, जाति पातिक कटुता, छूत–अछुतक भेद–भाव, ऊँच–नीचक खाधि, एक दोसर के निचाँ देखएबाक होड़ हो, ओहिठाँ हमर सपना कथमपि नहि सच भऽ सकैत अछि।

देखलहु जे गाम मे बड़ धूमधाम सँ ब्रह्म देवताक पूजा भऽ रहल अछि। सौसे गामक आ सब जातिक लोक केश कटौने उत्साह पूर्वक ओहि पूजा मे लागल छथि। करीब तीस हजार टाका घंटे भरि मे जमा भऽ गेल। जखन कि एहि सँ पूर्व बड़ मुस्किल सँ ब्राह्मण समाजक लोक दू हजार टाका जमा कए ब्रह्म देवताक पूजा करैत छलाह। गाजा बाजा सँ एहिठामक परिवेश अत्यन्त रमणीय लागैत छल। स्त्रीगण सेहो ब्राह्मण गीत "कथी बिनु आहे ब्राह्मण मुँहमा मलीन भेल, कथी बिनु शक्तिक हीन यौ .... आदि गाबि रहल छलीह। पूजा समाप्त भेलाक बाद सौंसे गामक लोक भोजन करबाक लेल बैसि गेलाह। आ बारीक छलाह

बिरजू भाई।

हम आश्चर्य काठ भऽ गेलहु। हम सपनहु में बिरजु भाई सँ एहन आशा नहि करैत छलहु। बिरजू भाई जाति–पातिक कट्टर समर्थक छलाह। एक बेरि चुनचुन दास ओहिठाम खेलन बाबूक बेटा अरूण भोजन कएलक। कारण छलैक जे चुनचुन दासक बेटा मनोज आ अरूण दूनू संगे पढ़ने छल आ एकहि संगे दिल्ली में नौकरी सेहो करैत रहए। शहर में तँ इ सब लोक मानैत नहि अछि। ओहि ठाम दूनू के एक दोसरक डेरा पर आन जान सेहो छलैक। तें चुनचुनक बेटीक विवाह में अरूण जाऽक भोजन कएने छल आ बरियाती के स्वागत–सतकार मे सेहो राति भरि मुस्तैद रहए। इ बात सुनितहि बिरजू भाई फनकि उठलाह आ लगलाह सौसे गाम मे ढोल पिटए। अनर्थ भऽ गेल, दुनियाँ उनटि गेल, ब्राह्मण आ शूद्र मे की अंतर रहल, आब तँ दुनियाँ रसातल मे चल जायत। एक सप्ताह धरि गाम मे घोल फचक्का चलल, अंततः खेलन बाबू के जाति सँ बारि देल गेल।

ओ विरजू भाई एतेक उत्साहित भए सब के खोआ–पिआ रहल छथि। ई आश्चर्यक बात नहि तँ आओर की थीक। हमरासँ नहि रहल गेल, पुछि देलियन्हि, की औ बिरजू भाई, आई उनटा गंगा कोना बहि गेल।

बिरजू भाई बजलाह – जखन सरकारे एकरा उठा देलकैक तँ हम सब कतेक काल धरि टारि सकैत छी। आब तँ एकरे मे फायदा अछि जे आगाँ बढ़िक गला लगा लियैक तखनहि भरमा

बाँचत। जँ आई गला नहि लगएबै तँ काल्हि माथे पर ने बैसत। आखिर इहो सब तँ आदमीये छी ने। हमरा लोकनिक आ एकरा लोकनिक खूनक रंग तँ एके अछि। तखन फर्क किएक कएल जाऊ। फर्क एतबहि अछि जे हमरा लोकनि ऊँच जातिक घर मे जन्म नेने छी आ इ सब निच जातिक घर मे। मनु स्मृति मे लिखल अछि जे जन्मना जायते शूद्र संस्कारे द्विज भवेत्। अर्थात जन्म सँ सब प्राणी शूद्र अछि। आ संस्कारोपरान्त ओ द्विज बनैत अछि। संस्कार कएला सँ ओकर जाति बदलल जा सकैत अछि। तें हिनको लोकनि के संस्कार करा कए जाति बदलि देल गेल अछि। आब अपना गाम मे केओ शूद्र नहि रहल केओ अछूत नहि रहल आ तखन एक संग भोजन करबा मे कोनो दोष नहि अछि। एकटा बात कहू, हमरा लोकनि तँ मनुए महाराजक संतान छी। तखन कहू जे मनु महाराज कोन जातिक छलाह, कोन धर्मक छलाह। इ जाति–पाति तँ कर्मक आधार पर बनाओल गेल छल। इ सब समाजक ढोंगी पंडित आ कठमुल्लाक थोपल सनेश थीक। कहु ने जे अपन घर आँगन आ आगुक रास्ता तँ सब केओ बहारैत छथि, तँ ओ जातिक मेहतर भऽ गेलाह। बाटा कम्पनी मे तँ जूता बनेबाक काज सब जातिक लोक करैत छथि ते ओ सब चमार तँ नहिए भऽ गेलाह। तहिना आई सँ हम सब भाई छी। सब मिलि कए एके ठाम बैसब, खाएब, पियब आ पूर्वहि जकाँ सब कार्य करब। हमरा लोकनि मे पहिने मात्र जनेउ केर अंतर छल, आब सेहो नहि रहल, सब केओ आई संस्कारोपरान्त जनेउ धारण कए लेलन्हि। आब हमरा लोकनिक बीच कोनो तरहक भेद–भाद नहि रहल।

हमरा अत्यन्त आश्चर्य लागल जे राति भरि मे बिरजू भाई कोन विश्वविद्यालय सँ डिग्री प्राप्त कएलन्हि, जे एहन प्रगतिशील विचार धारा व्यक्त करए लगलाह। हमरा मने अछि जे एहि बेर दूर्गा पूजा मे बाजा खराब भऽ गेल। ओकर ऑपरेटर जे जातिक मुसलमान छल, बाजा ठीक करबाक लेल मंडप पर चढ़ि गेल रहए। बिरजू भाई ककरहु कोनो दशा बाँकी नहि रखलन्हि आ बजलाह – ई नवका लोक सब, सब परंपरा के तोड़ि देत। ककरहु जाति–धर्म नहि बाँचए देत। हमरा लोकनि के जियब मुस्किल कए देत आ कतबहु कहला–सुनलाक बादो बिरजू भाई प्रसादो धरि नहि ग्रहण कएलन्हि।

हम पूछलियन्हि जे बिरजू भाई, आखिर इ ने कहु जे इ चमत्कार राता राति कोना भेलैक। अहूँक हृदय परिवर्तन भऽ सकैत अछि, इ तँ हम सपनहु मे नहि सोचैत रही।

बिरजू भाई बजलाह – बाउ ! इ सब समय केर खेल अछि। राम जखन वन गेलाह, तखन ने निषाद के गला लगौलन्हि। जँ अयोध्ये मे रहितथि तँ कोन प्रयोजन छलन्हि। तहिना अपना मने इ सब थोरे भेलैक अछि। एकरा छोड़ि दोसर कोनो रस्तो तँ नहि छल। बात भेल जे हमर महीस मरि गेल। कतेक खुशामद कएलहु चमार सब के, मुदा केओ महीस उठएबाक लेल तैयार नहि भेल। एक तँ दैवक डाँग आ दोसर समाजक चमेटा हमरा लोकनि के सोचबाक लेल विवश कए देलक। ओहि समय मे बहुत बेशी जातीय झंझट चलि रहल छल आ ते ओकरा सभक मन सेहो बहुत बढ़ि गेल रहए। सब आकाशे मे उड़ैत छल।

धरती पर केओ पयरे नहि रखैत छल।

हरो–फार जोतबा मे बहुत आना कानी करैत छल। तखन फुचना चमार के दू सए टाका चूपचाप गछलहु। ओ एकरा सब के खूब धमकौलक। आई जँ मालिक के काज नहि करबें तो काल्हि सँ लोक–बेद धिया पूता कतए चलतौक, नीक बेजाए मे के मदैत करतौक, इ झगड़ा–झंझट तँ राजनितिक लोक अपन वोटक लेल करैत अछि। हम जँ भुखलो रहब तँ इएह समाज ने हमरा देखत, आ कि दिल्ली के नेता देखबाक लेल आओत। तखन ओ सब आबि महींस उठा कए लऽ गेल। इ घटना तँ हमरा मने रहए। उपर सँ सरकार अपना पंचायत के हरिजन क्षेत्र घोषित कए देलक। आब तँ गामक मुखिया केओ हरिजने होएत। जखन बिना मुखिया बनने इ ऐंठी छलैक, तँ मुखिया बनलाक बाद की होएतैक। इ सोचि हमरालोकनि गम्भीरता सँ एहि विषय पर सोचए लगलहु। करीब आठ दिन धरि घमर्थन भेल। मनु स्मृति के पन्ना–पन्ना पढ़ि गेलहु। ई रूढ़िवादिता क मुख्य कारण छल शिक्षाक अभाव। पोथी तँ केओ देखैत नहि छल। शास्त्रीजी जे कहि देलन्हि से ब्रह्म वाक्य भऽ गेल, धर्मशास्त्र भऽ गेल, आ तें हम सब एहि कटुताक जीवन जीबाक लेल विवश रही। मनु स्मृति के आधार पर एकरा सब के संस्कार करा जनेउ धारण कराओल जाय तँ एक संग खएबा पिबा मे कोनो दोष नहि अछि।

तदनुसार हमरा लोकनि फुचन के ओहिठाम गेलहु आ कहलियैक, हौ फुचन ! हमरा लोकनि तोरा अपना गामक मुखिया बनाबए चाहैत छिअ। मुदा एकटा शर्त अछि। फुचन बाजल –

मालीक हमरा जे मुखिया बनेबई से हम कोन जोगरक छी। हम ठहरहुँ अंगुठा छाप, ने लिखऽ अबैत अछि आ ने पढ़ऽ। जाहि ठाम अपने सब छी, पढ़ल गुनल लोक, बुधियार, सब तरहें सक्षम, ताहिठाम हमरा सन गमार मुखिया बनि कऽ की करत।

बिरजू भाई बजलाह – एकर चिंता तू जुनि करह ! मुखिया तँ तों भइये गेलह। कारण हम सब विचार कए नेने छी, तोहरा छोड़ि दोसर के नामांकनो नहि हेतैक। तखन शर्तक बात इ जे गाम मे एकटा नया विचारधारा बनल अछि।

हमरा लोकनि विभिन्न जाति आ धर्म मे बँटल छी। जँ सब केओ जनेउ संस्कार करा ली तँ सभ केओ एक भऽ सकैत छी। एक ठाम बैसि क खा–पी सकैत छी। एहि सँ समाज मे समरसता सेहो होएत आ तोरहु नाम भ जएतह, जे फूचन जी मुखिया भेलाह तँ गामक रंग–ढंग बदलि देलन्हि। गाम मे राम राज्य आबि जाएत आ गाँधीजीक सपना सेहो साकार भऽ जाएत। हमरा गामक गिनती आदर्श गाम मे होमए लागत आ आनो गामक लोक हमरा गामक अनुशरण करए लागत।

फूचन बाजल – मालीक, अहाँ आरके तँ विचार बड़ विलक्षण अछि। मुदा हमरा सभ तँ इहो नहि बुझैत छियैक जे जनेउ कोना होइत छैक। ओहि मे कएटा ताग होइत छैक, ओ कोना तैयार होइत छैक। बिरजू भाई बजलाह – एकर चिंता तो जुनि करह। हम सब सभटा व्यवस्था कए लेब। परसू अक्षय, तृतीया थिकैक। ओहि दिन सब गोटे मिलिकए ब्रह्मदेवताक पूजा

करब आ ओही पूजा स्थल पर एकहिं संग सौसै गामक लोक के उपनयन कएल जाएत आ ओकर बाद सब केओं संगहि बैसि प्रसाद ग्रहण करब।

फूचन बाजल – मालीक ई तँ चमत्कार भ जेतैक। आनो गामक लोक के देखिक सेहेन्ता लगतैक।

बिरजू बजलाह – हँ सएह तँ कहैत छियह आ इ सबटा कार्य होएत फूचन मुखिया केर अगुआई मे। हम बिरजू भाई के धन्यवाद दैत कहलियैन्ह। बिरजू भाई ! जे कार्य हम पचास वर्ष मे नहि कऽ सकलहु, ओकरा अहाँ दू–चारि दिन मे कए देखाओल। एहि के लेल अहाँ धन्यवाद के पात्र तँ छीहे। संगहि एहि अद्भुत कला कौशल केर लेल अहाँ के शत–शत नमन।

बिरजू भाई बजलाह – बौआ ! समय केर संग तँ चलहि ने पड़त। जे व्यक्ति समय पर चुकि जाइत छथि ओ जीवन भरि पछताइत रहैत छथि। आ अहुँ तँ इएह ने चाहैत रही। तखन एहि मे अहाँ के हतोत्साहित नहि होएबाक चाही आ ने हमरा प्रफुल्लित। कारण सभ कार्य समये पर होइत अछि। समय सँ पूर्व किछु नहि भऽ सकैत अछि आ ने भाग्य सँ वेशी भेटैत अछि। जँ सच पुछी तँ इहो प्रेरणा हमरा लोकनि के अहीं सँ भेटल आ अहींक सिद्धांतक आधार पर हमरा लोकनि एकरा मूर्ति रूप देल।

हम पूछलियैन्ह, बिरजू भाई उपनयने धरि रहब आ कि विवाहो तक पहुँचब। बिरजू भाई बजलाह – एखन एतबहि धरि रहए दिअ। जे खाधि हजारो वर्ष पूर्व सँ खूनल अछि, ओकरा

पाटवा मे तँ समय लगतैक ने।

हँ ! आगाँ किछु आर योजना अछि। जेना कि रात्रि पाठशाला जाहि सँ दिन मे लोक अपन काज–धंधा करत आ सायंकाल पढ़ाई–लिखाई। ओहि सँ छः मासक बाद हमरा गाम मे अंगूठा छाप केओ नहि भेटत। स्त्रीगणक लेल सेहो पढ़ाई–लिखाई आ तरह–तरह के कुटीर उद्योगक प्रशिक्षणक व्यवस्था कएल जा रहल अछि। गरीबक छोट–छोट बच्चा जे चरबाही करैत छल, ओकरहु पढ़ाओल जाएत आ ओकर सिलेट–किताबक व्यवस्था करत गामक पंचायत समिति। आ एकरा लेल सरकारीये अनुदान पर आश्रित नहि रहब। गाम मे जे जेहन लोक छथि, हुनका सँ ओहने चन्दा एकत्रित कएल जाएत। कुल मिला कए गाम मे राम राज्य आबि जाएत। हम गद्‌गद् मने ब्रह्म देवता के प्रणाम कएलियैन्ह, जे अहिना हमरा समाज के सद्‌बुद्धि दिऔक आ ताबत हमर निन टुटि गेल। घड़ी के देखलहु साढ़े चारि बाजि रहल छल।

वरक गाछ

ओना तँ मिथिला में प्रायः सब गाछक अपन अलग–अलग महत्व अछि। जेना पीपड़ मे लोक प्रतिदिन जल ढारैत अछि। जे सब दिन नहि तँ कम सँ कम शनि दिन जरूर ढारैत अछि आ ओहि सँ शनिक ग्रह कटैत अछि। सोमवारी व्रत के अवसर पर तँ स्त्रीगण लोकनि विशेष रूपे पूजा आर्चा करैत अछि। केराक पातक काज तँ सब कार्य मे होइत अछि। पूजा पाठ सँ लऽक भोज धरि आ वृहस्पति व्रत पूजा तँ केरेक गाछ तर कएल जाइत अछि। उपनयन विवाह में आम–मौहक पूजन आवश्यके अछि आ पाकरि गाछ तर भूइयाँ बाबाक पूजा होइत अछि। मुदा वरक गाछक अपन अलग महत्व अछि। जाहिठाम रौद में तिलमिलाइत राही सेहो सुस्तेबाक लेल ठहरि जाइत अछि। नेना भुटका भरि दिन ओकर लटकल सिर के झूला बनाकए झुला झुलैत अछि। कमजोर बच्चा के वरक दूध बतासाक संगे देल जाइत अछि। ओहि सँ बच्चा स्वस्थ्य रहैत अछि। आ साँझ पड़ैत चिरई–चुनमुनीक रैन बसेरा बनि जाइत अछि। हेंजक–हेंज चिरै–चुनमुनी चह–चह करैत गाछ पर आबि रात्रि विश्राम करैत अछि। आ भोर होइतहि पुनः अपन दिन चर्या मे लागि जाइत अछि। साँझक ओ दृश्य बड़ अपूर्व आ मनोरम होइत अछि। खासक बैरसाइतक दिन तँ एकरा बिना काजे नहि चलत। बरसाइत दिन तँ गाछक आगाँ मनुक्खो फीका अछि। जे कोनो कनियाँ–मनियाँ विशेष कारणे गाछ तर एबा मे असमर्थ छथि हुनका वास्ते अंगनहि मे वरक ठाढ़ि रोपि

वैरसाइत पूजवाओल जाइत अछि।

हमरा गाम मे एकटा वरक गाछ अछि। जे करीब पाँच कट्ठा जमीन मे चतरल अछि आ गोर पचासेक ओकर डारि सँ सिर निकलल अछि। जाहि पर भरि दिन गामक धिया पूता झूला झुलैत रहैत अछि। दूर सँ देखबा मे लगैत अछि, जेना कोनो जटाधारी महात्मा समाधि लगौने बैसल होथि। बगल मे एकटा पोखरि सेहो अछि आ पोखरि केर एक महार पर इ गाछ आ दोसर महार पर राम जानकीक मंदिर एकर रमणीयता के आर बढ़ा रहल छैक। ओ वरक गाछ करीब चारि सौ साल पुरान अछि, जेना कि गामक बुढ़ पुरान लोक बजैत छथि।

जेठ मासक अमावस्या क बरसाइत पावनि होइत अछि। ओना तँ इ पावनि नव विवाहित लेल विशेष रूपे आयोजित कएल जाइत अछि, मुदा जवान सँ लऽ कऽ बुढ़–सुढ़ स्त्री धरि ओहि दिन सोलहो श्रृंगार कए वरक गाछक पूजा करैत छथि आ भरि दिन ब्रत सेहो करैत छथि। कहल गेल अछि जे इ ब्रत सब से पहिने सती सावित्री सत्यवानक जीवन पुनः प्राप्त करबाक लेल कएने छलीह, आ ब्रतक फलें यमराज सँ लड़ि कए सत्यवानक जीवन प्राप्त कएने छलीह। ओहि दिन सँ इ पावनि देशक अन्य भाग में पतिक रक्षाक लेल मनाओल जाइत अछि। एहि पावनि में स्त्रीगण खूब सजि धजि क वरक गाछ तर अबै छथि आ तन्मयता पूर्वक अपन–अपन वरक प्रतीक बुझि एहि गाछक पूजा करैत छथि। पूजा विधिपूर्वक कएल जाइत अछि। नाना प्रकारक पकवान, मधुर, बूटक अंकुरी, अक्षत, फूल, चानन आदि सँ पूजा कएल

जाइत अछि। पूजाक बाद गाछ के पंखा हौकैत छथि, आरती उतारैत छथि आ चरणामृत लैत छथि। एतेक स्वागत वर के तँ कहिओ नहि हेतन्हि, जतेक आई एहि गाछक भऽ रहल अछि। बरक लेल तँ घरक कोनो कोन मे खापड़ि आ बाढ़नि राखल हेतैन्ह। जेकर जेहन भाग हेतैन्ह सएह ने पाओताह। एहिठाम वरक गाछ के साक्षी मानि नव विवाहित कन्या एक दोसर सँ संगी सेहो लगाबैत छथि आ ओहि दोस्ती के जिवन भरि निमाहैत छथि। इ दृश्य देखबाक लेल गाछ तर लोकक भीड़ सेहो लागि जाइत अछि। बाट–बटोही सेहो मंत्र मुग्ध भऽ जाइत अछि आ किछु पल गाछे तर ठहरि जाइत अछि। इ भव्य दृश्य देखि, देखनिहार अपन सुधि–बुधि विसरि जाइत अछि। कतेक दिन धरि एहि दृश्य के हृदय मे रखने रहैत अछि। कतेक तँ कपार पीटैत अछि, जे एहि गाछक भाग देखु आ हाय रे हमर भाग ! कहिओ नीक बोल बचन तँ नहिए सुनैत छी आ उपर सँ बाढ़नि सूप अलग। आ कल्पना करैत छथि, जे कदाचित हमहू वरेक गाछ रहितहु।

आई बरसाइत पावनि छल। इ बात हमरा पहिने सँ नहि बुझल छल। गाम गेलहु आ जे किछु देखलहु अपना आँखिये, हमरा विश्वासे नहि होइत रहए। हमरा बुझायल जे सपना तँ नहि देखि रहल छी। चट दऽ अपना हाथ मे बिठुआ काटल तखन बुझायल जे नहि, इ सपना नहि थीक, मुदा जे किछु देखलहु ओ सपनहु सँ बढ़ि क रहए। देखलहु जे छोटकी भौजी खूब सजल–धजल लाल रंगक साड़ी, चौड़ा पाढ़ि बला पहिरिने रहथि आ

आंगी सेहो लाले रहनि। रूप रंग तँ भगवान नीके देने छथिन्ह आ ओहि पर गहना–गुड़िया जेना स्वर्गक परी होथि। हाथ मे आरती साजल थार नेने, जेना मंदिर मे भगवानक आरती उतारल जाइत अछि, तहिना भैयाक आरती उतारि रहल छथि। आरती उतारलाक बाद बियनि हौकलन्हि आ अपनहि हाथे भैयाक मुँह मे लड्डू खोऔलन्हि। हमरा लागल जे आई स्वयं भगवान भास्कर भैया पर दहिन्ह छथिन्ह। करीब बीस सालक गृहस्थ जीवन में भैया–भौजीक बीच एहन व्यवहार हम कहिओ नहि देखने रही। भैया–भौजीक बीच तँ सब दिन छतीसक सम्बन्ध रहल, आई तीरसैठ कोना भऽ गेल। हमरा मने अछि जे एक बेर भैयाक सासुर सँ केओ आयल रहथि। हुनका जेबा काल विदाई करबाक लेल भौजी, भैया सँ कहने रहथि। भैया अपन असमर्थता व्यक्त कएने रहथि, जे एखन हाथ खाली अछि, दोसर बेरि देखल जेतैक। एतबहि बात पर भौजी अलंकारक अष्टयाम शुरू कएलहि। अहाँक हाथ सब दिन जरले रहत। हमरा बेरि में अहाँक हाथ सब दिन खालीये रहैत अछि आ एखन जँ केओ दोसर माँगत तँ तुरंत आबि जायत। अनका लेल भोला बड़ दानी आ अपना लेल भिखारि। हमर तँ भागे फूटल छल जे एहि घर मे एलहु। नहि जानि जे बाबूजी एहि घर मे की लटकल देखने छलाह, जे एकदम मुग्ध भऽ गेलाह। भगवान ने करथि जे एहन घर–वर ककरहु देथि ! हमरा लागल जे भौजी के मिरगीक दौड़ा आबि गेल आ भैया जेना संज्ञा शून्य भ गेलाह, काटू तँ खून नहि। पाहुन जे आयल छलाह हुनकहु कोनादनि लगलैन्हि। बीच बिचाव करैत कहलथिन्ह, बुच्ची एना किएक बजैत छी। घर गृहस्थी अहिना चलैत छैक। हमहू सब तँ

परिवारे मे रहैत छी आ सब के लऽ कऽ चलैत छी। सब दिन बराबरि नहि रहैत छैक आ एहि लेल ओना अगुतएबाक नहि चाही। भौजी फफकि–फफकि कए कानए लगलीह आ अलंकारक झरी लगा देलैन्हि। ककरहु की मजाल जे ओहि काल ओहिठाम अटकत।

हुनका मे एतेक परिवर्तन देखि हम चकित छलहु आ चकित होएब स्वाभाविके छल।

हम कहलिएन्हि – भौजी गोर लगैत छी। आई भगवान भास्कर पश्चिम मे कोना उगलाह ? भौजी विहुँसैत अर्सिवाद देलन्हि – नीके रहु आ बजलीह – आई बरसाइत थिकैक ने। तखन हमरा मन पड़ल जे आइए बरसाइत थीक। आन दिन तँ जे जेना होइत अछि से तँ होइतहि अछि, मुदा आई पावनि थीक। आई तँ हिनकर पूजा करब हमर धर्म थीक। ताबत भैया पर नजरि गेल। बुझायल जे भैया आँखिक इशारा सँ किछु कहए चाहैत छथि। हम हुनक इशारा बुझि गेलहु आ ओहिठाम सँ ससरि गेलहु। भैयाक इशारा छल जे आई हिनका जुनि बमकाउ। आइयो तँ साल मे एक दिन हमर आरती उतारए दिऔन्ह। आन दिन जेना जे होई छै से तँ होएबे करतै। जेना बरद सँ भरि साल खेत जोतैत छी आ सुकराती दिन ओकर भव्य पूजा होइत अछि। नीक–नीक घास, सोनहाउन, नव–नव डोरी, गरदाम, कौड़ीक, झब्बा, गरा मे घंटी आदि। ओएह स्थिति आई भैया केर छन्हि। बेचारे सुकरातीक बरद बनल छथि।

ओकर बाद चिरकाल सँ परिचित गामक वरक गाछ तर एलहु। एहिठामक दृश्य मनमोहक छल। आ भीड़ सेहो अपार छल। सब केओ मंत्रमुग्ध भए ललनाक दर्शन करैत अपन नयन जुड़ा रहल छलाह। आई तँ बुढ़ो–सुढ़ सजि–सँवरि कए युवतीये नजरि अबैत छलीह। आ युवतीक तँ बाते कोन। हम सोचलहु वाह रे भाग्य ! एहि वरक गाछ केर केहन भाग्य अछि। एहन सुन्दर अवसर कतेक वरक पूरे जीवन मे नहि अबैत अछि, जे एहि वरक गाछ के प्रत्येक साल मे एक दिन अबैत अछि। मने मन भगवान सँ विनती कएल जे एहि जन्म मे जे बनौलहु से बनौलहु मुदा अगिला जनम मे हमरहु वरेक गाछ बनायब।

बुटक साग

ओहि समय मे कालेज मे पढ़ैत रही। विवाहक प्रसंगे बहुत लोक बाबूजी के तंग करैत रहथिन्ह। माय केर प्रबल इच्छा छलन्हि, मुदा हमरा एखन विवाह करब स्वीकार्य नहि छल। कारण कतेको लोकक मुँहे सुनैत रही जे विद्यार्थी जीवन मे विवाह भेला सँ पढ़ाई पर ओकर असर परैत छैक, आ तें बाबूजी सेहो घटक लोकनि के टारि दैत रहथि। इ बातो अक्षरशः सत्य छल। मुदा किंछु अपवादो तँ होइत छैक, इ माय केर कहब छलन्हि। विवाहक बाद विरले विद्यार्थी अपन शिक्षा–दीक्षा पूरा कए पबैत अछि। अधिकांश के तँ मायाजाल मे फसलाक कारणे पढ़ाई छोड़ए पड़ैत छैक। हमर एकटा संगी रहथि बालचन्द। बालचन्द केर विवाह, जखन ओ आठम वर्ग मे पढ़ैत रहथि, घर गृहस्थी किछु नै बुझैत रहथि, तैखन करा देल गेल रहन्हि। बालचन्द के बाबूजी, जखन ओ पांचे सालक रहथि स्वर्गीय भऽ गेलथिन्ह। घरक सबटा भार हुनका बड़का भैया पर छलन्हि। भैया उग्र स्वाभावक लोक रहथिन्ह, तें हुनकर कोनो सस–बस नहि चललन्हि आ विवाह भऽ गेलन्हि। हम देखल जे ओ मैट्रिको पास नहि क सकलाह। जखन कि पढ़बा–लिखबा मे बड़ नीक रहथि। परीक्षा मे सेहो नीक स्थान आ अंक भेटैत रहन्हि आ से देखि हमरहु इच्छा विवाह करबाक नहि होइत छल। बाबूजी के सेहो भीतर सँ इच्छा नहि रहन्हि मुदा माँ एकदम अड़ल छलीह, आ तें बाबूजी सेहो विवश छलाह। बाबूजी सब किछु हमरा पर फेकि अपने

निश्चिन्त भऽ गेलाह।

हम सब माय के बहुत मानैत छलियन्हि आ माय सेहो हमरा सब के बहुत मानैत छलीह। ओना तँ कोनो माय एहन नहि होइत अछि, जे अपना संतान के नहि मानए मुदा हमर माय साक्षात देवी केर मूर्ति छलीह। जेहने नाम छलन्हि, तेहने रूप रंग आ तेहने मृदु स्वभाव सेहो। हमर माय अपना मृदु स्वभावें सौंसे गाम पर राज करैत छलीह। कहिओ ककरहु एकार नहि मारलैन्हि। हुनकर स्वभावक चर्चा मरणोपरांत सौसे गाम मे होइत अछि।

हमर एकटा पितियौत भाई छथि। सदिखन हुनका घर में हुनक माय आ कनियाँक बीच महाभारत ठनले रहैत अछि, आ टोल परोसक लोकक लेल तँ एकटा मनोरंजने बुझू। कतेक एहनो लोक होइत छथि जे दुनु दिश लाड़नि जकाँ लारि–चारि कए झगड़ा बढ़ा देथि आ ओकर आनंद लेथि। पता नहि दोसरक झगड़ा मे लोक के की आनंद भेटैत अछि। हम एक दिन ओहि पितियौत भाई के जे वयस मे सेहो हमरा सँ जेठे छलाह, पूछलियन्हि भाई एना किएक आँगन मे महाभारत होइत रहैत अछि। इ सब अहाँ के अधलाह नहि लगैत अछि। कनेक भौजी के बुझा–सुझा दिऔन्ह, जे लाल काकी संग एना नहि करथि। एहि सँ गाम समाज मे सेहो अप्रतिष्ठा बढ़ैत अछि। औ बजलाह – माय जँ माय रहतै तखन ने आ माय जँ राकस भऽ जायत तऽ की कएल जेतैक। हमरा दुर्गा सप्तशतीक श्लोक मन पड़ि गेल।

"कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति"।

हम कहलियैन्ह – भाई ! माय तँ माइये होइत अछि। बेटा केहनो होमए मुदा माय ओकर अहित कखनहु नहि सोचैत अछि। ओ चट दऽ बजलाह – हमरे सनक माय रहैत अहुँके तखन ने देखितहु जे कोना पद्मिनी बनल रहैत छी। जखन कि लाल काकी बहुत शुद्ध विचार धाराक लोक रहथि। मन मे छः–पाँच नहि राखथि। उचित बात सबहक मुँहे पर बाजि देथि, से सुननिहारक लेल रूचिकर नहि होइत छल। बाजब कनेक कड़ा सेहो छलन्हि। से सब पुतौह के नीक नहि लगैत छलन्हि, आ ते दिन राति ठनले रहैत छलन्हि।

मुदा हमर माय ओहि सब सँ भिन्न रहथि। हुनका ककरहु बातक कोनो इरखा नहि होइत छलन्हि। हुनका लग सँ कनलो लोक हँसि क जाइत छल। एक दिन बड़का भैया कोनो गप्प पर माँ के डाँटि देने छलथिन्ह। हमरा सब के ओकरा लेल बहुत कष्ट भेल मुदा माँ केर लेल ओ कोनो बात नहि छल। पुछला पर माँ हँसैत बजलीह – जहिना आँहाँ हमर बेटा थिकहु, तहिना ओहो हमर बेटे थिकाह। ओ मात्र दू सालक छलाह कि हुनकर माँ स्वर्गीय भऽ गेलथिन्ह। हुनकर लालन–पालन आ सब परिचर्याक भार तँ हमरहि पर रहए। हुनका हम कोना–कोनाक पोसने छी, से तँ हमही टा जनैत छी। बच्चा जँ पायर पर दस्त कए दैत अछि तँ लोक पायर धो लैत अछि नै कि पायर काटि लैत अछि। अहाँ सब हुनका बाते रोख जुनि करू। ओहि दिन सँ हम सब माँ केर कोनहु कार्य कलाप पर हस्तक्षेप करब उचित नहि बुझैत छलहु, आ इ बुझैत छलहु जे हमर माय केवल हमरहि माय नहि बल्कि सब केर माय थिकीह।

एक दिन माय हमरा लग मे बैसैत बजलीह। बच्चा ! भानस भात करवा मे बड़ दिक्कत होइत अछि। अहाँ जँ विवाह कए लितौ तँ हमरहु किछु आफियत होइत आ समय–समय पर कोनो तीर्थो–बर्थो करितहु। ओना तँ घर छोड़ि कतहु जायब बड़ मुस्किल लगैत अछि। ककरा पर घर आंगन छोड़ब। एतेक लोकक भानस भात के करत। हमहु हुनकर विवशता के देखि, हुनकर आग्रह के टारि नहि सकलहु आ कहलियन्हि वेश जेहन इच्छा हो अहाँ सबके। इ गप्प सुनितहि माँ बिजलीक गतिये दोसर कोठली दिश गेलीह आ आबिकऽ चट द हमरा हाथ मे एक टा फोटो दैत भनसा घर दिश चल गेलीह आ बजैत गेलीह जे नीक जकाँ देखि लेब। जँ पसिन पड़ए तँ कहब। फोटो देखितहि हमरा बुझायल जे हम तँ हिनका कतहु देखने छी। इ तँ चिन्हल लोक लगैत छथि। कतए देखने छी, से स्मरण नहि छल।

मन पड़ल माघी पूर्णिमाक दिन छलैक। हमरा गाम सँ करीब चारि किलोमीटर पर एकटा स्थान छैक "नारिबाँन्ह"। ओहिठाम जीबछ धार बहैत छल। ते पूर्णिमाक दिन जीबछ धार में स्नान करबाक लेल हजारों लोकक भीड़ लगैत छल आ एकटा भव्य मेला सेहो भऽ जाइत छल। स्नानार्थी मे विशेष क सत्रीगण रहैत छलीह। आ दर्शनार्थी मे पुरूषगण। मेलाक़ तैयारी करीब एक सप्ताह पूर्वहि सँ होइत छल। मेला करीब सौ बीघा खेत मे पसरल रहैत छल आ ओहि में हजारो दुकान, अनेक तरहक नाच–तमाशा, नेना भुटकाक लेल झूला, वाइसकोप आदिक व्यवस्था रहैत छल। मेला मे अन्य वस्तुक अलावा झिल्ली–कचरीक बिक्री अधिक होइत छल। हम सेहो मेला देखबाक लेल गेल रही। भरि

दिन घुरि–फिरि कए मेलाक आनन्द लेलहु। एकटा दोकान पर बैसि जिलेबी आ कचरी सेहो खेलहु आ करीब तीन बजे ओहिठाम सँ घुरल रही। रस्ता मे हमर एकटा खेत सेहो छल, जकर रकबा लगभग पाँच बीघा छलैक। खेतक बीच मे करीब पाँच कट्ठा मे एक टा पोखरि सेहो छल। जकर उद्देश्य ओहिठामक खेत पटाएव आ माँछ खायब दूनू छल। पोखरिक मोहार पर खेत मे बुट बाग रहए जे लगभग भरि बित्तक भऽ गेल रहए आ पोखरि मे माछ सेहो खूब रहए। ते हम ओही रस्ते घुरल रही जे खेतो देखि लेब आ माछो जँ केओ पिटैत रहत तँ ओकरहु पकड़ब। मुदा जखन खेत लग एलहु तँ देखैत छी जे तीन चारि टा छौड़ी हमरहि खेत मे बुटक साग तोड़ि रहल अछि। हमरा बुझवा मे आबि गेल जे इ सब हमरा अपना गामक नहि अछि। अवश्य बगल केर गामक होएत। हम आबाज देलहु, के छी !

हमर आबाज सुनितहि सब गोटे हड़बड़ा कए दोसर खेत में चल गेलीह मुदा एक गोटे बड़ ढीठ जकाँ साग तोरितहि रहि गेलीह। हम पूछलियन्हि हमरा खेत मँ साग किएक तोड़ैत छी। ओ बजलीह – सागे ने तोड़ैत छी, आर तँ किछु नै तोड़ैत छी। हम हुनकर उत्तर सुनि स्तब्ध रहि गेलहु। केहन अलंकारक प्रयोग कएने रहथि आ एतेक निर्भीक भऽ क उत्तरो देबाक साहस तऽ सब केओ नहि क सकैत अछि। पुनः अपना के सम्हारैत आ गप्पक क्रम के आगू बढ़ेबाक लेल पुछलियन्हि – की नाम थीक ! शालिनी, ओ बजलीह। बाबूजीक की नाम थीक। बटकूदन मिश्र, पुनः बजलीह। कतए रहैत छी ? हाथक इशारा सँ देखौलन्हि, आ हम बुझि गेलहु जे दक्षिणबारि गामक छथि। ओहि गामक

महादेव मिश्र हमर अभिन्न मित्र छलाह। हम शालिनी सँ पूछलियन्हि – महादेव जी के चिन्हैत छियैन्ह ? ओ तँ हमर बड़के भैया छथि, शालिनी बजलीह आ इ कहैत ओ साग तोड़ब छोड़ि खेत सँ बहराय लागल छलीह। हुनका मन मे भेलन्हि जे इ हमरा बड़का भैया के चिन्हैत छथिन्ह, भऽ सकैत अछि जे कदाचित् गाम पर जाऽ कऽ उपराग ने देखि। मुदा हमरा नीक लागल जे इ मित्रक बहिन छथि, हिनका मे आ अपना बहिन मे अंतरे की छैक। हम कहलियैन्ह – महादेव जी हमर संगी छथि। हम सब संगे–संगे पढ़ैत छलहु। हमरा आ महादेव जी मे कोनो फर्क नहि अछि। ते आब जतेक मन हो से साग तोड़ि लिअ। इहो तँ आब अहींक खेत छी। शालिनी पुनः निर्भीकता पूर्वक साग तोड़वा मे लागि गेलीह। हम हुनकर अलंकारत्व पर सोचए लगलहु। ताबत मलाह सेहो आबि गेल आ पोखरि मे मछौर करए लागल।

हम अपना गाम परक लेल करीब दू तीन सेर माँछ लेलहु आ ओतबहि माछक खोंची बनाय शालिनी के देलियन्हि। पहिने तँ ओ माछ लेवा मे हिचकिचैली मुदा जखन हम कहलियैनह – महादेव जी के हमर नाम कहि देबैन्ह। ओ किछु नहि बजताह, बल्कि इ माछ देखि प्रसन्ने होएताह। हम जनैत छी ने, जे हमर सब संगी मे जीहक पातर ओएह टा छथि। ओ तँ माछ,देखैत इहो नहि पूछताह, जे कतए सँ अनने छी। ओ तँ देखितहि बुझि जयताह जे इ कोन पोखरिक थीक। तखन शालिनी माछक खोंची लय गाम दिश विदा भेलीह। दोसर दिन जखन महादेवजी सँ भेंट भेल तँ ओ माछक बड़ाई करैत पूछलन्हि। अहाँ के शालिनी कतए भेंट भऽ गेलीह, हुनका कोना चिन्हलियैन्ह जे ओ हमरहि बहिन

छथि। तखन हम पूर्व दिनक सबटा वृतान्त सुनोलियैन्ह। महादेव जी बजलाह – सैह तँ।

आई फोटो देखलाक बाद शालिनी केर रूप रंग हमरा सोझा ओहिना नाचए लागल। इ तँ ओएह शालिनी छथि, जे पोखरि परक खेत मे बुटक साग तोड़ैत छलीह। बाल्यावस्था सँ यौवनावस्था में प्रवेश करै वाली शालिनी। वयस करीब 16–17 वर्षक, गोर देह आ पातर कैत। गप्प करबा में नेनपन आ कतेक पकठोस जकाँ हमरासँ गप्प कएने रहथि। हम तँ ओहि काल हुनकर रूप रंग आ गप्प करबाक शैली पर मुग्ध भऽ गेल रही। आब शालिनी हमर जीवन संगी बनए जा रहलीह अछि। जेना लागल जे हम सूतल मे सपना देखि रहल होई ताबत माँ सेहो आबि गेलीह आ बजलीह – आई स्नान भोजन नहि हेतैक की ? हम अकचकाइत जेना निन सँ जागल होई, शालिनी केर फोटो माय के हाथ मे दैत ससरि गेलहु।

बाद मे पता लागत जे शालिनी माँ के सेहो पसिन्न रहथि ह। बात भेलैक जे शिवरातिक अवसर पर गामक स्त्रीगणक संगे माँ सेहो भवानीपुर गेल छलीह। ओहिठामक उग्रनाथ महादेव बड़ विख्यात छथि, सभकेर मनोकामना पूर्ण करैत छथिन्ह। जखन महादेव विद्यापतिक भक्ति भाव सँ खुश भऽ, हुनक सेवा करैक लेल, उगनाक रूप धऽ कऽ आयल छलाह, आ एहिठाम बहुत दिन धरि ठहरि गेलाह। तखन माँ पारवती महादेव के वापस कैलास लऽ जेबाक लेल ओहि स्थल पर अपन लीला कएलानि। क्रोध, अभिमान आ पिपासक मदैत सँ महादेव के विद्यापतिक प्रेम जाल

सँ छोड़ौलन्हि। ते एहि स्थल पर उगनाक प्रतीक महादेव उग्रनाथ महादेव केर नाम सँ विख्यात भेलाह आ माँ भवानीक लीलाक कारणें एहि स्थानक नाम भवानीपुर पड़ल। जे केओ व्यक्ति एहिठाम श्रद्धा सँ बाबाक पूजा आर्चा करैत छथि, हुनकर मनोकामना पूर्ण होइत छन्हि।

ओहिठाम शालिनी सेहो अपना मायक संगे गेल छलीह। सब के एक दोसर सँ परिचय भेलन्हि। शालिनीक रूप रंग, व्यवहार आ बाजब–भूकब सँ माय अत्यन्त प्रभावित भेलीह आ गप्पे–शप्पे मे बाजलि छलीह। हम शालिनी के अपन पुतौह बनाएब। आ शालिनी के माँ सँ शालिनीक फोटो मँगने रहथि, हमरा देखेबाक लेल। ओ तँ एहि विवाहक लेल पहिने सँ डाँर कसने रहथि। केवल ऑपचारिकताक लेल हमर बिचार चाहैत छलीह आ हम देखलहु जे ओहि दिन माँ अत्यन्त प्रसन्न छलीह। बुझाइत छलन्हि जे कोनो ऋण सँ उरिन भेल होथि।

घर मे विवाहक तैयारी होमए लागल। सब कर–कुटुम्ब के नोत हकार पठाओल गेल आ शुभ मुहुर्त्त मे शालिनी संग हमर विवाह भेल। चतुर्थीक राति जखन कोबर घर गेलहु, तँ शालिनी हमरा देखितहि आश्चर्य चकित भऽ गेलीह। हुनको पोखरि परक सब बात मोन पड़ि गेलन्हि। हमहू अपना के रोकि नहि सकलहु आ पूछलियैन्ह – केहन लगै अछि बुटक साग ? माँछो तँ उधारे अछि, शालिनी लजाइत बजलीह।

शंकरक खोज

आत्म मंथन। मंथन सँ मोन पड़ैत अछि जे प्राचीन काल मे जखन सभ्यताक पूर्ण विकास नहि भेल छल। ब्रह्मांड मे मात्र दू जातिक लोक छलाह, देव आ दानव आ दूनू मिलि कए समुद्र मंथन कएलन्हि। समुद्र मंथन सँ 14 टा रत्न प्राप्त भेल। लक्ष्मी, एरावत, शंख मुदा सबसँ पहिने प्राप्त भेल विष। जकरा प्रभाव सँ श्रृष्टिक सब प्राणी बेकल होमए लगलाह। पूरे ब्रह्मांडक विनास होमए लागल, धरती काँपए लगलीह। हुनक अस्तित्वे समाप्त होमए लागल। तखन ब्रह्मा, विष्णु सहित सब देव आ दानव त्रिपुरारी भगवान श्री शंकर केर शरण मे गेलाह। शंकर सँ प्रार्थना कएलन्हि आ शंकर आबि विषपान कएलन्हि। ओहि विष मे एतेक गर्मी छल जे भगवान शंकरक कंठ नीलवर्णक भऽ गेल। आ ताहि दिन सँ ओ नीलकंठ कहाबए लगलाह। अन्य रत्न जे बहार भेल से देव लोकनि बाँटि लेलन्हि आ अन्त में बहराएल अमृत, जकरा पर देव आ दानव दूनूक नजरि छल मुदा अमृतो, देवते के भेटलन्हि दानव ओकरहु सँ बंचिते रहि गेलाह आ तखनहि सँ प्रारंभ अछि दूनू क बीच झगड़ा। देव बुद्धिमान छलाह, आ संगे धैर्य सेहो छलनन्हि मुदा दानव मे एकर अभाव छलन्हि। देवता सँ अधिक बलशाली रहितहु बुद्धिक अभावे अंत में हारि जाइत छलाह।

समुद्र मंथन में जखन शेष नागक मँथनी बनाओल गेल तँ

देवताक विचार छल ओ नांगरि दिश रहथि। मुदा जँ इ प्रस्ताव ओ दितथि तँ हुनका मुँह दिश जाइक परितन्हि ओ सब बुझैत छलाह जे हम सब जे बाजब दानव दल ओकर बिपरीत करत। आ ते ओ सब शेषनागक मुँह दिश रहबाक निर्णय लेलनि। इ बात सुनि दानव ओकर विरोध कएलक आ दानव शेषनागक मुह दिश आ देवता नांगरि दिश गेल। देवता सतत उनटा चालि चलथि आ दानव के इ बुझवा मे नहि अबैत छल।

आजुक परिपेक्ष्य मे सेहो किछु ओहने स्थिति अछि। आजुक झगड़ा देव आ दानव के बीच नहि अछि। आजुक झगढ़ा अमीर आ गरीबक बीच अछि, उद्योगपति आ मजदूरक बीच अछि, मालिक आ नौकर के बीच अछि। आई एहि धरती पर समुद्र मंथन के नहि, आत्म मंथन केर आवश्यकता अछि।

हमरा लोकनि के शौर्य पराक्रम, कार्यकुशलता रहितहु पेटक ज्वाला के शांन्त करबाक लेल ओकर चालि नहि बुझैत छी आ आपस में बँटि जाइत छी। लड़ाई, करैत छी। ओकर फायदा अमीर उठबैत अछि।

जहिना देवगण दानव केर शोषण करैत छलाह। ओकरा तपस्या करबा में बाधा करैत छलाह। ओकरा प्रगति सँ ईर्ष्या करैत अधलाह कार्य करबाक लेल विवस करैत छलाह। कारण अधलाह कार्य कएने शीघ्र पतन होइत अछि। ठीक ओहिना पूँजीपति गरीबक शोषण करैत छथि। ओकरा शराबी आ जुआरी बनबाक लेल विवश करैत छथि। टाकाक लोभ देखाकए ओकरा

सँ हत्या कराबैत छथि। क्षणिक लोभ वशे बेचारा जीवन भरि जहल मे यातना सहैत दम तोरि दैत अछि आ अमीर आनन्द सँ जीवन बितबैत छथि।

जेना कि कोनो सरकारी कार्यालय केर उदाहरण लीअ। कतेक चापलूस व्यक्ति साहेब केर आगु–पाछू करैत रहैत अछि। साहेब के खुश करबाक लेल अपनहि समाज, भाई–बन्धु के शिकायत करैत अछि। ओ अपना के ओहि काल मे सबसँ पैघ बुझैत अछि। किएक तँ ओकरा पीठ पर साहेब केर हाथ रहैत अछि। ओ एहि बात के बिसरि जाइत अछि जे हमहू ओही समाज सँ आयल छी। ओ अपना के साहेबक समाज केर व्यक्ति बुझैत अछि। मुदा कौआ आ हंस केर जाति कखनहु एक भ सकैत अछि? आ जखन ओ साहेब सँ दुतकारल जाइत अछि, तखन ओ कतहु भ क नहि रहैत अछि। ने साहेब केर समाज मे आ ने अपनहि समाज में। एहि सँ हमरा सभके सबक लेबाक चाही।

ओहि समय मे दानव संगठित सेहो छल। एक दोसरक मदैत मे अपन प्राणक उत्सर्ग कए दैत छल। मुदा आई गरीब आ मजदूर वर्ग मे ओ एकता नहि देखल जाइत अछि। एकरहु संगठन अछि मुदा विभिन्न जाति आ सम्प्रदाय मे बाँटल अछि। पूंजीवादी व्यवस्थाक लोक एकरा कखनहु एक नहि होमए दैत अछि आ आपसहि मे लड़ा कऽ एकरा कमजोर बनाबैत अछि। समय–समय पर एकर नेता सेहो अपन स्वार्थक पूर्ति लेल ओहि व्यवस्था सँ मिलि जाइत अछि आ अपनहि संगठन के नुकसान करैत अछि। आई आवश्यकता अछि अपना मे सब कलह के

बिसरि एक जुट होएबाक। तैखन शोषक सँ लड़ि सकैत छी। ओ एकटा अछि आ हम सहस्त्र। मुदा फूट परस्ती के नीतिक प्रहार सँ हम सब अलग–थलग भऽ जाइत छी आ ओ एकरहि फायदा उठबैत अछि।

ओएह हाल हमरा नेता केर सेहो अछि। जखन ओ हमरा सभक बीच सँ चुनि क जाइत छथि, तखन हमर दुख दर्द बुझैत छथि। मुदा जखन कुर्सी पर बैसि जाइत छथि आ पूंजीवादी व्यवस्थाक लड्डूक स्वाद चखितहि हुनकर विवेक मरि जाइत अछि। ओ बजताह किछु आ करताह किछु। जेना एकटा सटीक उदाहरण दैत छी। हमर प्रधानमंत्री जाधरि विपक्ष में रहलाह, सतत स्वदेशी केर नारा सँ संसद मे दहारैत छलाह। मुदा प्रधानमंत्री केर कुर्सी पर बैसितहि सौंसे देश के बहुराष्ट्रीय कम्पनी के हाथ मे सौंपि देलन्हि। इ पूंजीवादी व्यवस्थाक प्रभाव नहि तँ आओर की थीक। हुनकर भाषण सुनि बहुत आनन्द अबैत अछि। बुझाइत अछि जे सब गप्प हमरहि हितक भऽ रहल अछि। मुदा काज सबटा उन्टा, जाहि मे गरीबक हित कतहु दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। जेना कि आयकर विभाग के हाल देखू। कर्मचारी जकरा 5–10 हजार टाका दरमाहा भेटैत अछि, ओकरा सँ सरकार छाती पर चढ़ि आयकर वसूल क लैत अछि। मुदा जकरा ओहिठाम करोड़क करोड़ आयकर बकाया अछि जेना कि नेता, अभिनेता, क्रिकेट खेलाड़ी, उद्योगपति, जकरा विषय में समाचारो पत्र में बराबरि निकलैत रहैत अछि, ओकरा सरकार की करैत अछि। आ करतै कोना ! सरकार तँ परोक्ष रूपे ओकरहि पर चलि

रहल अछि।

एहिमे हुनकर कोनो दोष नहि इ तँ कुर्सीक गुण अछि। जखन भगवान इन्द्र के पदच्यूत क देल गेल आ ओहिठाम महाराज नहुष के वैसाओल गेल तँ ओहो बैह केलनि जे इन्द्र करैत छलाह। जखन कि ओ धरती पर परम प्रतापी राजा छलाह। धर्माचरण मे रत प्रजाक सुख सुविधाक विशेष ध्यान राखैत छलाह।

मालिक जँ अपना नौकर केर दमन करए। उचित मजदूरीक भुगतान नहि करए बा ओकरा भूखल पेट सुतबाक लेल विवश करए तँ ओकरा मानवता कहबैक आ कि दानवता।

विश्व में सब सँ पैघ प्रभुता सम्पन्न देश अमेरिका, जकरा मानवाधिकारक सब सँ पैघ समर्थक मानल जाइत अछि। ओ इराकक संग केहन दानबताक व्यवहार कएलक। मुदा जखन भारत पाकिस्तान में युद्धक स्थिति आयल तँ पाकिस्तानक पक्ष लऽक बीच विचाव करए लागल। ओकर नीति अछि पाकिस्तान के बचएबाक लेल भारत के कखनहु आक्रमण नहि करए देत आ भारत के समृद्ध नहि बनए देबाक लेल दूनू मे मित्रता नहि होमए देत। ओ दूनू के बीच मे अपन दबदबा राखए चाहैत अछि।

एहि ठाम तुलसीदासक "समरथ के नहि दोष गोसाई" चरितार्थ भऽ रहल अछि। मुदा हिनक सामर्थ कतए गेल जखन 11 सितम्बर 2001 क वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हवाई हमला भेल।

आई चारू कात भ्रष्ट्राचारक बाजार गर्म अछि। जतए देखु ओतहि घोटाला। जेम्हरे देखु ओम्हरे काला बाजारी। डेग–डेग पर घूसखोरी, मारकाट, लूट–खसोट आ बलात्कार सँ त समाचारो पत्र रंगले रहैत अछि। एहन कोनो कार्यालय आ विभाग नहि अछि जतए बिना कैंचा के कोनहु काज होमए। आ कैंचा नहि देबैक तँ अहाँ सँ भरि मुँह बातो नहि करत। जँ ओकरा खिलाफ कोनहु कारबाई करब तँ ओकरा किछु नहि होएतैक। कारण नीचाँ सँ उपर तक ओकर चेन बनल छैक। मुदा अहाँ भयंकर परेशानी में पड़ि जाएब।

बलात्कार सँ मन पड़ल जे एक बेर समाचार पत्र में एकटा सामूहिक बलात्कारक घटना प्रकाशित भेल। बाद मे दूरदर्शन पर मंत्रीजीक द्वारा घटना पर खेद व्यक्त कएल गेल। अपराधी पर कोनो कारबाई नहि कएल गेल। कहु जे खेद व्यक्त कएने समस्याक समाधान भऽ गेल। खेद कोनो अणु बम तऽ नहिए थीक जे छोड़ि देबैक आ समस्या खतम।

जन प्रतिनिधि जे बेकारी, बेरोजगारी के नारा दैत कुर्सी पकड़लन्हि। ओहो कुर्सी पर जाइतहि जनता के दुःख दर्द विसरि गेलाह, देश केर सबटा रोजगार, कल–कारखाना, बहु राष्ट्रीय कम्पनी के थम्हा देलन्हि। सब ठां कम्प्यूटर बैसा देलन्हि। सार्वजनिक क्षेत्र के निजी क्षेत्र में परिणत कए रहलाह अछि। रोजगार कतए सँ देताह। जेहो रोजगार पऔने छल, ओकरहु रोजगार छुटि गेल।

ओतबहि नहि दिल्ली जे भारत केर राजधानी अछि, आब अन्तर्राष्ट्रीय शहर में परिणत भऽ रहल अछि। किछु दिनक बाद जँ दिल्ली जायब तँ लागत जे भारत मे नहि पेरिस मे छी। मध्य दिल्ली सँ सब कल–कारखाना हटा देल गेलं। लाखों मजदूर बेरोजगार भऽ गेल। केवल बिहारक चालीस हजार मजदूर दिल्ली सँ बाहर कए देल गेल। जँ एक मजदूरक परिवार मे पाँचे व्यक्ति के मानबै तँ दू लाख व्यक्ति के सोझाँ भूखमरीक समस्या आबि गेलैक। मजदूरी तै भेटतैक नहि, तखन पेट भरबाक लेल ओ व्यक्ति कोनो कार्य करबाक लेल विवश अछि। चाहे ओ कार्य असमाजिके किएक नहि हो। एहि संबंध मे हम उपर सेहो चर्चा कएने छी, जे पूंजीवादी व्यवस्था कोना हमरा सबके अधलाह कार्य करबाक लेल विवश करैत अछि। इहो ओकरहि एकटा कड़ी थीक।

हमर सरकार ओहि व्यवस्थापक हाथक कथपुतरी थीक। चुनाव मे करोड़क–करोड़ खर्च करैत अछि। आ जखन ओहि व्यक्ति सँ ओकर स्वार्थ पूर्ति नहि होइछ, तँ तहलका प्रकरण बना कए ओकर मुड़ी झुका दैत अछि आ ओ नेता समाज मे मुँह देखेबाक जोगरक नहि रहि जाइत अछि।

हमहु लोकनि ओकरहि टुकड़ा पर बड़ आनन्दित होइत छी। ओहि क्षण अपना भाई–बन्धु के बिसरि जाइत छी। ओकरहि इशारा पर अपना भाई– बन्धु सँ लड़ैत छी। आ ओ खुश भऽ पीठ थपथपबैत अछि। हम सब क्षणिक सुखक लेल अपन मान मर्यादा बिसरि जाइत छी, अपना समाज के बिसरि जाइत छी,

अपना कर–कुटुम्ब के बिसरि जाइत छी।

बीसंवी सदी मे जतेक बाबा भेलाह ओहि मे किछु अपवाद छोड़ि सब एकरहि एजेन्ट छलाह। एहिठामक लोक के अपना माया जाल मे फसेबाक लेल लाखक–लाख सहायता भेटैत छलन्हि। आ ओ सीधा सादा आदमी के अपना मायाजाल मे फँसा कए वा एक तरहें गुलाम बना कए राखैत छलाह। पैघ पैघ अधिकारी आ नेता हुनका सँ प्रभावित भए नतमस्तक रहैत छलाह।

आ ओहि सँ हुनकर क्रिया–कलापक प्रचार–प्रसार सेहो होइत छल। जाहि बाबा के ओहिठाम जतेक अधिकारी वा नेता जाइत छलाह, जतेक कार क भीड़ रहैत छल, ओ ओतेक चमत्कारी कहबैत छलाह। आ पत्रकार सेहो अखबारक सुर्खी बनौने रहैत छल। हुनक आडम्बर कोनहु राजा महाराजा सँ कम नै होइत छल। कहु ने जे साधु सन्यासी छथि हुनका दुनियाँ सँ कोन मोह। जे अपना के ब्रह्म लीन होइक बात करथि, हुनका राजसी ठाठ–बाट केर की प्रयोजन। दोसर के उपदेश दैत छथि जे घर सँ मोह नहि करू इ तँ मरघट थीक। मरघट केर व्याख्या करैत छथि। जतए क्षण–क्षण आयु घटैत रहए। इ बात अक्षरशः सत्य अछि, मुदा इ केवल हमरहि लेल आ कि हुनकहु लेल। एहि बाबा केर पैठ राजनिति आ सरकारी अधिकारीक बीच बहुत रहैत अछि। आ मात्र एकतबहि लेल हुनका एजेन्टो बनाओल जाइत अछि। ककरहु आशीर्वाद दैत छथि जे अहाँ केर अमुक कार्य अमुक तिथि क भऽ जायत अहाँ अमुक दिन अमुक कार्यालय मे चल जाएब। संबंधित अधिकारी के बजाकए कहि दैत छथि।

ओहो अधिकारी बाबाक आज्ञा टारि नहि सकैत अछि। ओ ओहि व्यक्तिक कार्य कए दैत अछिं आ बाबाक सोरहा पिटा जाइत अछि। जे बाबा बड़ चमत्कारी छथि, हमर बिगड़ल कार्य हुनका आशीर्वाद सँ भऽ गेल। एहि सँ बाबाक ओहिठाम भीड़ बढ़ए लगैत अछि।

एक बेर सत्यनारायण भगवान केर पूजा मे पंडित जी कहलन्हि – उजरा भाँटा नहि खएबाक चाही। ओहि मे दोष अछि। कथा मे पंडिताइन सेहो छलीह। आंगन जाइतहि सब सँ पहिने दू सेर उजरा भाँटा के फेकलन्हि जे पंडित जी काल्हिये अनने रहथि आ भोजन मे पंडित जी के आगाँ आलूक चोखा देलन्हि। पंडिज जी तमसाइत बजलाह – भाँटा के तरकारी किएक नहि केलहु, काल्हिये तँ अनने छलहु। पंडिताइन बजलीह अहीं तँ कथा मे कहलियैक जे उजरा भाँटा नहि खएबाक चाही आ सबटा भाँटा उजरे छल ते हम फेकि देलहु। पंडितजी हसैत बजलाह – अहाँ केहन बताहि छी। ओ बात हम दोसरक लेल बाजल छलहुँ आ कि अपना लेल। जँ लोकसभ उजरा भाँटा नहि खाएत तँ सस्त भऽ जाएत आ हम सब खूब नीक जकाँ अदौरी भाँटा के तरकारी खाएब। मुदा अहाँ तँ आशा पर पानि फेरि देलहु।

आई देशक भीतर निजीकरण के बाढ़ि आबि गेल अछि। जेम्हरे देखु सार्वजनिक क्षेत्र के निजीकरण कएल जा रहल अछि। ओहि मे विद्युत आपूर्ति सेहो अछि। सरकारक कथनानुसार विद्युत बोर्ड घाटा मे चलि रहल अछि। ओकरा कर्मचारी के वेतन

आ एन0टी0पी0सी0 क बकाया भुगतान करबाक सामर्थ नहि छैक। जखन कि मात्र सरकारी विभागक बकाया सँ सबटा चुकता कएल जा सकैत अछि। एखन किसान के खेत पटेबाक लेल एक रूपये बिजली देल जाइत अछि, गामक गरीब एवं पिछड़ा जातिक लोक के बासैठ रूपया मास मे लगैत अछि। मुदा जखन निजी करण होएत तँ ओ साढ़े तीन रूपया मे बिजली खरीद कए सात रूपये बेचत। निजी मालीक एक रूपये बिजली बेचि अपन पूंजी थोड़बहि डूबाएत। आ एकर परिणाम होएत जे गरीब जनता के बिजलीक दर्शन दूर भऽ जाएत, कृषक पम्प नहि चला सकत। भारत जे कृषि प्रधान देश अछि आ अन्नक मामला मे आत्म निर्भर अछि, से नहि रहि सकत। पुनः भारत के विदेश सँ अन्न मँगबाब पड़त, जे विदेशी चाहैत अछि। एहि स्थितिक लेल जिम्मेवार अधिकारी आ कर्मचारी सेहो छथि। अधिकारी एकरा अपन सम्पत्ति बूझि लूटैत रहलाह, आ कर्मचारी हुनकर समर्थन कएलन्हि। कर्मचारीक बीच कतेको युनियन बनि गेल। यूनियन बनैत अछि अपन अधिकारक लेल व्यवस्था सँ लड़बाक लेल, कर्मचारी पर दमन केर विरोध करबाक लेल। मुदा हमरा देश में यूनियन बनैत अछि कार्य नहीं करबाक लेल। तखन तँ इएह दशा होएत जे भऽ रहल अछि।

आई आवश्यकता एहि बातक अछि जे हम सब छोट छीन झगड़ा के बिसरि, जाति–पाति, अगरा–पिछड़ा, धर्म समुदाय सब के बिसरि एक भऽ जाई। आओर बैसि कए आत्म मंथन करी। तखनहि अमृत पाबि सकैत छी। अन्यथा मेहनति हम करैत छी,

आ अमृत दोसर चिखैत अछि।

एहि मंथन सँ अमृत अवश्य प्राप्त होएत, मुदा बाद मे। पहिने विष रूपी, भ्रष्ट्राचार, लूट–खसोट, आपसी कलह, आदि सँ लड़ए पड़त। किछु नुकसानो होएत, किछु के मरइयो पड़त। ओहुना तँ मरितहि छी। जँ एकर डर करब तँ कहिओ अहाँक संषर्ष सफल नहि भऽ सकैत अछि। माँथ मे कफन बाँधि एहि मंथन मे जुटि जाउ, आ खोज करू कोनो शंकर के। जे आबि एहि विषक पान करथि आ हमरा सब के एहि दशा सँ उबारथि। ओ शंकर कैलास सँ नहि औताह। ओ हमरहि सभक बीच छथि। केवल, प्रयासक आवश्यकता अछि, चिन्हबाक आवश्यकता अछि।

फेकनी माय

सुतले छलहु, कि भोरे–भोर बड़ी जोरक हल्ला भेल। जाऽ क देखलहुँ तँ फेकनी माय कानि रहल छल। ओकरा आँखि सँ दहो–बहो नोर चूबि रहल छल। देहक वस्त्र जगह–जगह फाटल जेना ओकर गरीबी हुलकि रहल छल। पता लागल जे गणेशबा तीन–चारि छौकी मारि देने रहए। जखन कि ओ बेचारी किछु नहि कएने रहए आ ने ओ ककरहु किछु करैत छल। बिना कसूरे के जे पबैत छल, दू–चारि छौकी मारि दैत रहए। हमरा ओकर दशा देखि दया आबि गेल। गणेशबा के खूब फज्हति कएल आ फेकनी माय के कहलियैक – तों भोरे–भोरे किएक चल अबैत छे। तें ने एहन लोकक गारि–मारि सहए पड़ैत छौंक। फेकनी माय बाजलि – बौआ ! जखन भगवाने बिपरीत छथि तँ लोकक की दोष देबैक। ई पेट जे नहि कराबए। अपन जीवन निर्वाहक लेल चारि–पाँच टा घर में चौका–वर्तन गछने छियैक, तें भोरहि आबए पड़ैत अछि। हम तँ ककरहु किछु नै बिगारैत छियैक मुदा।

हमरा ओ दिन मन पड़ल, जखन फेकनी के बाप जिबैत छल। ओकरा घर सँ सटले एकटा दोकान छलैक। दोकान मे बिक्री खूब रहए आ आमदनीयो नीक रहए। खूब सुन्नर पक्काक घर आ ताहि पर रंग–टीप लगैत छल कोनो रजबाराक डेउढ़ी हो। जखन फेकनी माय सँ ओकर विवाह भेलैक तँ ततेक धूमधाम सँ बरियाती साजल गेल, जे आई धरि ओहेन बरियाती ककरहु नहि गेल अछि। ओकरा कोनो वस्तुक कमियों तँ नहि छलैक।

एक तरहे ओ हमरा गामक विड़ले छल।

फेकनीक बाप स्वभाव सँ सेहो अत्यन्त नीक छल। ककरहु दुर्वचन नहि कहने होएत। छोट पैघ सबहक एक समान आदर करैत छल। राति–बिराति जे ककरहु पाहुन–परक आबि जाइत छल तँ ओ सामानक लेल फेकनीक बापक दोकान दौरैत रहए आ फेकनीक बाप दोकान खोलि ओहि व्यक्ति के आवश्यक सामान दैत, ओकर बेगरता शांत करैत छल। नगद तँ नगद उधारो देबा मे कखनहु कोताही नहि करैत रहए।

एक बेर हमरहु ओकरा ओहिठाम जाय पड़ल रहए। रातिक साढ़े ग्यारह बजैत रहए। ओझाजी दू गोटा सँ आबि गेलाह। जँ एकसरे रहितथि तँ मटिऔलो जा सकैत छल मुदा हुनका संगे हुनकर अभिन्न संगी छलथिन्ह। ओ लोकनि एक कथाक संदर्भ मे दोसर ठाम गेल छलाह। बात बनैत बनैत बिगड़ि गेल ते एतेक राति भ गेलैन्ह आ एतेक राति मे कतए जएतथि तें एहिठाम चल एलाह। घर मे सब किछु तँ छल मुदा घी नहि छल। कचौरी कथी मे छानत, जाएत, ई पैघ समस्या छल। कनियाँ बजलीह – एतेक राति मे घीक व्यवस्था कतए सँ करब! हम कहलियैन्ह – देखैं छियैक प्रयास कऽ कऽ, आ हम बर्तन उठा क चलि गेलहु। जखन दोकान पर गेलहु तँ दोकान बंद रहए। हम आबाज देलौ, दोकानदार छी औ ..... फेकनीक बाप कुहरैत केबाड़ खोललक आ बाजल के थिकौह बाबू ....। हम देखलहु जे ओ बुखार सँ थरथर काँपि रहल छल, पूछलक एतेक रातिक, की बात थिकैक। हम बजलहु किछु पाहुन आबि गेल छथि आ घर में घी नहि छल ते आबए पड़ल। ओ घर सँ एकटा डिब्बा आनिक देलक आ बाजल हमर

मोन ठीक नहि अछि। एखन दोकान खोलबा मे दिक्कत होएत। जँ एहि सँ अहाँक काज चलि जाय तँ काज चला लिअ, भिनसर देखल जेतैक। हम ओ घी लऽक आंगन चल एलहु आ पाहुनक व्यवस्था में लागि गेलहु। भिनसर जखन ओकरा कैंचा देबाक लेल गेलहु तँ ओ कैचा नहि लेलक। कहलक जे जँ हम दोकान सँ देने रहितहु तँ अवश्य ल लितहु मुदा इ तँ हम घर सँ देने रही ते एकर कैंचा नहि लेब। समाजक कार्य, समाजक बेगरता शान्त करब छैक आ सएह हम कएलहु।

हम बजलहु – एना जँ करब तखन तँ घरहु सँ घाटा लागत। ओ बाजल अहाँ दू टा कुटुम्ब के स्वागत में जतेक खर्च केलहु ओहि सँ कमहि केर घी छल। जँ अहाँ के घाटा नहि लागत तँ हमरहि किएक लागत। हम ओकरा तर्कक सोझाँ निरूत्तर भऽ गेलहु आ सोचए लगलहु जे हिनक तर्क कतेक सटीक छन्हि। जँ सब गाम में एहन दू–चारि टा लोक भऽ जायत तँ देशक कल्याण भ जायत।

आ फेकनी माय तँ ओकरहु सँ बीस छल। जेहने स्वभाव ओहने रूप रंग। गोर दप–दप आ गाँठल देह। मृगी सनक नयन नक्स आ मृदुभाषी सेहो छल। जखन बजैत छल तखन लगैत छल जे मुँह सँ मिसरी झरैत हो। दुनू प्राणी हँसी–खुशी सँ जीवन बिताबए लागल। कमी छलैक तँ एकटा बच्चा केर आ सेहो भगवान पूरा कएलखिन्ह, मुदा नौ सालक बाद। नौ सालक बाद एकटा बेटी जंन्म लेलक जकर नाम फेकनी रखने रहए।

फेकनी के दूनू जीव जानो सँ बेशी मानैत छल आ कनेको

जँ फेकनी कनैत छल तँ दूनू प्राणी बेकल भ जाइत छल। सबटा काज छोड़ि फेकनी मे लागि जाइत छल। फेकनी करीब सात सालक भ गेल मुदा ओकरा दूनू प्राणी के बुझवा में नहि आयल जे सात साल कोना बीत गेल। एक दिन फेकनी के बोखार लागि गेल। कतेक दबाई–दारू कराओल गेल। कैंचा पानि जकाँ बहि गेल। पैघ सँ पैघ बैद्य के बजबाओल गेल। फेकनी ठीक नहि भेल आ अपन माय–बाप के छोड़ि इ दुनियाँ छोड़ि देलक। फेकनीक बाप एहि संताप के सहि नहि सकल। ओहो खाट पकड़ि लेलक। फेकनी माय घरबला के इलाज में कोनहु कोताही नहि कएलक। बताहि जकाँ कैंचा बहाबए लागल। घर–घरारी सब बेचि देलक, मुदा फेकनीक बाप ठीक नहि भेल। ओहो एक दिन फेकनी माय के एकसरे छोड़ि दुनियाँ सँ बिदा भऽ गेल।

आई फेकनी माय अनाथ भ गेल। सब किछु खतम भ गेलै ओकर। बचि गेलैक तँ मात्र ठट्ठर। एकटा जिबैत लाश जकाँ भटकैत रहए। बताहि जकाँ करैत रहए। गामक किछु लोक ओकरा पर छीटा कशी सेहो करैत रहए। किओ ओकरा डायन सेहो कहैत रहए आ बेटी–घरबला के मरि जएबाक दोष सेहो ओकरहि पर दैत रहए। कतेक दिन धरि भुखले–पियासले रहल, मुदा कतेक दिन रहत। अन्ततः गुजर–बसर करबाक लेल दू–चारि टा घर मे टहल–टिकोरा कए लैत रहए। इ बसुधा, इ घर आँगन जकरा लेल लोक कतेक फुसि बजैत अछि, फरेब करैत अछि आ जघन्य सँ जघन्य अपराध सेहो करैत अछि, मुदा इ ककरहु नहि थीक। फेकनी मायक दशा देखि एकर चरितार्थ एक दम सत्य बुझना जाइत अछि।

हम गणेशवा सँ पूछलियैक जे एकरा किएक मारलही। तँ ओ बाजल – इ मौगी मनहूस अछि। एकरा भोरे–भोर देखला सँ भरि दिन खराब भऽ जाइत अछि। हम मने मन सोचलहु जे केहन समय आबि गेल। काल्हि धरि जखन एकर चलती रहैक तँ गामक एहन केओ व्यक्ति नहि छलाह जे एकरा सँ उपकृत नहि भेल होथि। मुदा समय खराब होइतहि लोक सब किछु बिसरि जाइत अछि। हलांकि गामक अधिकांश लोक एकरा दुःख सँ द्रवित छल, मुदा दू चारि टा लोक एकरा संगे दुर्व्यवहार करैत रहए। जाहि मे एकटा गणेशवो रहए। कारण रहैक जे फेकनी माय जखन घरबला केर इलाजक खातिर घर बेचि रहल छल, तँ ओकर एकटा गाहक गणेशवो रहए। मुदा गणेशवा ओहि काल पूरा दाम नहि दऽ सकलै आ ओकरा इलाजक लेल टाकाक बेहद आवश्यकता छलैक। ते ओ घर गणेशवा के नहि दऽ दोसर व्यक्ति के दऽ देलक आ तें गणेशबा ओकरा पर खौझायल रहैत छल। एहने गप्प किछु आओर व्यक्तिक संगे छल जे एकरा सँ रूष्ट रहैत छलाह। मुदा अधिकांश गामक लोक के एकरा सँ पूर्ण सहानुभूति छल आ ते एकर गुजर–बसर सेहो चलि रहल छल।

हम फेकनी माय के कहलियैक जे आई सँ कतहु जुनि जो। हमरहि घर मे रह आ जे किछु बनतै से खा लेल करिहें। फेकनी माय बाजलि – हम बिना किछु कएने कतहु नहि खा सकैत छी। हम भुखले रहि जाएब, मुदा.....।

हम ओकर स्वाभिमान पर अत्यन्त गर्वित भेलहु आ कहलियैक ठीक छै, जे कोनो घरक कार्य हेतैक से कए देल करिहें। ओ हमर बात मानि हमरहि घर मे रहए लागल। आ किछुए दिन मे फेकनी

माय हमरा घरक सदस्य जकाँ भ गेल। घरक विषय मे सब बातक जानकारी ओकरा रहैत छल। कखन कोन कार्य होएत, कखन की नहि होएत सब फेकनी माय बुझै छल।

एक दिन कनियाँ बजलीह – सुनै छी ! इ बुढ़िया तँ हमरहि पर शासन करब शुरू कए देलक अछि। हम पूछलियैन्ह से की ! कहत जे सबेरे किएक ने नहाइत छी, खाइत छी, चाह बेशी नहि पीबू। जेना कि हम ओकर बहिकिरनी होई आ ओ हमर मलिकाइन। हम कहलियैन्ह – देखु फेकनी माय अहाँक परिवारक सदस्य जकाँ बनि गेल अछि। अहाँ सब जतेक प्रेम ओकरा देलियैक सें ओकरा कतहु सँ नहि भेटलैक आ तें ओहो अहाँ के अपन बुझि इ सब बात कहैत अछि। सबेरे स्नान कएला सँ भोजन कयला सँ फायदा ककरा हेतैक! चाह बेशी पीयब तँ गैस बढ़त, नुकसान ककरा हेतैक, अहीं के ने। अहाँ के अपन लोक बुझैत अछि तखने ने इ बात कहलक अछि। अन्यथा दोसरक दुःख सुख सँ दोसर के की मतलब छैक। आ हम मने मन फेकनी मायक व्यवहार सँ अति प्रसन्न भेलहु।

ताबत हमरा भनक लागि गेल जे मुखियाक लेल हमरा गामक सीट महिलाक लेल आरक्षित कएल जा रहल अछि। हम सोचलहु जे किएक ने फेकनी मायके मुखिया बनाओल जाय। फेकनी माय बुधियारि तँ छले मुदा लिखब पढ़ब नहि अबैत रहैक। हम कोनो तरहे ओकरा पढ़बाक लेल तैयार कएलहु आ हमर कनियाँ ओकरा पढ़ाबए लगलीह। थोरबहि दिन मे ओकरा लिखए–पढ़ए आबि गेल। ताबत सरकार दिश सँ अधिसूचना जारी भ गेल आ चुनावक प्रक्रिया शुरू कएल गेल। सौंसे गामक

सामने इ समस्या भ गेल जे उम्मीदवार ककरा बनाओल जाय। कारण पुरूष मे तँ कतेक लोक छलाह मुदा महिला मे ककरहु किओ नजरि नहि अबैत छल। हम दू चारि व्यक्ति के फेकनी मायक विषय में कहलियैन्ह ओ लोकनि तैयार भ गेलाह आ हम एकर प्रचार –प्रसार करए लगलहु। एकर छवि सेहो स्वच्छ छल आ एकर झुकाव सेहो कोनो व्यक्ति विशेष जाति, समुदाय, दिश नहि छल, तें एकर मुखिया बनव गामक लेल कल्याणकारी होएत। करीब–करीब गामक अधिकांश लोक हमरा विचार सँ सहमत छलाह।

हम जखन इ गप्प फेकनी माय लग बजलहु तँ ओ एहि लेल तैयारे नहि होइत छल। बाजलि – बौआ हम अभागलि छी। ओना तँ एहि जोगरक हम छिहो नहि, मुदा हमरा के बोट देत हमरा देखिते लोकक दिन खराब भ जाइत छैक, आ वोट माँगए जेबैक तखन तँ जिबिते गारि देत।

हम कतेक बुझौलियैक – तखन तैयार भेल। ओकरा लऽ क अनुमंडल कार्यालय नामांकन करेबाक लेल गेलहु। नामांकनक पर्चा भरिक जखन कार्यालय सँ बाहर एलहु तँ देखैत छी जे करीब दू सए स्त्री पुरूष फेकनी मायक समर्थन मे नारा लगा रहल छथि। आब तँ फेकनी माय के सेहो पूर्ण विश्वास भ गेलैक जे गामक लोक सब ओकरा कतेक चाहैत अछि आ एहि सफलता पर फेकनी माय के आँखि मे खुशी सँ नोर आबि गेल।

ओतए सँ आबि हमरा लोकनि चुनावक प्रचार–प्रसार मे लागि गेलहु। दिन राति लोक सब सँ सम्पर्क करैत रहलहु आ

हमरा ओहिठाम तँ सदिखन मेला लगले रहैत छल। चुनाव भेल आ दू दिनक बाद वोटक गिनती सेहो भेल। फेकनी माय चुनाव जीति गेल आ गामक मुखिया बनि गेल।

मुखिया बनितहि फेकनी मायक दिन फिरि गेल। गाम मे पहिने जकाँ आदर पाबए लागल। सबसँ पहिने एकटा सभाक इन्तजाम कएलक आ ओहि सभा मे बाजलि अहाँ लोकनिक कृपा सँ हम अपना गामक मुखिया तँ बनि गेलहु मुदा हम एहि जोगरक नहि छी। हम गाम मे राम राज्यक स्थापना करए चाहैत छी। ककरहु पर अत्याचार नहि होएबाक चाही। ककरहु किओ सतावए नहि। सब केओ हँसी खुशी अपन जीवन निर्वाह करथि। गाम मे केओ भूखल पेट नहि रहए आ एकरा लेल अहाँ सबहक ओहिना मदैत चाही जेना चुनाव मे कएने रही। ग्यारह टा प्रबुद्ध लोकक समिति बनाओल गेल। फेकनी माय घोषणा कएलक जे एहि समिति केर जे निर्णय होएत हम सैह कार्य करब आओर एहि समिति के इहो अधिकार छैक जे हमरा गलती पर पर्दा नहि देत बल्कि ओकरा उजागर करत आ हम एकरा सहर्ष स्वीकार करब। पुनः ओहि समिति के सहयोग सँ कतेक राश उप समिति सेहो बनाओल गेल। नारी कल्याणक लेल सेहो समिति बनाओल गेल। गाम मे जतेक पढ़ल लिखल लोक बेरोजगार छलाह। हुनका सब के अनपढ़ लोकनि के शिक्षित करबाक भार देल गेल। कतेक उद्योग धंधा खुजि गेल। एक सालक भीतर गाम मे किओ बेरोजगार आ अनपढ़ नहि छल। फेकनी माय गाम मे राम राज्य आनि गाँधी जीक सपना के साकार कएलक।

कोढ़

समय जे नहि कराबए। राम भरोसे बाबूक ओहिठाम बड़ चहल–पहल छल। आई हुनक सुपुत्री चन्दाक विवाह कमलेश बाबू सँ भऽ रहल अछि। सब केओ विवाह आ बरियातीक स्वागतक तैयारी में लागल छथि। साम्येना लागि रहल अछि आ रंग–बिरंगक झालर सँ विवाह मंडप के सेहो सजाओल जा रहल अछि।

कमलेश बाबू आई0ए0एस0 केर प्रतियोगिता परीक्षा पास कएने छथि एखन हुनकर बहालीओ नहि भेल छन्हि। मुदा हुनक पिताजी राम भरोसे बाबू सँ तिलक में दस लाख टाका आ एक टा गाड़ी लेलन्हि आ तैखन कमलेशक विवाह करब स्वीकार कएलन्हि। बेचारे राम भरोसे बाबू कोनो तरहे जमीन बेचि तथा आन–आन सँ कर्जा लऽक तिलक केर सामान जुटा पओलन्हि। कारण जे बेटी के विवाह सब दिन नहि होइत अछि आ एकटा किंवदन्ती अछि जे माय–बापक श्राद्ध आ बेटी के विवाह मे जमीन बेचब वा कर्जा लेब कोनो खराब कार्य नहि थीक। जमाय सेहो पढ़ल लिखल आ सुन्नर छलथिन्ह। कमलेश आ चन्दाक जोड़ी बुझु जे राम–'सीताक जोड़ी जकाँ लागैत छल।

बरयाती केर ऐवा मे एक घंटा मात्र बिलंव छल। ओ सब आबि कए गामक पूर्व मे एकटा स्कूल पर डेरा देने छलाह। ताबत बरियाती पक्षक एक व्यक्ति एलाह आ राम भरोसे बाबूक हाथ में एकटा चिट्ठी थम्हाक चलि गेलाह। राम भरोसे बाबू के चिट्ठी

पढ़ितहि माथ घुमि गेलन्हि, ओ धराम दऽ खसि पड़लाह। चारू कात सँ लोक सब दौड़ल। हुनका मुँह पर पानिक छिच्चा देल गेल, पंखा हौकल गेल। तखन कतेक कालक बाद जाऽ क हुनका होश भेलन्हि। सब केओ पूछए लगलन्हि जे की भेल। मुदा हुनका मुँह सँ बकार नहि बहरायल, केवल हाथक इशारा सँ चिट्ठी देखौलन्हि। चिट्ठी मे कमलेशक पिता जे फिरहिस्त देने छलाह, लगभग दू लाख टाकाक छल आ ओहो विवाह सँ पूर्व चाही, नहि तँ विवाह रूकि सकैत अछि, बरियात बापस जा सकैत अछि। एतेक टाकाक व्यवस्था राम भरोसे एक घंटा मे के कहए एक सालो मे नहि कऽ सकैत छलाह। ओ कमलेशक पिताजी सँ बहुत विनती कएलन्हि, पायर पकड़लहि, माथक पाग हुनका पायर पर रखलन्हि, मुदा ओ टस सँ मस नहि भेलाह। ओ अपन माँग पर अड़ल रहलाह। अंततः बरिआत वापस चल गेल।

एहि घटना सँ चन्दाक माँ एवं बाबूजीक दिमाग पर बहुत असर भेलन्हि। हुनकर संतुलन बिगड़ि गेलन्हि। विक्षिप्त जकाँ करए लगलाह आ से देखि के चन्दा के सेहो बहुत पीड़ा होइत छलन्हि ओ मने मन निर्णय लेलन्हि जे किछु करक चाही। विवाह मे चंदाक मामा सेहो आयल छलाह जे दिल्ली मे कोनो सरकारी विभाग मे कार्य करैत छथि। चन्दा बी0ए0 पास कएने छलीह आ पढ़बा–लिखबा मे सेहो नीक रहथि। मुदा एखनहु समाज मे इएह अवधारणा अछि जे बेटी पढ़ि लिखिक की करत। ओकरा तँ चुल्हे फूकबाक छै ने आ ते चन्दा आगाँ नहि पढ़ि सकलीह।

एक दिन चन्दा अपना माँ सँ बजलीह – माँ जँ अहाँ के

कोनो कष्ट नहि हो तँ एक बात कहू – माँ बजलीह कऽहु – अहाँ सब हमर विवाहक चर्चा नहि करू। हमर इच्छा अछि जे कोनो प्रतियोगिताक तैयारी करी आ से एहिठाम सँ संभव नहि अछि। ते मामाक संगे दिल्ली जाए चाहैत छी। पहिने तँ चन्दाक माँ बहुत मना केलन्हि, लोक लाजक दृष्टान्त देलथिन्ह मुदा चंदाक जिद्द के आगु ओ चंदाक बात मानबाक लेल विवश भ गेलीह। चंदाक माँ सोचलन्हि जे एहिठाम तरह–तरह के लोकक ताना सुनऽ पड़ैत अछि, हम तँ बर्दास्त कए लेब, मुदा चंदा जँ बर्दास्त नहि क सकतीह तँ कोनो दोसरे बात नहि भ जाय। तें निके होएत जे चंदा एहिठाम सँ चल जेतीह।

चंदा अपन मामाक संग दिल्ली आबि गेलीह। दिल्ली मे चंदा प्रतियोगिताक तैयारी मे जुटि गेलीह आ एक सालक कठीन परीश्रम सँ आई0पी0एस0 केर प्रतियोगिता पास केलन्हि। हुनक पदस्थापन ए0एस0पी0 केर पद पर ओहि जिला मे भेल, जतए कमलेश पहिनहि सँ जिलाधिकारी के रूप मे कार्य करैत छलाह।

एक दिन कोनो राजनैतिक दल केर जुलूस आयल। करीब पाँच हजार लोकक भीड़ छल आ भीड़क रूप सेहो उग्र छल। जुलूस के कार्यक्रम सँ एस0पी0 साहेब सब सुरक्षा व्यवस्था करैत कतहु आवश्यक छापामारी मे निकलि गेलाह, आ अपन कार्यभार ए0एस0पी0 चंदा के देने गेलथिन्ह। भीड़क उग्र रूप देखि जिलाधिकारी घबड़ा गेलाह आ एस0पी0 कार्यालय मे फोन कएलन्हि। हालांकि सब व्यवस्था पूर्वहि सँ कएल छल मुदा पाँच हजार लोकक बीच एक सए सिपाही उँटक मुँह जीरक फोरन बुझाइत

छल आ इएह देखि जिलाधिकारी सेहो घबरा गेल छलाह। स्थिति एकदम बेकाबू रहए। टेलीफोन सुनितहि ए0एस0पी0 चंदा अपन सुरक्षा गार्डक संगे जिलाधिकारीक कार्यालय आबि गेलीह आ भीड़ के नियंत्रित करबाक असफल प्रयास करए लगलीह। ताबत कमलेशक ऊपर भीड़ सँ केओ एकटा ईंटाक अधबड़ चला देलकन्हि, आ हुनका कपार सँ छड़–छड़ शोणित बहए लागल। इ देखितहि चन्दा तुरंत लाठी चार्जक आदेश देलन्हि आ स्वयं कमलेश के अपना कन्हा पर उठा गाड़ी पर बैसौलन्हि। गाड़ी लऽ क अस्पताल पहुँचि गेलीह आ कमलेश के अस्पताल मे डाक्टर के सुपुर्द कए पुनः घटना स्थल पर आबि दनादन बेंत चलाबए लगलीह। हुनकर इ रूप देखि अन्य सुरक्षाकर्मी सेहो उत्साहित भ लाठी चलाबए लगलाह, आ पन्द्रह मिनट केर बाद ओहिठाम एको व्यक्ति नजरि नहि एलाह।

ओकर बाद चन्दा पुनः अस्पताल गेलीह। ताबत कमलेश के डॉक्टर घाव साफ कए पट्टी बॉन्हि देने छलथिन्ह। चन्दा कमलेश के गाड़ी पर बैसाक निवास स्थान पर ल गेलीह। ओहिठाम कमलेशक माय टा रहथि। आओर रहैत के। कमलेश एखन धरि विवाह नहि कएने रहथि। एहि क्रम मे यावत कमलेश ठीक नहि भेलाह ताबत चन्दा प्रतिदिन तीन–चारि बेरि हुनक हाल–चाल पूछबाक लेल पहुँच जाइत छलीह आ से कमलेश के तँ नीक लगिते रहन्हि, हुनका माय के सेहो नीक लगैत छलन्हि। चन्दाक रूप, गुण, आ स्वभाव सँ कमलेशक कोन कथा हुनकर माँ सेहो मुग्ध छलीह।

कमलेश आब नीक जकाँ ठीक भऽ गेल छलाह। चन्दा कमलेशके ठीक भेलाक बाद हुनका ओहिठाम आन–जान छोड़ि देने रहथि। ओ तँ मात्र औपचारिकता के निर्वाहक लेल अबैत जाइत छलीह। इ बात कमलेश के बड़ अखरैत छल मुदा करताह की। अकारण तँ बजाइयो नहि सकैत छथि। सरकारी अधिकारीक एक विशेष मर्यादा होइत अछि। तें कमलेश विवश छलाह। चन्दा सेहो अपना कार्य मे लागल रहैत छलीह। पैघ अधिकारी ओहिठाम बिना काजे किएक जेतीह। पता नहि ओ एकरा कोन रूप मे लेताह। मुदा चन्दाक उपस्थिति आओर घायल अवस्था मे हुनक सेवा कमलेशक मनक सूतल चोर के झकझोरि कए जगा देने छल। कमलेश के समय पर दवाई, समय पर ड्रेसिंग करब चन्दाक दिनचर्या बनि गेल छल। बुझाइत रहए जे ए0एस0पी0 चन्दा नहि नर्स चन्दा होथि। चन्दाक अनुपस्थिति सँ कमलेश उदास रहए लगलाह। से देखि कमलेशक माय के इ भान भ गेलैन्हि जे कमलेशक उदासीक कारण चन्दा छथि।

एकदिन कमलेशक माय कमलेश सँ पूछलन्हि जे बहुत दिन सँ चन्दा के नहि देखैत छियैन्ह। अहाँ सँ कोनो झगड़ा–तगड़ा तँ नहि भेल छन्हि। कमलेश बजलाह पुलीसक नौकरी छन्हि ने। पुलीसक नौकरी मे के कखन कतए रहत केओ नहि जनैत अछि। खेनाई–पिनाई सेहो छूटि जाइत अछि। चोरी, डकैती, दंगा–फसाद सब के देखए पड़ैत छैक। आ प्रशासन मे अनुशासन केर सेहो बड़ महत्व छैक। ते अकारण कतहु आएब–जाएब प्रशासनिक अधिकारी केर लेल उचित नहि अछि। मुदा माँ केर आग्रह

छलन्हि जे हम तँ हुनका सँ बात क सकैत छी। हमरा टेलीफोन नम्बर दिअ। इ बात कमलेश के सेहो नीक लगलन्हि। चन्दा केर कार्यालय मे टेलीफोन कएलन्हि। टेलीफोन पर चन्दा आ कमलेश के गप्प भेल आ तय भेल जे चंदा सात बजे संध्या काल कमलेशक डेरा पर औतीह। चन्दा अपन सब कार्य सम्पन्न करैत कमलेशक डेरा पर एलीह। हुनकर माय अति प्रसन्न होइत बजलीह – अहाँ इम्हर के रास्ता कोना बिसरि गेल रही। हम इ बात जनैत छी जे अहाँक कार्य बड़ जोखिम बला अछि। मुदा कहिओ–कहियो तँ अबैत रहू। हमहू तँ अहाँक मायेक बराबरि छी ने। इ बात चन्दा के हृदय के झकझोरि देने रहए। ओकर बाद चंदा दू–चारि दिन पर कहिओ काल आबिक कमलेशक माय के भेंट क लैत छलीह आ खूब गप्प सप्प करैत छलीह। एहि आन–जान सँ कमलेश सेहो प्रसन्न रहए लगलाह, आ धीरे–धीरे इ गप्प आगू बढ़ए लागल।

एकदिन कमलेश चन्दा लग विवाहक प्रस्ताव रखलन्हि। चन्दा निश्छल भावे बजलीह हम तँ विवाहक विचारे छोड़ि देने छी। कमलेश पूछलन्हि, से किएक। चंदा बजलीह हम छी कान्य आ कान्याक विवाह बिना तिलक के नहि भ सकैत अछि। मुदा हमर प्रतिज्ञा अछि जे हमरा विवाह मे तिलकक व्यवहार नहि हो आ जे केओ हमरा मुँह देखाई मे पचीस हजार टाका देताह, हुनके सँ विवाह करब। से बात तँ एहि युग मे संभव नहि अछि। एहि युग मे तँ बेटा के तिलक चढ़ैत अछि आ बेटी कतबहु गुणवती हो, ओ बोझ मानल जाइत अछि। ते हम निश्चय कएने छी जे विवाह

नहि करब। हम समाजक एहि अवधारणा के मेटेबाक लेल कृत संकल्प छी।

चन्दाक गप्प सुनिक कमलेश स्तब्ध रहि गेलाह। हुनका माथ पर जेना लागल जे एक सए हथौरी एके बेरि मारि देने होमए। डेरा गेला पर माँ के सब बात कहलथिन्ह। हुनका माँ के कनेक काल तँ चन्दा सँ अश्रद्धा भ गेलन्हि। जे एहन गुमानी कनियाँ के घर नहि लाबी सैह नीक। जे एखनहि एतेक ठेसी छैक तँ बाद मे की करत से नहि कहि। मुदा कमलेशक धैर्यक बान्ह तोड़िक बहि गेल। ओ माँ के बुझौलथिन्ह – माँ पहिल गप्प तँ इ अछि जे चन्दा जेना भऽ क हमरा हृदय मे रसि–बसि गेलीह अछि, हम हुनका बिना एको पल नहि रहि सकैत छी। दोसर गप्प बेटी बला जे तिलक दैत अछि से तँ बेटा बला के होइत अछि मुदा बेटा बला जे मुँह देखाई दैत अछि से तँ ओकरहि घर में रहल। ते एहि मे अहाँ के कोनो हर्ज नहि होएबाक चाही। एहि युग मे समाजक लेल इ एकटा नव आदर्श मानल जाएत। हम सब, सब, तरहे सामर्थ्यवान छी। हम सब जे किछु करब, समाजक लेल उदाहरण बनत आ सरकारी नियमक पालन सेहो होएत ते चन्दाक प्रस्ताव स्वीकार कएल जा सकैत अछि। कमलेशक माँ सेहो कमलेशक मर्माहत गप्प सुनिक चन्दाक प्रस्ताव मानि लेलन्हि। चन्दाक माय सँ गप्प भेल, पुनः चन्दाक माँ बाबूजी सँ गप्प भेल आ विवाहक दिन निश्चित भ गेल। जखन विवाहक अवसर पर कमलेशक बाबूजी आ चन्दाक बाबूजी के भेंट भेल, तखन दू साल पूर्वक सबटा दृश्य आँखिक सोझाँ घुमए लागल। कोना दस लाख

टाका आ गाड़ी लेलाक बादो दू लाखक समानक लेल बरियात वापस चल गेल छल। आई पचीस हजार उपर सँ मुँह देखाई देमए पड़ल अछि, तखन कमलेश आ चन्दाक विवाह भेल। इ सब समय केर खेल थिक। समय कखन ककरा सँ की कराओत से केओ नहि जनैत अछि। विवाहोपरान्त चन्दा कमलेश सँ मुँह देखाई मँगलन्हि। कमलेश हसैत बजलाह जँ नहि दी तँ। वादा खिलाफी धारा 420 वारंट ऑफ एरेस्ट, चंदा बजलीह। कमलेश हसैत–हसैत बजलाह। मैडम ए0एस0पी0 चंदा एतेक जुलुम जुनि करू। अपन मुँह देखाई लिअ आ इ कहि हुनका हाथ पर पचीस हजार टाका राखि देलन्हि। चन्दा केर माँ आ बाबूजी खुशीपूर्वक चन्दा के बिदा कएलन्हि। चंदा स्वयं अपन भाग्य रेखा के अपना कर्मयोग सँ बनौलन्हि। आ एहि सँ समाजक अन्य बालिका के प्रेरणा लेबाक चाही। तखने समाज सँ तिलक दहेज रूपी कोढ़ खतम भऽ सकैत अछिं।

चक्र-चालि

ओना तँ राजनीति देशक राजधानी दिल्ली मे होइत अछि, मुदा राजनीतिक स्थान पर तँ राजनीति होइत नहि अछि। ओकर स्थान तय अछि विधान सभा आ लोक सभा, मुदा ओहुठाम केवल धक्का–मुक्का होइत अछि। दसो दिन धरि सत्र नहि चलैत अछि। असली राजनीति तँ होइत अछि गामक चौक आ चौराहा पर। गाम–घरक राजनीति बड़ खराब होइत अछि। ओहिठाम राजनीति कम आ कूटनीति बेशी होइत अछि। राजनीति मे नेता केवल मंचहि पर एक दोसरक विरोध करैत छथि। मंच सँ उतरलाक बाद एक दोसरक संग व्यवहार मित्रवत भ जाइत अछि। जेना कचहरी मे वकील करैत अछि। एकेठाम वैसि क चाह पीयत, जलखै करत, मुदा जखन बहस करबाक लेल ठाढ़ होयत तँ लागत जे दूनूक बीच पुश्तैनी दुश्मनी आबि रहल हो।

गामक राजनीति ठीक ओकर विपरीत अछि। सामना–सामनी एक दोसरक बड़ाई करत आ पीठक पाछाँ खिधांसक पुल बना देत। ओना तँ गामक राजनीति मे केओ ककरहु नहि अछि, सब एक दोसर के टांग घिचबाक फिराक मे लागल रहैछ मुदा जँ केओ आगू बढ़ि रहल अछि तँ ओकर टांग घिचबा मे बाकी सब एक भ जाइत अछि। खासकऽ गाम–घर मे वर्चस्वक झगड़ा बेशी देखबा मे अबैत अछि। दबंगक परिभाषा छल – जे केओ ककरहु दुःख सुख मे सब तरहे मदति करबा लेल तैयार रहए, ककरहु

कोनो काज बेथुति नहि होमए दिए ओ दबंग व्यक्ति मानल जाइत छल, मदु एखन दबंगक परिभाषा बदलि गेल अछि। जे केओ दू–चारि टा खून पचौने होथि, ककरहु कौखन पिटि सकथि वा बेइज्जत क सकथि, ककरहु घर मे आगि लगा सकथि, ककरहु खेत पथार लुटबा सकथि आदि आदि....। पहिने जे समाज मे भाई–चारा छल, आई ओकरहु अभाव बुझना जाइत आछि। अहाँ लग जँ टाका अछि तँ सदिखन दू–चारि व्यक्ति आगाँ–पाछाँ करैत रहत आ अहूँक गिनती समाजक दबंग व्यक्ति मे होमए लागत।

एहि दबंगताक होड़ में हमरा पंचायत मे दू–दूटा सिनेमाघर खुजि गेल आ दूनू में प्रतियोगिता होमए लागल। ओना तँ एहि सिनेमाघर सँ पंचायतेक नुकसान भ रहल अछि। जकरा खएबोक उपाय नहि छैक, ओहो सिनेमा देखबे करत। एकर असरि विद्यार्थीक पढ़ाई पर सेहो परत। दूनू सिनेमा घरक एक दिनक टिकट बिक्री लगभग पाँच हजारक अछि। एहि तरहे मास मे डेढ़ लाख आ वर्ष में अठारह लाख रूपया पंचायत सँ दूहल जा रहल अछि। एहि धन राशि के जँ कोनो विद्यालय वा अस्पताल पर खर्च कएल जाइत तँ कते छात्रक जीवन बनि जाइत आ कतेक रोगीक उपचार होइत। एतेक राशि सँ अनेकों व्यक्ति के स्वरोजगार देल जा सकैत छल। पंचायतक उन्नति आ विकास कएल जा सकैत छल, मुदा इ देखबाक आ सोचबाक फुर्सति ककरा अछि। सिनेमा मालिक के सेहो कतेक फायदा भ रहल छैक से तँ नहि कहि सकैत छी मुदा एकटा बात देखबा मे अबैत अछि। जतबा जे

कमाइत अछि, एक दोसर के निचाँ देखेबा में खर्च क दैत अछि। मिला जुलाक गोनू घरहि। दोसर बात सिनेमा घर सँ गुण्डा गर्दी बढ़त, जे चैन सँ लोक रहैत छल नहि रहि सकत। समाजक जीवन शैली अशान्त आ कलहपूर्ण भ जायत एहि विषय पर समाजक प्रबुद्ध लोकनि के सोचक चाही, विचार करक चाही, चिन्तन करक चाही।

जे केओ प्रगतिशील विचार धाराक लोक गामक विकास आ समृद्धि लेल कोनो काज करए चाहैत अछि तँ ओकर विरोध में अधिक सँ अधिक लोक ठाढ़ भ जाइत अछि। ओ इ बात नहि बुझैत अछि आ ने बुझए चाहैत अछि जे एहि सँ की फायदा वा नुकसान अछि। मात्र समाजक दबंग व्यक्ति क इशारा पर विरोध ा करैत अछि। ओ बाजैत अछि जे इ नव रीति कतए सँ आयल। हम सब आई धरि इ बात नहि देखने छलहु। एहिठाम वएह भ सकैत अछि जे अद्यौ सँ भ आयल अछि। ठीक ओहिना जेना इनारक बेंग। जखन कि देश में नित दिन नव–नव तकनीक विकसित होइत अछि आ आदमी के नव बात जनबाक देखाबाक उत्सुकता होएबाक चाही। एकर एक कारण शिक्षाक अभाव सेहो अछि। एकटा शिक्षिते व्यक्ति इ बात बुझि सकैत अछि, समाज में परिवर्तन आनि सकैत अछि। एक समय छल जखन गामक लोक साइकिल देखबाक लेल उमरि पड़ैत छल मुदा आई मोटर साइकिल आ मोटर गाड़ीक भरमार लागल अछि। जाहि मंदिरक पुजारी चमार अछि कि ओतए सँ भगवान भागि गेल छथि। सब केओ तँ हुनके बनाओल छी। तखन एक दोसर मे भेद किएक।

एक बेरि हमरा गामक लोकक विचार नवाह रामायण करबाक भेल। पहिने तँ बहुत घेंघाउजि भेल। केओ बाजए होएबाक चाही, केओ नहि। जखन विचार भ गेल तँ चन्दाक बेरि मे सब केओ धीरे–धीरे ससरि गेलाह। इ प्रकरण चारि–पाँच वर्ष धरि चलैत रहल। अंततः स्व0 सिद्धनाथ रायजीक अगुआई मे वर्ष 1975 मे गामक विद्यार्थी आ प्रबुद्ध युवा वर्गक सहयोगे नवाह रामायण प्रारंभ भेल आ आई धरि अबाध रूपे चलि रहल अछि। धीरे–धीरे ग्रामीणक सेहो सहयोग भेटि रहल अछि। जाहि ठाम नवाह रामायण कहुना–कहुना कए शुरू भेल ओहिठाम आइ दुर्गा पूजा आ कालीपूजा सनक खर्चीला उत्सव हर्ष–उल्लासक संग भ रहल अछि। एकर इ प्रभाव भेल जे दुर्गापूजा मे गामक जवान आ बूढ़ सेहो दस दिन धरि रातिक घरे मे सुतथि। डायन के डरे घर सँ बाहर नहि होथि, मुदा आई हुनकर बच्चा सगर राति दुर्गा स्थान में सुतल रहैत छन्हि आ एकर हुनका कोनो फिकिर नहि रहैत छन्हि। एहि तरहि बैचारिक विकास सँ एकटा जे भय केर बाताबरण छल ओ खतम भ गेल। एकरा छोट–छिन उपलब्धि नहि कहल जा सकैछ।

नबाहक पाठकक लेल एक संध्याक भोजनक व्यवस्था कराओल गेल आ सेहो स्वेच्छा सँ। ओहि लेल ककरहु दबाव नहि देल गेल। जे दाता छलाह ओ तँ किछु नै बजलाह मुदा जे व्यक्ति नहि दैत छलाह, हुनका इ बात अखरि रहल छलन्हि। हुनका दबंगता पर चोट करैत छल आ एक अत्यन्त सुन्दर परम्परा के बंद करबा देलन्हि। ओहि सँ नवाह तँ नहि रूकल मुदा किछु

पाठकक अभाव अवश्य भ गेल। कारण गामक युवा वर्ग तँ नोकरी–चाकरी मे बाहर रहैत छथि, किछु बच्चा जे भोजक लोभे लागल रहैत छल, कम भ गेल।

कोनहु अनुष्ठानक इ नियम छैक जे अनुष्ठानक समाप्ति पर सब केओ बैसि क एक ठाम भोजन करथि। हमरा लोकनि शनैः शनै ओहि दिश बढ़ि रहल छलहु। प्रायः बगल केर गाम सब मे सेहो इ व्यवस्था अछि, मुदा हमरा गाम मे इ बात नहि होइत छल तँ कोना होइत। समाज जे चाहत सएह ने होएत। समाजक चक्रचालि लग सब के विवश होमए पड़ैत अछि।

वर्ष 1999 मे ग्रामीणक सहयोग सँ नवाह मंडप तैयार कराओल गेल, आ निर्णय भेल जे एहि वर्ष नवाह रामायण केर (पचीसम वर्ष) रजत जयन्ती मनाओल जाय। उद्घाटन परम पूज्य गुरूदेव स्व0 सूर्य नारायण दास (महंथ पूबारि स्थान) केर कर कमल सँ भेल। ओहि अवसर पर श्री कुलानन्द राय जी अपना अध्यक्षीय भाषण मे घोषणा कएलन्हि जे गामक सब बच्चाक मुंडन आ उपनयन एहि मंडप पर होएबाक चाही। हुनकर इ बिचार कतेक प्रगतिशील छल। समाज मे गरीब–अमीर सब तरहक लोक छथि। अमीर एहि अवसर पर खूब खर्च करैत छथि। आ गरीब नहि क पबैत अछि तँ ओकरा आत्म ग्लानि सेहो होइत छैक। एखन एकटा मड़वा बनेबा मे कम सँ कम एक हजार टाका लगैत अछि। जँ इ परम्परा शुरू भ जाइत तँ एकटा आदर्श सेहो होइत। समाजक अधिकांश लोकक इ इच्छा छैन्हि मुदा बिलाड़िक गरदनि मे घंटी बान्हत के।

संयोगवश इ घंटी बन्हबाक अवसर हमरा भेटल छल। हम तैयार छलहु मुदा समाजक चक्रचालिक कारणे सफल नहि भ सकलहु। इ हमरा जीवनक प्रथम असफलता छल, मुदा हम एखनहु एकरा प्रति आशावान छी। हम तँ अपना समाज सँ कतेको बेर अपमानित भेल छी। मुदा हमरा पर एहि अपमानक असरि प्रेरणाक रूप मे भेल। कारण हम बुझैत छी जे ओ अपमान समाजक नहि छल, बल्कि समाजक चक्रचालिक एक अंश छल। एहि चक्रचालिक सृजन केनिहार ओ लोक होइत छथि जे समाजक उन्नति नहि देखि सकैत छथि। हमरा समाज के ओहन व्यक्तित्व सँ बचक चाही।

जखन हृदय मे अति पीड़ा होइत अछि तँ मोन पड़ैत अछि तुलसीदासक शब्द

मोहि न कछु बांधे कर लाजा

किन्ह चहौं निज प्रभु कर काजा

आ एकरे संग सब विसरि जाइत छी।

स्वाभिमान

सुनै छी, कनियाँ बजलीह !

हम अकचकाइत उठलहु। तुरंते तँ आँखि लागल छल। 3 बजे राति मे पटना सँ आयले रही आ ओहिठाम कार्यालयक काज सँ भरि दिन एम्हर सँ ओम्हर करैत रहलहु। मन एकदम थाकल छल।देह हाथ सेहो टटाइत छल। अन्यमनस्क भावे पूछलियैन्ह की भेल। कनियाँ बजलीह – कनेक काल पहिनहि नेता जीक टेलीफोन आयल छल। अहीं के बजौने छथि। हम पुछबो केलियन्हि जे, की बात थिकैक तँ बजलाह जे मिसरजी के जल्दी पठा दिऔन्ह। हुनका गप्प सँ बुझायल जे किछु घबरायल छलाह।

हमर एकटा अभिन्न मित्र छथि कंचनजी। बड़ चलता–पुरजा लोक छथि आ ते हम सब हुनका नेताजी कहैत छियैन्ह आ हुनके टेलीफोन आयल छल। हमरा इ बुझवा मे नहि आयल जे नेताजी घबरायल किएक छलाह। आन दिन घंटो टेलीफोन पर गप्प करैत छलाह। मुदा आइ प्रतीक्षा किए नहि केलन्हि। मन मे अनेको प्रकारक आशंका उठए लागल। जखन कि फोन पर कनियाँ कहबो केलथिन्ह जे दू घंटा पहिनहि पटना सँ आयल छथि आ एखने आँखि लागल छैन्हि। कनियाँ के कहलियैन्ह जे जल्दी सँ किछु जलखैक इन्तजाम करू। किएक तँ राति मे ठीक सँ भोजनो नहि कएने छलहु आ जल्दी–जल्दी तैयार भ जलखै कएलाक बाद नेताजी ओहिठाम विदा भ गेलहु।

नेताजीक डेरा पर दस–बारह टा व्यक्ति पहिने सँ बैसल छलाह। ओहि मे किछु परिचित आ किछु अपरिचितो छलाह। मुदा सब केओ गुमसुम बैसल छलाह। केओ किछु बाजि नहि रहल छलाह। सबहक मुँह लटकल छल। हम इ सोचिते रही जे गप्प कोना आ कतए सँ शुरू कएल जाय। ताबत नेतेजी मौन तोड़लन्हि। बुझल कि ने। जकरे आशंका छल सैह भेल, नेता जी बजलाह। की भेल, हम पूछलियैन्हि। माधुरी नहि रहलीह। हम सन्न रहि गेलहु एक क्षणक लेल तँ बुझू जे हमरा पैरक निचाँ सँ जमीन ससरि गेल। पुनः अपना के सम्हारैत पुछलियैन्ह, की भेल छलन्हि, पटना जेबा सँ पूर्व तँ भेट भेले छलीह। कतेक बढ़िया सँ गप्प शप्प कएने छलीह।

नेताजी बजलाह – काल्हि पति–पत्नी मे किछु बकझक भेल रहनि आ ओ जहर खा लेलन्हि। एक घंटा पूर्व निशांत बाबू टेलीफोन पर खबरि केलन्हि। हमरा सोझां चलचित्र जकाँ माधुरीक पूर्व जीवन नाचए लागल। माधुरी देखबा–सुनबा मे अपूर्व सुन्दरी, शुशील आ अत्यन्त मृदुभाषी छलीह। कालेज मे व्याख्याता के पद पर काज करैत छलीह। हुनका व्याख्यान सँ छात्र लोकनि अत्यन्त प्रसन्न रहैत छलाह। निशांत बाबू एकदम हुनक प्रतिकूल छलथिन्ह। बाजब भूकब मे कोनो लैस नहि छलन्हि। बात–बात पर बमकि जायब हुनकर स्वभावे छलन्हि आ अपना के सब सँ पैघ स्वाभिमानी बुझैत छलाह। शुरू–शुरू मे तँ दूनू गोटेक बीच बड़ मधुर संबंध रहलन्हि मुदा एक धारक दू कछेर, कतेक काल एक संग रहि सकैत अछि आ सैह भेल। दूनू गोटेक बीच किछु

गलतफेहमी भ गेलन्हि। निशांत बाबू चाहथि जे माधुरी ककरहु सँ गप्प–शप्प नहि करथि आ से माधुरीक स्वभावक प्रतिकूल छल। एक पढ़ल लिखल लोक, कालेजक व्याख्याता, चंचला आ सरल छलहीन स्वाभाव कतेक काल कोठली मे बंद भ कऽ रहि सकैत अछि। आ निशांत बाबू सेहो अपना स्वाभिमान पर ठेस लगेबाक हेतु तैयार नहि छलाह। ते बीच–बीच मे दूनू बेकतीक बीच कहा सूनी होमए लगलन्हि आ बाद मे तँ .....

एक बेरि कोनो गलतफहमी के कारणे निशांत बाबू माधुरी के बहुत मारि मारने छलाह। जखन हमरा लोकनि के एहि बातक पता लागल तँ नेताजीक संगे गेल रही। माधुरी सँ सबटा हाल–चाल पूछलियैन्ह। ओ कनैत–कनैत अपना उद्‌वेग के रोकि नहि सकलीह आ निःसंकोच भऽ हमरा सबके अपन पीठ उघारि देखाबए लगलीह। सौसे पीठ दू दालिक फुटल छल आ चोटक स्थान पर कारी स्याह भ गेल छल। माधुरी तरपि उठलीह, हम एहि ठाम एको क्षण नहि रहि सकैत छी। हम कोनो गाय–महींस छी जे अनधुन डेंगा देब आ चुप–चाप सहैत रहब। कहुना क माधुरी के ढांढस दैत शांत करौलहु आ निशांत बाबू के बड़ फझैत केलियैन्ह। हमरहु सँ बेशी तँ नेताजी फझैत केलथिन्ह। सबटा उकटि पुकटि क राखि देलथिन्ह। मुदा निशांत बाबू पर कोनो प्रतिक्रिया क भाव नहि देखल। ओ अपना कृत्य पर मुस्करा रहल छलाह। निशांत बाबू बजलाह –

हमरा एकरा लेल कोनो पाश्चाताप नहि अछि। हम जे किछु कएलहु से हमरा उचिते नहि बल्कि आवश्यक बुझना गेल।

जाहि बात सँ हमरा स्वाभिमान पर ठेस लागत ओकरा हम कथमपि बर्दास्त नहि क सकैत छी। पुनः हम सब माधुरीये के बुझौलियैन्ह जे की करबै एकटा बताह भ जेतै तँ की सब बताह भऽ जाएत। हुनक सोच बड़ संकीर्ण छन्हि तें अहाँ सँ आग्रह जे हुनका कार्य क्षेत्र मे हस्तक्षेप नहि करियौन्ह। माधुरी बजलीह से कोना भ सकैत अछि। जखन लोक एक संगे आ एक ठाम रहत तँ मुँह सिबि के तँ नहिए ने रहत। ओना माधुरीक संगे इ पहिल घटना नहि छल। एहि सँ पूर्वो छोट–मोट कतेक घटना घटि चुकल छल मुदा इ घटना सब सँ पैध आ वीभत्स छल। माधुरीक पीठ देखला सँ हमरो सबहक हृदय दहलि उठल।

हमर ध्यान टुटल जखन नेताजी पूछलन्हि तखन आब कोना की हेतै। हम कहलियैन्ह नेताजी छोड़ु एहि बात के। जकर झंझट छैक से बुझत, हमरा सब के ओहि सँ कोन मतलब अछि। जेहन काज करैत अछि तेहन फल भोगए ने पड़तैक। जखन हम सब बुझैत छलियैक तँ स्वाभिमानक गप्प करैत छलं आब जाय दिऔक जखन दारोगा जीक डंटा लगतैक तखन सबटा स्वाभिमान मन पड़तैक।

नेताजी बजलाह मिसरजी एना भावुक नहि होउ, आगुक गप्प करू। नेताजी इ भावुकता नहि, यथार्थ अछि। इ व्यक्ति माधुरीक संग बहुत अन्याय कएने अछि ओकर दंड तँ ओकरा भेटक चाही। जँ हम जज रहितहु तँ ओकरा तुरंत फाँसी द दितहु।

नेताजी जी बजलाह – सुनु निशांतक जे क्रिया भेलैक अछि ओकर दण्ड तँ ओकरा जीवन भरि भेटतैक, भगवान कोनो दूर छथिन्ह मुदा एखन एहन करू जे जल्दी सँ लाश उठि जाई, नइ तँ लाशक दुर्गन्जन भ जेतैक आ बच्चो सभक तँ ध्यान रखिऔ।

हम सब निशांत बाबू ओहिठाम गेलहु। माधुरी लाल साड़ी सँ झाँपल छलीह। मुँह पर ओएह मुस्कान छल। देखला सँ बुझाइत छल जे निंन सँ सुतल होथि। बच्चा सब चारू कात बिलखि रहल छल। निशांत बाबूक चेहरा पर डरक भाव अवश्य छल मुदा कोनो पाश्चाताप नहि। हमरा लोकनि सब सँ पहिने बच्चा सब के नेताजी ओहिठाम पठबौलहु। किएक तँ एहि प्रक्रिया मे कतेक समय लागत आ ताबत बच्चा सब भुखले पियासल कोना रहैत। पुनः दारोगाजी ओहिठाम गेलहु। ओ हमर संबंधी मे सँ रहथि आ से बात नेताजी के सेहो बुझल छलन्हि आ तें ओ हमरा बजौने रहथि।

आउ ..... आउ मिसर जी ! आई कोना रास्ता बिसरि गेलहु। कतेक दिनक बाद भेट भेल अछि, दारोगा जी बजलाह – हम कहलियैन्ह – अहाँक ओहिठाम लोक सखें थोड़हि अबैत अछि। किछु परिस्थिति बस आयल छी। सब बात सुनलाक बाद दरोगाजी कूदि उठलाह। की बात करैत छी इ तँ साफ धारा 302 आ 307 के केश बनैत छैक। एहि मे तँ जमानेतो होएब कठिन छैक आ हमरो उपर तँ हाकिम छथि। जखन हमरा तलब करताह तँ हम की जबाव देबैक। दोसर बात जे ओहि व्यक्ति के हमहूँ

जनैत छी। ओ सीटल खच्चर लोक अछि। ओ अपना सोझाँ दोसर के मनुषे नहि बुझैत अछि। एक बेर एकटा बच्चा के नाम लिखेबाक लेल कालेज गेल रही। हमरा ततेक ने कानून पढ़ौलक जे हम ओही दिन सँ एहि फिराक मे रही, कि उँट कखन पहाड़क निचाँ आओत, से आबिये गेल। आ हमरो एहि सँ बढ़िया अवसर कतए भेटत ओकरा सीधा करबाक लेल। तेसर बात जे हम सब कानूनक रक्षक छी। जँ हमहीं कानूनक संग खिलबाड़ करब तँ लोक के न्याय कोनाक भेटत। तें एहि कार्य मे हमरा अपन दायित्वक निर्बाह करए देल जाउ।

हम बुझि गेलहु जे इ पुलिसिया भाषा छी। पुलीस ककरहु नहि होइत अछि। कंचन के सोझाँ संबंधक कोनो अस्तित्व नहि छैक आ बात बनैक बदला बिगड़ि रहल अछि।

हम नेताजी सँ आँखिक इशारा मे गप्प केलहु। नेताजी सेहो हमरा बिचार सँ सहमत छलाह। दारोगाजी के एकान्त मे लऽ गेलहु। दरोगाजी बजलाह – की चाहैत छी। हम कहलियैन्ह – दण्ड तँ दण्डे भेल चाहे ओ कारावासक हो वा आर्थिक। तँ किएक ने एकरा आर्थिक दण्ड मे परिणत कऽ देल जाय। दारोगाजी बजलाह – देखु लोक तँ ओ बड़ पाजी अछि। जकरा मुँहे सुनैत छी, सब सैह कहैत अछि। हमरा मोन मे तँ बहुत किछु छल मुदा अहाँ सबहक मुँह देखैत विवश छी। तखन एकटा गप्प आओर जे लाश के पोस्टमार्टम मे पहुँचाबए पड़त। हम कहलियैन्ह इ तँ ओएह भेल जे बेल सँ खसलहु तँ बबूर पर अटकलहु। दरोगाजी बजलाह, ओकर चिन्ता अहाँ नहि करू। कंचन लग सब के झुकए

पड़ैत छनि आ एहि सँ हमरो मदैत भेटत। पोस्टमार्टम के डॉक्टर सेहो अपने लोक छथि। जेहने चाहब तेहने रिपोर्ट बनबा लेब। मात्र औपचारिकता करबाक छैक।

दरोगाजी सँ सब बात भेलाक के बाद दू टा सिपाहीक संग हम सब निशांत बाबूक ओहिठाम गेलहु। एहिठाम एको व्यक्ति नहि रहथि। दू चारि टा जे स्त्रीगण रहथि ओहो पुलीस के देखितहि चलि गेलीह। निशांत बाबूक स्वभावक कारणे पहिनहु सँ पड़ोसी सब दूरे रहैत छलन्हि आ दोसर बात जे थाना पुलीसक पचरा मे के पड़ए। तहुँ लेल सब काते छलन्हि। हमहीं सब दू चारि व्यक्ति के बुझा सुझाक अनलहु आ सबटा काज सम्पन्न करौलहु।

आइयो निशांत बाबू ओहिना एकान्त वास कए रहल छथि। बाल बच्चा सब बाहरे रहैत छन्हि। किओ घुरि कऽ खोज खबरि नहि लैत छन्हि आ ओ अपना स्वाभिमान पर गर्व करैत गृहस्थीक गाड़ी एकसरे घिचि रहल छथि।

लूट-तंत्र

गाँधीक सपना – आजाद भारत – स्वाधीन भारत

हमर देश बहुत दिन धरि अंग्रेजक गुलाम रहल। अंग्रेजी शासन मे हमरा सब के केवल काज करबाक अधिकार छल। कोनो अन्यायक खिलाफ आबाज उठेबाक अधिकार नहि छल। अंग्रेजी हुकुमत केर प्रवृति सेहो दमनकारी छल। देश के आजाद करेबा मे कतेको व्यक्ति शहीद भ गेलाह। कतेक माय केर कोरा सून भ गेल। कतेको ललना बिधवा भ गेलीह, गाँधीक सपना छल, आजाद भारत। भारत मे रामराज्यक स्थापना। संघर्षक आ बलिदानक प्रतिफल भेटल। देश आजाद भेल। अपन संविधान बनल। कमजोर वर्गक उत्थान हेतु अनुच्छेद बनल। जनताक सरकार, जनता द्वारा आ जनताक लेल होएत।

मुदा आई की भ रहल अछि। चारू दिश लूट–खसोट आ आतंकवादक साम्राज्य अछि। छोट–छिन वस्तुक छीना–झपटी तँ सब दिने होइत छल। ओहि में आर वृद्धि भेल। लूट–पाट आ बलात्कार तँ दिन चर्ये बनि गेल अछि। मुदा आब तँ नागरिकक मौलिक अधिकार जे मतदानक अछि, ओकरहु लूटल जा रहल अछि। मत लुटिकऽ जन प्रतिनिधि विधान सभा आ लोक सभा मे जाइत छथि आ चुनाव आयोग किछु ने क पबैत अछि। जाहि जन प्रतिनिधि के संसद मे बैसि देशक विकास आ प्रगतिक लेल नव–नव कानून बनेबाक चाही ओ देश के लुटबा लेल वा कमजोर

करबाक लेल नव–नव तरकीब निकालि रहल अछि।

एक दिश चुनाव आयोग निष्पक्ष चुनावक लेल नव–नव तकनीक विकसित करैत अछि जेना विद्युत चालित वोटिंग मशीन, फोटो पहचान पत्र आदि। जाहि सँ सही मतदाता निर्भय पूर्वक अपन मताधिकारक प्रयोग क सकथि, मुदा एखनहु कमजोर वर्गक मतदाता अपना मताधिकार सँ बंचित रहि जाइत छथि। उम्मीदवार दबंग, बाहुबली आ अपराधी छवि के व्यक्ति अधिक रहैत अछि। जकर परिणाम होइत अछि जे सम्भ्रान्त मतदाता अपन जान–माल वा प्रतिष्ठा बचेबाक कारण मतदान नहि क पबैत छथि।

एहि कार्य मे सरकारी तंत्र सब सँ अधिक संलिप्त रहैत अछि। जिलाधिकारी सँ पर्यवेक्षक धरिक भूमिका संदिग्ध अछि। चुनाव पर सरकारी/गैर सरकारी अरबो रूपैया खर्च होइत अछि, मुदा परिणाम किछु ने बहराइत अछि। एहि धन राशि सँ देशक कतेक विकास भ सकैत छल।

सरकार के एकरा लेल कारगर कदम उठेबाक आवश्यकता अछि। जाहि सँ अधिक सँ अधिक मतदाता निर्भय पूर्वक अपन मताधिकारक प्रयोग क सकथि वा एकर विकल्प सोचबाक चाही, जाहि सँ देशक अरबो रूपैया बाँचि सकए।

हमरा देश मे जखन राज तंत्र छल। देश छोट–छोट राज्य मे विभक्त छल। जकर शासक परिवार वादी राजा होइत छलाह। अंग्रेज भारत मे व्यापार करबाक लेल आयल। पहिने तों ओ राजा

के दू भाय में झगड़ा करा कए बड़का सँ राज छीनि छोटका के दिआबैत छल मुदा जखन ओ देखलक जे हम एक सँ राज छीनि दोसर के दिआ सकैत छी तँ किएक ने स्वयं राज करी आ सएह केलक। एहि तरहें सम्पूर्ण भारत पर अंग्रेजक साम्राज्य भ गेल आ देश गुलाम बनि गेल।

ठीक ओहने आजुक जनतंत्रक हाल अछि। चुनाव मे नेतागण अपराधी सँ मिलि बूथ कब्जा कराबैत छलाह। जखन अपराधी देखलक जे हमरहि मदति सँ इ नेता बनैत अछि, तखन ओ स्वयं चुनावी अखारा मे उतरए लागल आ नेता बनैत रहल।

आई अधिकांश नेता अपराधी छवि केर छथि। जे बूथ लूटि कए संसद आ बिधान सभा सनक पवित्र स्थान पर बैसि जनताक लेल नहि, बल्कि अपना लेल कानून बनाबैत छथि। जकर स्थान जेल मे होएबाक चाही ओ देश में लचर–पचर कानून व्यवस्थाक कारणे विधान सभा वा संसद मे पहुँचि जाइत छथि। आब ओ दिन दूर नहि अछि, जखन एहि नेताक बहुमत लोक सभा वा विधान सभा मे होएत आ इ देश अण्डरवर्ल्डक गुलाम बनि जायत।

जाहि कानूनक तहत व्यक्ति घूस लैत पकड़ाइत अछि आ घूस दऽक छूटि जाइत अछि, ओहि कानून सँ सामान्य जनता के कतेक फायदा भ सकत, एकर कल्पना क सकैत छी।

सरकार जँ चाहे तँ एहन मुकदमाक निपटारा नया कानून बनाक अतिशीघ्र करबा सकैत अछि। एहनो देखबा मे अबैत अछि

जे साक्ष्य के अभाव में अपराधी, अपराध कएलाक बादो छुटि जाइत अछि। कारण ओकरा दहशत के आगाँ के माथ उठाओत। जँ ओकरा सँ निपटिओ जायब तँ बेलक खसल बबूर पर', पुलिसक परेशानी अलग सँ। एखन अपराधी आ पुलिसक बीच चोली–दामन केर संबंध अछि। एहना स्थिति में गुप्त रूपे जाँच कराओलाक बाद अपराधीक विरूद्ध न्यायालय मे आरोप पत्र प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि आ ओहि आधार पर सजा देवाक प्रावधान कएल जा सकैत अछि।

मानवाधिकारक दुरूपयोगक ई अर्थ कथमपि नहि होएबाक चाही जे केओ अपराध करैत रहए आ प्रशासन वा न्यायालय साक्ष्य केर अभाव मे ओकरा छोड़ैत रहए।

चुनाव मे कैदी के मतदानक अधिकार नहि देल गेल अछि, मुदा जे कैदी बिमारीक बहाना कए अस्पताल पहुँचि जाइत अछि ओ बेखटक चुनाव लड़ि सकैत अछि। वाह रे हमरा देशक संविधान आ कानून व्यवस्था। जाहि संविधान आ कानून व्यवस्था मे एहन प्रावधान अछि जे आरोप सिद्ध भेला पर अपराधी मानल जाइत अछि, तहन कोन कानून छल जकरा अन्तर्गत श्री लालू प्रसाद के मुख्यमंत्रीक पद छोड़बाक लेल विवश कएल गेल। हुनकहु अपराध तँ एखन धरि सिद्ध नहि भेल अछि। पाँच वर्ष मे 1826 दिन होइत अछि। जाहि मे 1825 दिन नेताजीक होइत अछि आ एक दिन जनताक। जाहि दिन हम अनुभव करैत छी जे हम सब स्वतंत्र भारत केर नागरिक छी आ हमरहि मतदान सँ सरकार बनत, मुदा एहि बूथ लुटेराक चक्कर मे ओहो एकटा दिन

सब सँ खराबे बीतैत अछि।

चुनाव मे जे एतेक खर्च होइत अछि, एतेक लोक मरैत अछि, समय केर बर्बादी होइत अछि। आठ दिन सँ दस दिन धरि सब कार्यालय बंद रहैत अछि। सेनाक जवानक तैनातगी होइत अछि। ओकरा बादो जखन बाहुवली बूथे लुटि क जितैत अछि तँ किएक ने नामांकन केर बाद सब उम्मीदवारक बीच कुस्ती कराकए निर्णय कराओल जाय। जे जीति जायत से ओहि क्षेत्रक नेता मानल जायत। एहि सँ आम जनताक परेशानी आ जान–माल पर कोनो खतरा नहि होएत आ देशक अरबो रूपया सेहो खर्च होएबा सँ बांचि जायत।

चुनाव मे नेता लोकनि अपन–अपन जाति के चिन्हैत छथि। एक जाति सँ दोसर जाति के झगड़ा कराबैत छथि। जखन कि सरकार मे गेला पर ओएह नेता जाति–पाति मे भेद करै बला के दंडित करबाक व्याख्यान दैत छथि। आई जँ देश में चुनावी प्रक्रिया बन्द भ जायत तँ जाति–पातिक झगड़ा स्वतः खतम भ जायत। साम्प्रदायिकताक कतहु नाम नहि रहि जायत।

चुनाव राष्ट्रीय पर्व मानल जाइत अछि। एहि मे सब नागरिक के मतदान करबाक अधिकार आ कर्त्तव्य अछि, मुदा वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य मे चुनाव देशक समक्ष, अहम् सवाल अछि। एहि पर सरकार, चुनाव आयोग आ उच्चतम न्यायालय के गंभीरतापूर्वक सोचबाक चाही अन्यथा जनता एकरा लोकतंत्र नहि लूट तंत्र कहत।

दण्ड

एकटा छलाह सोनू झा। ओ दू भाय छलाह। दोसरक नाम छल मोनू झा।

सोनू झा सरल चित्तक व्यक्ति छलाह। निरंतर पूजा पाठ मे लागत रहैत छलाह। घंटो भरि मंदिर मे जप करथि आ सदिखन दोसरक कल्याणक चर्चा करथि। सोनू झाक पत्नी सेहो धर्म परायणा छलथिन्ह। आनन्दपूर्वक दूनू बेकतिक समय कटि रहल छल। समाज मे सेहो हुनकर खूब नाम आ प्रतिष्ठा छलन्हि।

दोसर भाय मोनू झा एकदम सोनू झाक विपरीत छलाह। परम उद्दण्ड, बात–बात पर झगड़ा करब हुनकर दिनचर्या बनि गेल छल। मंदिरक स्थान पर मदिरालय सँ अधिक स्नेह छलन्हि। समय–समय पर वेश्यावृति सँ सेहो नहि चुकैत छलाह। हुनकर जीवन कलह सँ भरल छल आ पत्नीओं सँ सदिखन बिगारे रहैत छलन्हि। समाजक लोक सेहो हुनका सँ दूरे रहब उचित बुझैत छलाह।

एक दिन यजमानक ओहिठाम पूजा करेबाक छलन्हि। घर सँ यजमानक घरक दूरी विशेष छल तें अन्हरौखे विदा भेलाह। मेघ सँ झिसिर–झिसिर फुहार सेहो पड़ि रहल छल। बाट पिछराह भ गेल छल। सोनू झा देखि नहि सकलाह आ पिछड़ि गेलाह। यावत सम्हरथि पायर कोनो ईटा मे लागि गेलन्हि। कोनो तरहें

डाक्टर ओहिठाम पहुँचलाह डॉक्टर जाँच कएलाक बाद एक मासक दबाई देलकन्हि आ एक मास धरि चलबाक लेल मना केलकन्हि। आँगन एला पर पत्नी के सब बात कहलथिन्ह। पत्नी बहुत फझैत केलथिन्ह जे सब दिन पूजे पाठ करैत छी। तैयो भगवान सबटा दुःख अहींक लेल रखने छथि।

सोनू झा पत्नीक व्यंग्य सँ तिलमिलेला नहि, बल्कि धीरता पूर्वक पत्नी के बुझौलथिन्ह – देखू भगवान कखन केकरा संग कोन खेल खेलाइत छथि, इ बुझब बड़ कथिन अछि। तखन एक बात अवश्य अछि जे ओ जे किछु करैत छथि, तकर परिणाम नीके होइत अछि। भलेहि ओहि काल मे आदमी के खराबे किएक ने लगैत होई। हुनकर माया बड़ प्रबल अछि। ओकर पार ब्रह्मो नहि पाबि सकलाह। हम सब तँ मनुक्खे छी। तें भगवान पर कखनहु दोषारोपण नहि करक चाही।

एहिपर एकटा आओर प्रसंग अछि। एकटा राजा छलाह। ओ शिकार खेलबाक तैयारी कए रहल छलाह। संयोगवश तलबार साफ करबा मे तलबार हुनका आंगुर मे लागि गेल आ आंगुर कटि गेल। सब दरबारी एहि दृश्य पर अफसोस करए लागल। ओहि दरबार मे एकटा पंडित सेहो छलाह। राजा पंडित के पूछलथिन्ह – जे यात्राकाल मे इ अपशकुन किएक भेल। पंडितजी बजलाह – भगवान जे करैत छथि से नीके करैत छथि। भ सकैत अछि जे एहि मे अहाँक कल्याणे छिपल हो। दरबारी लोकनि सेहो राजाक समर्थन मे पंडितक विरोधी भ गेलाह। पंडितजी के राज्य सँ निकालि देल गेल।

संयोगवश एक दिन राजा शिकार करबाक लेल विदा भेलाह। बाट मे घनघोर ज़ंगल छल। जंगलक बीच राति भ गेलाक कारणे राजा बाट बिसरि गेलाह। सब सिपाही एम्हर–ओम्हर चल गेल। राजा एकसरे बौआ–टौआ क एक मंदिर में शरण लेलन्हि। राति बहुत भ गेल छल आ राजा सेहो दिन भरिक थाकल छलाह, निन पड़ि गेलाह। मंदिर बीच जंगल मे छल। चोर जखन चोरी करबाक लेल जाइत छल, ओहि मंदिर पर देवी के प्रणाम करैत कबुला पाती क जाइत छल आ चोरी कएलाक बाद पुनः ओहिठाम चढ़ाबा चढ़ाकए अपन घर जाइत छल। ओहि दिन ओकर कबुला नर बलि छल। चोर के चोरी मे बहुत रास धन भेटलैक आ मंदिर पर अबितहि आदमी सेहो भेटि गेलैक। ओ सब अत्यन्त प्रसन्न भेल। आब तँ नर बलि लेल आदमी तकबाक कोनो प्रयोजन नहि अछि। ओ सब राजा के पकड़ि बलि देबाक लेल देवीक सोझाँ ल गेल। राजा ओहिठाम एकसरे छलाह आ ओ सब चारि टा छल ते राजा विवश छलाह। जखन हुनका बलि देबाक लेल स्नान कराओल गेल, तँ देखलक जे हाथक एकटा आंगुर कटल अछि। इ देखि चोर सब कहलक जे एकर तँ अंग–भंग अछि। एकरा बलि देव उचित नहि। ओ सब दोसर मनुक्ख तकबा मे लागि गेल। एहि तरहें राजाक प्राण बाँचि गेल। राजा मन मे सोचए लागल, जँ आई आंगुर कटल नहि रहैत तँ गरदनि कटि जाइत। पंडित जी ठीके बाजल छलाह, भगवान जे करैत छथि से नीके करैत छथि। हम बड़ अनुचित कएलहु जे पंडित के राज्य सँ निकालि देलहु।

प्रातः काल राजा जंगल सँ अपना राजभवन में एलाह। सेनापति के बजौलन्हि आ ओहि पंडित के ताकि अनबाक लेल आदेश देलन्हि। चारू दिश सेना के दौड़ाओल गेल। पंडितजी सेनाक संग थर–थर काँपैत राजाक सम्मुख उपस्थित भेलाह। पंडितजी के बुझवा में आयल जे हमरा कारण राजा के कोनो पैघ नुकसान भेल होएतन्हि, ते हमरा दण्ड देबाक लेल सेना सँ तकबाओल गेल अछि। अवश्य आइ प्राणदंड भेटत, मुदा राजा हुनकर अत्यधिक सम्मान कएल आ बहुत वस्तु उपहार मे सेहो देलन्हि। पूरा दरवार पंडितक सम्मान पर आश्चर्यचकित छल। तखन राजा जंगल केर सब वृतान्त सुनौलन्हि।

ओम्हर मोनू झा शराबक नशा मे मस्त वेश्यालय सँ अबैत छलाह। नशा मे असली बाट छोड़ि एक पेड़िया बाट पकड़ि लेलनि। किछु दूर चललाक बाद ठेस लागि गेलन्हि आ खसि पड़लाह। जाहि वस्तु सँ ठेस लागल छलन्हि ओकरा उखारए लगलाह तँ एक टा घैला निकलल। ओकरा नेने आंगन पहुँचलाह आ कनियाँ के हाथ मे देलथिन्ह। कनियाँ इ बुझि कए जे इ तँ शराबी छथि, शराब नशा मे जे भेटैत छन्हि, उठौने अबैत छथि, घैला के तमसाक आंगनक एक कोन मे फेकि देलन्हि। घैला फूटि गेल आ ओहि मे स्वर्णमुद्रा चमकए लागल इ देखि मोनू झाक कनियाँ सबटा मुद्रा के उठाक घर मे रखलन्हि आ खुशी सँ मोनू झाक आव–भगत करए लगलीह।

जखन इ बात सोनू झाक कनियाँ सुनलैन्ह तँ ओ बड़ आश्चर्यचकित भेलीह आ सोनू झा के पूछलथिन्ह जे कहु तँ इ

कोना भेलैक ?

सोनू झा पुछलथिन्ह – की भेलैक ?

पत्नी बजलीह – अहाँ दिन राति पूजा–पाठ करैत छी, सदिखन सबकेर नीके सोचैत छी, कौखन ककरहु अधलाह नहि करैत छी, तँ अहाँक पैर टुटि गेल आ मोनू झा अहींक सहोदर दिन राति सबटा अधलाहे काज करैत अछि, तँ ओकरा असर्फीक घैल भेटलैक। अहाँ सँ तँ ओएह ने नीक।

सोनू झा पंडित तँ छलाहे। टिपनि देखबाक ग्यान सेहो छलन्हिये। दूनू भायक टिपनि देखलन्हि। सबटा जोड़ घटाव केलाक बाद कनियाँ के कहलथिन्ह – सुनु ओहि दिन जाहि दिन हमर पैर टुटल छल, हमरा राशि मे मृत्यु दंड छल मुदा भगवानक कृपा सँ केवल पैर टुटिक रहि गेल। एकरा कोनो दण्ड नहि, बल्कि भगवानक कृपा बुझू आ मोनू के ओहि दिन राज–योग छल मुदा ओकर पापक कारण ओ योग क्षीण भ गेलैक आ मात्र किछु असर्फी भेटि गेलैक। ओ जँ धर्म परायण रहैत आ नीक आचरण राखैत तँ ओकरा आओर धन भेटितैक। इ बात सुनि सोनू झाक पत्नी संतोषक सांस लैत, भगवानक लीला के प्रणाम कएलहि।

उनटा चालि

एकटा पंडितजी छलाह। प्रकांड विद्वान आ कर्मकाण्डी सेहो रहथि। पंडित जी परम गरीब छलाह। जीविकाक आधार मात्र यजमानिका छलन्हि। यजमानिका सँ जे किछु प्राप्त भेल, ओहि सँ गुजर–बसर करैत छलाह। पत्नी सँ बात बिचार मे छतीसेक संबंध रहैत छलन्हि। जँ पंडितजी बाजथि जे आई पूर्व दिशा मे जेबाक अछि तँ पंडिताइन बाजथि नहि, आई पश्चिम दिशा मे जेबाक अछि। पंडित जी बाजथि जे अमुक काज करब आवश्यक बुझना जाइत अछि, तँ पंडिताइन बाजथि, अमुक काज करब कोनो आवश्यक नहि अछि। मिला जुला क जे बात पंडित जी बाजथि, पंडिताइन ओकरा काटि देथि आ ओकर उनटा काज करथि। जँ पंडितजी अपना बात पर जोर देबाक प्रयास करथि तँ पंडिताइन बबाल मचा देथि आ पंडितजी बेचारे इज्जत–प्रतिष्ठाक डरे डुग्कर बात मानि लेथि।

एक दिन पंडितजीक दू टा मित्र एलाह। मित्र परम अभिन्न छलथिन्ह ते हुनक स्वागत सत्कार आवश्यक छल, मुदा पंडिताइन बिमारीक बहाना बनाक सूति रहलीह। बेचारे पंडितजी बड़ा पेशमपेश मे पड़ि गेलाह। अन्ततः यजमानिका सँ आनल चूरा दही ओहि मित्र के भोजन कराओल आ अपने बिना किछु खएनहि सूति रहलाह।

किछु दिनक बाद पंडिताइनक नैहर सँ चारि पाँच गोटे पहुँचलाह। हुनका कतहु अन्यत्र जेबाक छलन्हि। ओ सब पंडितजीक

स्थिति सँ अवगत छलाह, मुदा राति अधिक भ गेल छल आ वर्षा सेहो भ रहल छल ते ओ लोकनि रात्रि विश्रामक लेल पंडितजी ओहिठाम पहुँलाह। पंडितजी सोच मे पड़ि गेला,ह कारण पंडिताइन पहिने सँ दुखिताह छलथिन्ह। पंडित जी किछु निर्णय लेथि, ताबत पंडिताइन फुरफुराक उठलीह आ सब सँ नैहर के हाल–चाल पूछए लगलीह। हाल–चाल पूछलाक बाद पंडित जी के फरमाइस भेल जे अमुक–अमुक सामग्री दोकान सँ आनि दिअ। पंडितजी छत्ता लेलनि आ वर्षे मे दोकान जा कऽ सब सामग्री आनल आ पंडिताइन भोजनक विन्यास मे लागि गेलीह। पंडितजी के बड़ आश्चर्य भेलनि जे हमर दू टा मित्र एलाह तँ हिनकर मन खराब भ गेलन्हि, मुदा आई नैहर केर एतेक लोक आयल छथिन्ह तँ दुखित रहितहु कतेक फुर्ती सँ काज क रहल छथि। स्त्रीगणक इ स्वभाव अछि जे सासुरक लोक के ऐला पर नौ मन पानि पड़ि जाइत अछि आ नैहरक लोक के ऐला पर दुखिताह रहितहु प्रफल्लित भ उठैत अछि। तें एकरा लेल केवल पंडिताइन के दोषी मानब उचित नहि।

एक बेरि पंडितजी के भातिज केर उपनयन छल। उपनयन मे आचार्य सेहो पंडिते जी छलाह। अन्य व्यवस्थाक देख–रेख के भार सेहो पंडिते जी पर छल। उपनयन सँ एक दिन पूर्व सब केओ कु.मक व्यवस्था मे लागल छल। ताबत पंडिताइन क भातिज आबि गेल। ओकरा फरीक मे ककरहु बेटीक विवाह छल। पंडिताइन नैहर जेबाक जिद ठानि देलन्हि। पंडितजी बहुत बुझौलथिन्ह जे जखन हमरा घरे मे काज उपस्थित अछि तँ अन्यत्र कोना जायब। एहि सँ समाज मे बदनामी सेहो होएत आ

लोक की कहत। पंडिताइन आई धरि जखन पंडितजीक कोनो बात नहि मानैत रहलीह तँ इ बात कोना मानि लेतीह। हुनका पर एहि बातक कोनो असरि नहि भेल। ओ भातिजक संग नैहर चल गेलीह। पंडितजी अथक प्रयास कएलाक बादो हुनका रोकि नहि सकलाह।

एक दिन पंडिताइनक एकटा बहिनपा पाँच सए टाका मंगलन्हि। पंडिताइन तुरंत पंडित जी सँ फरमा देलनि जे पाँच सए टाका दिअऽ। पंडितजी लग टाका नहि छल। औ टाका देवा मे असमर्थता व्यक्त केलनि। एहि बात पर पंडिताइन एकदम भभकि गेलीह। अहाँ लग हमर मान आ प्रतिष्ठाक कोनो मोल नहि अछि। हमर बहिनपा कतेक आश लगाक हमरा लग आयल अछि आ हम ओकरा कोना निरास क दियैक। पंडितजी बुझैत छलाह जे इ टाका आपस नहि होएत। टाका देव गोबर मे घी ढारब होएत। किएक तँ हुनका संगे पंडितजीक इ प्रथम लेन–देन नहि छल। एहन कतेको बेर भ चुकल छल मुदा पंडिताइन मानथि, तखन ने।

पंडित जी हुनका बहिनपा के पूछलिथन्ह, एखन अहाँ के टाकाक कोन प्रयोजन अछि। बहिनपा बजलीह, आई बौआक जन्म दिन थिकैक ने,, ते किछु व्यवस्था करबाक अछि। पंडितजी बजलाह, जखन टाका नहि अछि तखन पैच उधार ल कऽ इ आयोजन किएक करैत छी। बहिनपा बजलीह, हम अहाँक ओहिठाम भीख माँगए नहि आयल छी जे अपने उपदेश द रहल छी। एखन हाथ खाली अछि। जखन टाका आबि जायत तँ आपस कए देब। पंडितजी बजलाह, टाका तँ हमरहु लग नहि अछि। बहिनपा

बजलीह, तखन हमरा पंडिताइन किएक बजौलन्हि, टाकाक कोन कमी छैक, जकरे सँ मँगबै सएह देत। पंडितजी उत्तर सुनि हतप्रभ भऽ गेलाह, मुदा पंडिताइनक प्रतिष्ठा आ घरक उथल–पुथल के ध्यान राखि कोनो व्यवस्था कए हुनका टाका देलथिन्ह। करीब दस वर्ष बीति गेल मुदा ओ टाका एखन धरि पंडितजी के आपस नहि आयल।

एक दिन गंगा दशहराक अवसर पर पंडिताइन स्नान करए बरारी घाट गेलीह। पंडितजी बहुत मना कएने छलथिन्ह जे एहि भीड़ मे नहि जाउ मुदा पंडिताइन बैंह करतीह जे पंडितजीक विचार नहि होएतन्हि। टोल परोसक सेहो बहुत लोक छल। संयोगवश पंडिताइनक पायर पिछड़ि गेल आ ओ अथाह जल मे चल गेलीह। यावत लोक सब दौड़ल, पंडिताइन जल समाधि ल नेने छलीह। जखन पंडित जी इ बात सुनलनि तँ ओ पंडिताइन के तकबाक लेल सुल्तानगंज पहुँचलाह आ नाविक सब के जाल सँ पंडिताइन के ताकए लेल कहलन्हि। अथक प्रयासक वादो पंडिताइनक लाश नहि भेटल। तखन एक व्यक्ति पंडित जी सँ पूछलन्हि, पंडितजी पंडिताइन कोन घाट पर स्नान करए गेल छलीह। पंडितजी बजलाह, बरारीघाट। ओ व्यक्ति बाजल, अहाँ केहन बुरि छी औ जखन बरारी घाट मे डूबलीह तखन तँ ओ भासिक कहलगाँव दिश गेल हेतीह, आ अहाँ उनटा सुलतानगंज मे ताकि रहल छियैन्ह। पंडितजी बजलाह, अहाँ की बुझबै, ओ जीवन भरि हमरा संगे रहली। हुनकर सबटा चालि–ढालि हम ने बुझैत छी। जखन भरि जीवन ओ उनटे चालि चललीह तँ आइ मरैत काल सुनटा चालि कोना चलतीह।

घोड़ीक अण्डा

एकटा अगत्ती छौड़ा छल आ नाम छल मटरूवा। मटरूवाक शैतानी सँ गाम टोलक लोक बड़ परेशान छल। कतेको बेर ओ मारि सेहो खएने छल, मुदा ओहो आदत सँ लाचार छल। अपन बैन नहि छोड़ैत छल। ओहि गाम मे एकटा बूढ़ स्त्री छल। ओकरा सब केओ बुढ़िये कहैत छल, आ एकरा लेल ओकरा कोनो तकलीफ नहि होइत छल। ओहि बुढ़िया के मटरूवा सब सँ अधिक परेशान करैत छल। बुढ़ियाक घरो मे दोसर तँ केओ छल नहि। मटरूवाक शिकायतो जँ करत तँ ककरा सँ करत। तें कहुनाक मटरूवाक शैतानी सहि जाइत छल।

एक दिन मटरूवा बुढ़ियाक आंगन गेल। ओकरा आंगन के चार पर बहुत कुम्हर फरल छल। कुम्हर देखिक मटरूवा के बुढ़िया सँ कुम्हर लेबाक इच्छा भेलैक। ओ अनठाक पूछलक – गे बुढ़िया, (कुम्हर दिश इशारा करैत) इ की छिऔ ! बुढ़िया ओकर मनक भाव बूझि गेल। बुढ़ियाक लेल इ कोनो नव बात नहि छल। ओ कतेको बेरि बुढ़िया सँ कोनो ने कोनो समान मांगि क ल जाइत छल। बुढ़िया कतबहु बहाना करैत छल, मुदा मटरूवा लग कोनो बहाना नहि चलैत छल। तैयो ओ पुनः बहाना बनौलक जे कहुना इ जान छोड़ि दिए। इ घोड़ीक अण्डा छियैक। मटरूवा बाजल–तखन तँ एकटा अण्डा हमरा द दे। हमरा घोड़ा पोसबाक बड़ सख होइत अछि। बुढ़िया बाजल, जखन एहि

अण्डा सँ घोड़ा बहराएत, तखन ल जइहें। मुदा मटरूवा तँ पुरान खेलाड़ छल ओ बुढ़िया के तंग क देलक आ एकटा कुम्हर लऽ क अपना आंगन चल आयल। मटरूवा ओकर तरकारी बनाक खा गेल। काँच कुम्हर मे जँ तीसी द क तरकारी बनाओल जाइत अछि तँ ओकर स्वाद (खटरस) बड़ सुन्नर लगैत अछि आ पाकि गेलाक बाद ओकर कुम्हरौरी तँ अपूर्व होइतहि अछि।

किछु दिनक बाद ओहि गाम मे एकटा व्यापारी आयल जे वर्तन बेचैत छल। ओकरा संग मे दू–तीन टा घोड़ा–घोड़ी छल, जाहि पर तरह–तरह केर बर्तन लादल छल आ ओकरा संगे एकटा घोड़ीक बच्चा सेहो छल। व्यापारी जखन बर्त्तन बेचबाक लेल एक आंगन सँ दोसर आंगन बुलैत छल तँ ओहि घोड़ा–घोड़ी के छान लगाक चरबाक लेल छोड़ि दैत छल आ साँझ मे हाँकिक डेरा पर ल जाइत छल। एहि बीच एक दिन मटरूबाक नजरि ओहि घोड़ीक बच्चा पर पड़ि गेल। शरारती तँ ओ छले। ओकरा बुढ़ियाक अण्डा बला बात मन पड़ि गेलैक। ओ घोड़ीक बच्चा के पकड़ि अपना आंगन ल गेल। आ नुका क बाँन्हि देलक। व्यापारी जखन साँझ मे बर्त्तन बेचिक आयल तँ घोड़ा–घोड़ी तँ छल, मुदा ओकर बच्चा नदारत छल। ओ घोड़ीक बच्चा ताकए लागल। तीन चारि दिनक बाद पता लागल जे मटरूवा घोड़ीक बच्चा बन्हने अछि। व्यापारी मटरूवाक ओहिठाम पहुँचल आ बहुत तरहे अनुनय–विनय कएलक, किछु लोभो देखेलक मुदा मटरूवा ओकरा घोड़ीक बच्चा नहि देलक। उनटे व्यापारी के गारि फज्जहति सेहो देमए लागल। मटरूवा बाजल जे इ घोड़ीक बच्चा हमर

अछि। जँ एम्हर तकबऽ तँ आँखि फोड़ि देबहु। व्यापारी बड़ा खिन्न मने मटरूवाक आंगन सँ आपस चल आयल, आ सोचए लागल जे कोन उपाय कएल जाय, जाहि सँ घोड़ीक बच्चा भेटि सकए। अंत मे पंच बजाओल गेल। मटरूवा सँ पूछल गेल, तों व्यापारी के घोड़ीक बच्चा किएक ने दैत छही। मटरूवा बाज़ल इ तँ हमर घोड़ी थीक। पंच बजलाह तों कतए सँ किनि अनने छेंऽ तोरा लग मे एकर की सबूत छौक। मटरूवा बाजल हम बुढ़िया सँ घोड़ीक अण्डा माँगि क अनने रही, ताहि सँ इ बच्चा भेल। पंच सब अबाक रहि गेल जे आइ धरि घोड़ीक अण्डा तँ ने देखल आ ने सुनल अछि। मुदा मटरूवाक शरारत सँ सब केओ परिचित छल। बुढ़िया के बजाओल गेल। बुढ़िया अपना झंझट सँ बचैक लेल बाजि देलक जे हम मटरूवा के घोड़ीक अण्डा देने छलियैक। इ बात सुनि पंच सब आरो चकित भ गेल आ आपस मे काना–फूसी करए लागल। ओकर बाद बुढ़िया सँ पूछलक, बुढ़िया तों जे अण्डा मटरूवा के दने छले, से अण्डा तोरा लग आर छौक। बुढ़िया बाजल जी सरकार। पंच क कहला पर बुढ़िया घर सँ एकटा कुम्हर उठाक अनलक, बाजल सरकार हम एहने अंडा मटरूवा के देने छलियैक। पंच पुछलक, की रौ मटरूवा, बुढ़िया तँ हमरहि पक्षक गप्प क रहल अछि, खुश होइत बाजल जी सरकार। मटरूवा के जबाव सुनि पंच सब राहत के सांस लेलनि। मटरूवा गछिक पंचक काज आसान कए देलक। जँ ओ नहि गछैत तँ पंचैती पेचीदा भ सकैत छल। इ पंच सभक प्रथम अवसर नहि छल, मुदा इ पंचैती बड़ जटिल छल। बाहरक व्यापारी क बात छल। जँ ओकरा संगे उचित पंचैती नहि होइत

तँ गामक नाम परोपट्टा मे बदनाम भ जेबाक अंदेशा छल। दोसर बात जे एहि तरहक बदनामी भेलाक बाद फेर कोनहु व्यपारी गाम मे किछु बेचबाक लेल नहि अबैत।

पंचैतीक निर्णय सुनाओल गेल –

इ घोड़ीक अण्डा नहि थीक। घोड़ी कतहु अण्डा दैत अछि। ई तँ कुम्हर थीक आ बुढ़िया मटरूवाक शरारत सँ बचबाक लेल वा मटरूवा सँ पिण्ड छोड़ैबाक लेल एहि कुम्हर के घोड़ीक अण्डा बनौलक। जकर लाभ मटरूवा लेबए चाहैत छल। मटरूवाक आँगन मे जे घोड़ीक बच्चा बाँन्हल अछि ओ मटरूवाक नहि, व्यापारीक थीक। मटरूवा के आदेश देल जाइत अछि जे ओ घोड़ीक बच्चा व्यापरी के सुपुर्द करए, संगहि एहि धोखा–धड़ीक लेल मटरूवा के पचास रूपया जुर्माना कएल जाइत अछि।

शेरक आतंक

एकटा बहुत पैघ आ सघन जंगल छल। ओहि मे बिबिध प्रकारक जंगली जानवर सब रहैत छल। जाहि मे प्रमुख जानवर छल, शेर, चीता, बाघ, हाथी, ऊँट, नीलगाय, गीदड़, खरगोश, सुगर, भालू आदि। ओहि जंगल मे एकटा दुबर–पातर गीदड़ सेहो छल। ओ गीदड़ बहुत दुष्ट आ महत्वाकांक्षी प्रवृत्तिक छल। जाहि कारणें ओकरा कोनहु जानवर सँ पटैत नहि छल। अन्य जानवरक कोन गप्प, स्वयं ओकरा जातिक गीदड़ो सब ओकरा सँ मेल नहि राखैत छल। ओकर दुष्ट प्रवृति सँ सब जानवर परेशान छल। सब जानवरक बीच ओ झूठ–फूसि बाजि कए झगड़ा लगा दैत छल आ अपने कात मे बैसि झगड़ाक आनन्द लैत छल। बाद मे जखन इ भेद खुजैत छल तँ ओ दूनू जानवर मिलि एकर पुरकस पिटाई करैत छल। आ तें कोनो जानवर ओकरा अपना लग रहए नहि दैत छल। बेचारा गीदड़ अपना जीवन सँ दुखी भ एकसँरहि एम्हर–ओम्हर बौआइत रहैत छल।

एकदिन बौआइत–बौआइत ओ एकटा आश्रम मे पहुँचि गेल। ओ आश्रम सेहो जंगलेक एक भाग मे छल, मुदा ओहिठामक बातावरण अत्यन्त रमणीक आ शान्त छल। चारू कात रंग–विरंगक फूल आ फल सँ ओहि स्थानक शोभा आर मनोरम लागि रहल छल। ओहिठाम सेहो किछु चिरई–चुनमुनी आ छोट–छीन जानवर छल। ओकरा सब मे जे मेधा छल से ओ गीदड़ पूरे जंगल मे नहि देखने रहए। ओ स्थान आ दृश्य देखि गीदड़ के चक–विदोर

लागि गेल। ओ बड़ प्रभावित छल। आ सोचि रहल छल, जे ई अद्‌भुत बात एहिठाम कोन कारण सँ छैक। मूस आ बिलाई दूनू संगे खेलि रहल छल, एहि सँ अजगुत की भ सकैत अछि। एक पल तँ गीदड़ के बुझायल जे सपना देखि रहल अछि। ओ अपना हाथ मे बिट्टू काटि क देखलक। तखन ओकरा विश्वास भेल जे इ सपना नहि सच थीक। ताबत देखलक जे आश्रमक कुटियाक बाहर श्वेत चबूतरा पर कम्बल केर आसन आ ताहि पर बैसल एकटा महात्मा ध्यानस्थ भए पूजा कए रहल छलाह। हुनका मुँख–मंडल पर अद्‌भुत आभा चमकि रहल छल। से देखि ओहि गीदड़ के बुझवा मे आबि गेलैक जे, एहि रहस्यक कारण इ महात्मा छथि। ओकरहु मनक महत्वाकांक्षा बढ़ि गेल। ओ एकान्त मे एकसरहि बैसि महात्माक पूजा समाप्तिक प्रतीक्षा करए लागल। महात्माक पूजा मे करीब तीन घंटा आर लागल आ से देखि गीछड़क व्यग्रता आर बढ़ि रहल छल। ताबत् महात्माक पूजा खतम भेल आ हुनकर ध्यान टूटल। ओ सब प्राणी पर नजरि दैत, मन्द–मन्द मुस्कानक बीच ओकरा सभक क्रीड़ाक आनन्द ल रहल छलाह। हठात् हुनकर ध्यान ओहि गीदड़ पर पड़ि गेल जे घंटो भरि सँ हुनकर ध्यान टूटबाक प्रतीक्षा एकान्त मे एकसरहि बैसि कए रहल छल। महात्मा तँ दयावान होइतहि छथि। ओ गीदड़ के चिन्तित देखि अपना लग मे बजौलन्हि आ ओकर दुःखक कारण पूछलन्हि। ओना तँ गीदड़ जातिये धूर्त होइत अछि, मुदा ओ गीदड़ महाधूर्त छल। ओ महात्मा के असली बात नहि कहि, अपन मन गढ़ंत खिस्सा सुनौलक – एहि जंगल मे एकटा विशाल शेर अछि। ओ परम बलशाली आ दुष्ट अछि। ओ

हमरा सब परिजन के मारि कए खा गेल। हम कहुनाक जान बचाकँ पड़ाइत–पड़ाइत एहिठाम आयल छी। जँ पड़इतहु नहि तँ हमरहु मारि दैत आ तें हम अपना परिजनक विछोह सँ दुखी छी। महात्मा सेहो ओकरा दुःख सँ द्रवित भ गेलाह आ कमंडल सँ जल लए किछु मंत्र पढ़ि ओहि गीदड़क उपर छिटि देलन्हि। जल छिटैत ओ गीदड़ बिशाल शेर मे परिणत भ गेल। तखन शेर रूपी गीदड़ अपना समूचा देह के निहारि अति प्रसन्न भेल आ सब सँ पहिनहि महात्माक उपर आक्रमण कए देलक। कमंडलक जल हेराय देलक। यावत महात्मा सम्हरितथि आ पुनः मंत्रक प्रयोग करितथि, ताबत हुनकर जीवन लीला खतम कए देलक। हुनकर गरदनि मचोरि देहक सबटा खून पीबि गेल। ओकरा दहसत सँ सब जानबर आ चिरई–चुनमुनी भागि पड़ायल। आश्रमक जे रमणीयता रहए से एके क्षण मे विरान भ गेल। ओकर बाद ओ शेर अपना प्रतिद्वन्दी सँ चुनि–चुनि कए बदला लेमए लागल। ओकर दहशत सँ समूचा जंगल मे उथल–पुथल होमए लागल। जंगल मे जतेक जानवर छल, ककरहु मे ओकर सामना करबाक सामर्थ नहि छल। सब जानवर एकत्रित भ विचार विमर्श कए ओहि शेर के अपन राजा मानि लेलक आ ओकरा ताबेदारी मे लागि गेल। नित्य ओकरा भोजनक लेल एकटा जानवर पठाएब तय भेल। तखन ओ शेर एक सँ एक हिंसक जानबर के चुनि अपन मंत्री बनौलक आ एकटा फौज तैयार केलक जाहि मे पचासो हिंसक जानवर छल। किछु दिन मे जंगली बातावरण सँ ओकर मन भरि गेल आ ओ नर भक्षण करबाक लेल जंगल सँ शहर मे आबि गेल। ओकरा संग ओकर पूरा फौज छल। जेम्हरे जाइत छल,

तबाही मचा दैत छल। शहरक लोक सेहो ओकरा आतंक सँ त्रस्त छल।

तावत शहर मे चुनावक घोषणा भेल। शेरक इच्छा सेहो चुनाव लड़बाक भेलैक। ओ अपना मंत्री आ फौज सँ विचार–विमर्श कएलक। ककर जान भाड़ी छलैक, सब ओकरा हँ मे हँ मिला देलक। शेर सेहो चुनाव मे ठाढ़ भ गेल। ओकरा चुनाव मैदान मे देखि सब बिरोधी अपन नांगरि सटकाय लेलक आ चुनाव मैदान सँ भागि गेल। मात्र एकटा महिला प्रत्यासी विपक्षक दिशि सँ चुनाव मे भाग लेलक। चुनावक दिन जे निरीह जनता छल ओ मतदान केन्द्र पर नहि जएबाक लेल सोचि रहल छल। ओकरा मन मे इ विश्वास छलैक जे चुनाव मे शेरक विजय होयत ते मतदान करबा सँ की फायदा। ताबत घोषणा भेल। सब नागरिक के मतदान मे भाग लेब आवश्यक अछि। ओ कोनो तरहक मन मे डर नहि करए। निष्पक्ष चुनाबक लेल सरकार कटिबद्ध अछि आ तें एकरा लेल सी0आर0पी0 के एक सए कम्पनी पठाओल गेल अछि। जनता निर्भीक भ अपन मताधिकारक प्रयोग करथि। मतदान करब हुनक पुनीत कर्त्तव्य थिकैन्ह। कोनो तरहक हल्ला फसाद केनिहार के गोली मारि देल जायत। इ घोषणा चुनाव आयोगक छल। जनता बड़ उत्साह सँ वोट देबाक लेल मतदान केन्द्र पर कतार मे ठाढ़ भेल। धीरे–धीरे मतदानक सब प्रक्रिया होमए लागल। अंत मे जखन आंगुर मे रोसनाई लगौलाक बाद बटन दाबऽ क बेर भेल तँ ओहिठाम शेरक पाँच टा फौज जे पहिनहि सँ ठाढ़ छल, बटन दाबि देलक आ ओ वोट शेरक पक्ष में चल गेल। जखन कि ओ वोटर शेर के वोट देमए नहि चहैत

छल। बेचारा निरास भऽ अपना घर चल गेल। एहि तरहे समूचा शहर मे शेरेक पक्षक लोक निर्वाचित भेल। विपक्ष मे केवल वैह महिला निर्वाचित भेल कारण ओहो अपना क्षेत्रक शेरनीये छल। मुदा ओहि शेरनी के विवेक छलैक, ओ जन कल्याण करैत छल, लोकक दुःख–सुख मे ठाढ़ि रहैत छल मुदा शेर मे एहि सभक अभाव छलैक। शेर आ शेरनीक व्यवहार एक दम बीपरीत छल। शेर नरभक्षी छल आ शेरनी निरामिष। शेरनीक उद्देश्य जन कल्याण छलैक आ शेरक आतंक मचाएब। कौखन शेर आ शेरनी मे सेहो भिरंत भ जाइत छल। शेरनी हारि जाइत छल। किएक तँ शेरक संग बहुत फौज रहैत छल आ शेरनी एकसरहि मुदा शेरनी सेहो पुरान खेलाड़ छल। ओ घात लगाकए अपना पंजा सँ शेर के मुँह कान नोचि लैत छल। शेरक पार्टी के लोक विरोध केनिहार के मारि क खा जाइत छल। कोनो फरियादी केर फरियाद ओकरा तक नहि पहुँचैत छल। ओहि सँ पहिनहि ओकर अधिकारी जे हिंसक पशु, फरियादी के हिसाब–किताब लगा दैत छल। जनता सँ टैक्स पर टैक्स वसूल करैत छल। विकासक नाम पर कोनहु काज नहि करैत छल। जखन कि भाषण मे गला फारि–फारि क जन कल्याण आ खासक गरीबेक गप्प करैत छल। ओकरा कथनी आ करनी में बहुत फर्क छलैक। बजैत किछु छल आ करैत किछु। व्यवहार एकदम भाषणक विपरीत छल। शहरक लोक सब ओकरा आतंक सँ त्रस्त छल आ प्रतीक्षा कए रहल छल कोनो पैघ शिकारी क जे ओकरा मारि सकए वा कोनो सिद्ध महात्माक जे ओकरा पुनः गीदड़ बनाबए।

लेखक परिचय
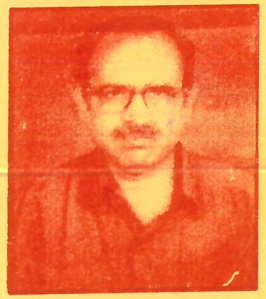
जन्म	–	2 जनवरी 1950
जन्म स्थान	–	भैरव बलिया (मातृक)
ग्राम एवं पत्रालय	–	उफरदाहा
थाना	–	बहेड़ा
जिला	–	दरभंगा
पिता	–	श्री वैद्यनाथ मिश्र सरल चित्त, साधु स्वभाव, उदारमना एवं धर्मपरायण।
माय	–	स्व0 श्रीमती गोसाउनि देवी करूणामयि, सहृदया एवं धर्मपरायणा।
शिक्षा	–	स्नातक कला, संगीत प्रभाकर
वृत्ति	–	लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड
रूचि	–	शास्त्रीय एवं लोकगीत – गीतकार, कथा एवं कविता लीखब (मैथिली में) सामाजिक कुरिति आ राजनिती पर व्यंग्य रचना प्रमुख अछि।
प्रकाशित ग्रंथ	–	विधात्री (25.04.2004 (गीत एवं कविता संग्रह)